कर्मभूमि
जानवरों को बचाओ
प्रदूषण रोको
पेड़ लगाओ
पेड़ न काटो
रीसाइकिल करो
पानी बचाओ
हिन्दी USA
पर्यावरण विशेषांक
संसाधन बचाओ
कूड़ा न फैलाओ

नई पीढ़ी को भाषा और संस्कृति का ज्ञान प्रदान करने के लिए

हिन्दी यू.एस.ए. को हार्दिक शुभकामनाएँ

SAI CPA Services

SA| CPA SERV|CES

we specialize in

- Account|ng & Bookkeep|ng
- Sales Tax & Payroll tax
- Bus|ness startup services
- Income Tax Preparation for individual & Bus|ness
- IRS problems & Representations
- Payroll Services
- Develop|ng & implementing Business models
- Non-prof|t Taxes & 501C(3) approvals
- F|nanc|al Statement preparat|on & Attestat|on

Ajay Kumar, CPA
5 Villa Farms Cir, Monroe Township, NJ 08831
Phone: 908-380-6876
Fax: 908-368-8638
akumar@saicpaservices.com
www.saicpaservices.com

स्थापना: नवंबर २००१ संस्थापक: देवेन्द्र सिंह

हिन्दी यू.एस.ए. के किसी भी सदस्य ने कोई पद नहीं लिया है, किन्तु विभिन्न कार्यभार वहन करने के अनुसार उनका परिचय इस प्रकार है:

निदेशक मंडल के सदस्य

देवेन्द्र सिंह (मुख्य संयोजक) – 856-625-4335
रचिता सिंह (शिक्षण/प्रशिक्षण संयोजिका) – 609-248-5966
राज मित्तल (धनराशि संयोजक) – 732-423-4619
माणक काबरा (प्रबंध संयोजक) – 718-414-5429
सुशील अग्रवाल (`कर्मभूमि' संयोजक) – 908-361-0220

शिक्षण समिति

क्षमा सोनी – कनिष्ठा-१ स्तर
रंजनी रामनाथन, हेमांगी शिंदे - कनिष्ठा-२ स्तर
मोनिका गुप्ता – प्रथमा-१ स्तर
सरिता नेमानी, सन्जोत ताटके – प्रथमा-२ स्तर
इंदु श्रीवास्तव, अदिति महेश्वरी – मध्यमा-१ स्तर
ममता त्रिवेदी, गरिमा अग्रवाल – मध्यमा-२ स्तर
विकास ओहरी, ऋतु जग्गी – मध्यमा-३ स्तर
सुशील अग्रवाल, हंसा सिंह – उच्चस्तर-१
कविता प्रसाद – उच्चस्तर-२

अन्य समितियाँ

अमित खरे — वेब साइट, वीडियो
योगिता मोदी — बुक स्टाल प्रबंधन

पाठशाला संचालक/संचालिकाएँ

एडिसन: माणक काबरा (718-414-5429), सुनील दुबे (848-248-6500)
साऊथ ब्रंस्विक: उमेश महाजन (732-274-2733)
मॉन्टगोमरी: रीना सिंह (908-499-1555)
पिस्कैटवे: सौरभ उदेशी (848-205-1535)
ईस्ट ब्रंस्विक: स्वागता माने (646-415-4072)
वुडब्रिज: शिव आर्य (908-812-1253)
जर्सी सिटी: मनोज सिंह (201-233-5835)
प्लेंसबोरो: गुलशन मिर्ग (609-451-0126)
लॉरेंसविल: श्वेता गंगराडे (609-306-1610)
चैरी हिल: देवेंद्र सिंह (609-248-5966)
चैस्टरफील्ड: मधु राजपाल (732-331-5835)
होमडेल: रंजना गुप्ता (908-380-8697)
मोनरो: सुनीता गुलाटी (732-656-1962)
नॉर्थ ब्रंस्विक: योगिता मोदी (609-785-1604)
बस्किंग रिज: संजय गुप्ता (732-331-9342)
विल्टन: अमित अग्रवाल (630-401-0690), चेतना मल्लारपु (475-999-8705)
स्टैमफर्ड: मनीष महेश्वरी (203-522-8888)
एवॉन: बसवराज गरग (732-201-3779)
ट्रम्बुल: रुचि शर्मा (203-570-1261)
एलिकाट सिटी (MD): मुरली तुल्शियान (201-892-7898)
नीधम (MA): विक्रम कौल (203-919-1394)
अटलांटा (GA): रंजन पठानिया (203-993-9631),
संजीव अग्रवाल (203-442-3120)
सैन डिएगो (CA): मुदिता तिवारी (858-229-5820)
सैंट लुइस (MO): मयंक जैन (636-575-9348)

हमको सारी भाषाओं में हिन्दी प्यारी लगती है, नारी के मस्तक पर जैसे कुमकुम बिंदी सजती है।

कर्मभूमि

संरक्षक

देवेंद्र सिंह

रूपरेखा एवं रचना

सुशील अग्रवाल

सम्पादकीय मंडल

रचिता सिंह

माणक काबरा

राज मित्तल

अपनी प्रतिक्रियाएँ एवं सुझाव हमें अवश्य भेजें

हमें विपत्र निम्न पते पर लिखें

karmbhoomi@hindiusa.org

या डाक द्वारा निम्न पते पर भेजें:

HindiUSA
70 Homestead Dr|ve
Pemberton, NJ08068

मुखपृष्ठ — आख्यान सचान (एडिसन पाठशाला)

०८ - विश्व हिन्दी दिवस

१० - हिंदी यू.एस.ए. के वार्षिक कार्यक्रम

१२ - शैक्षिक भारत यात्रा २०१९ - २०२०

२४ - पर्यावरण, आधुनिक समाज और आदिवासी जन-जातियाँ

२५ - हिंदी को पहचान मैं दूँ

२६ - पर्यावरण

२७ - कहीं देर न को जाए

२८ - वनों की सिसकियाँ\

२९ - बंधन का महत्व

३० - एक बूँद ..... वही बूँद

३१ - प्रकृति की चेतावनी

३२ - पुनरुपयोग

३५ - वायु प्रदूषण — एक गंभीर समस्या

३६ - वायु प्रदूषण — एडिसन हिन्दी पाठशाला - उच्चस्तर-१ के लेख

३९ - पर्यावरण में वायु प्रदूषण

४० - पर्यावरण के संरक्षण मेंहमारेत्योहारोंकायोगदान

३३ - वायु संरक्षण द्वारा पर्यावरण की रक्षा

४४ - चेस्टरफ़ील्ड पाठशाला – मध्यमा-२

४६ - चेरी हिल पाठशाला – मध्यमा-२

४८ - पर्यावरण की रक्षा में वृक्षों का योगदान — स्टैमफोर्ड मध्यमा-१

४९ - वैश्विक **ऊष्मीकरण**

५० - चैरी हिल हिन्दी पाठशाला — मध्यमा-३

५२ - हमारी महान प्रकृति

५३ - पर्यावरण की रक्षा में वृक्षों का योगदान — सैंट लुइस मध्यमा-१

५४ - एडिसन पाठशाला, जर्सी सिटी पाठशाला - मध्यमा-१

५६ - वायु प्रदूषण — साउथ ब्रंस्विक पाठशाला — उच्च स्तर-१

६० - ट्रंबल हिंदी पाठशाला — उच्च स्तर १

६१ - जब तुम मानो यह भारत अपना है....

६२ - भारतीय त्योहारों में पर्यावरण संरक्षण की सोच

७३ - पर्यावरण और द्रक्षिण भारत के त्योहार, जल संरक्षण

७४ - पर्यावरण के संरक्षण में हमारे त्योहारों का योगदान — साउथ ब्रंस्विक पाठशाला — उच्च स्तर-२

७७ - पर्यावरण और हमारे पर्व

७८ - वृक्ष लगाओ – पर्यावरण बचाओ- स्वस्थ जीवन पाओ

८१ - चैरी हिल पाठशाला - कनिष्ठ २

८२ - पर्यावरण की रक्षा में वृक्षों का योगदान

८८ - चैरी हिल हिन्दी पाठशाला — मध्यमा-१

९० - जल संरक्षण - जरूरत भी और कर्तव्य भी

९२ - कोंपोस्ट का योगदान

९३ - जल संरक्षण पर लेख

९८ - दिल्ली की प्रदूषित धुन्ध

९९-११५ पाठशालाओं के लेख

हिन्दी यू.एस.ए. की पाठशालाओं के संचालक/संचालिकाएँ

हिन्दी यू.एस.ए. उत्तरी अमेरिका की सबसे बड़ी स्वयंसेवी संस्था है। निरंतर १९ वर्षों से हिन्दी के प्रचार और प्रसार में कार्यरत है। हिन्दी यू.एस.ए. संस्था ने मोती समान स्वयंसेवियों को एक धागे में पिरोकर अति सुंदर माला का रूप दिया है। इस चित्र में आप हिन्दी यू.एस.ए. संस्था के स्वयंसेवी कार्यकर्ताओं, जो संस्था के मजबूत स्तम्भ हैं, को देख सकते हैं। किसी भी संस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए नियमावलियों व अनुशासन के धागे में पिरोना अति आवश्यक है। हिन्दी यू.एस.ए. की २४ पाठशालाएँ चलती हैं। पाठशाला संचालकों पर ही अपनी-अपनी पाठशाला को सुचारु रूप से नियमानुसार चलाने का कार्यभार रहता है। संस्था के सभी नियम व निर्णय सभी कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में मासिक सभा में लिए जाते हैं। पाठशालाओं में बच्चों का पंजीकरण अप्रैल माह से ही आरम्भ हो जाता है। हिन्दी की कक्षाएँ ९ विभिन्न स्तरों में चलती हैं। नया सत्र सितम्बर माह के दूसरे सप्ताह से आरम्भ होकर जून माह के दूसरे सप्ताह तक चलता है।

न्यूजर्सी से बाहर अमेरिका के विभिन्न राज्यों में भी हिन्दी यू.एस.ए. के विद्यालय हैं। यदि आप उत्तरी अमेरिका के किसी राज्य में हिन्दी पाठशाला खोलना चाहते हैं तो आप हमें सम्पर्क कीजिए। हिन्दी यू.एस.ए. के कार्यकर्ता बहुत ही तीव्र गति से अपने उद्देश्य की ओर अग्रसर होते हुए अपना सहयोग दे रहे हैं। यदि आप भी अपनी भाषा, अपनी संस्कृति को संजोय रखने में सहभागी बनना चाहते हैं तो हिन्दी यू.एस.ए. परिवार का सदस्य बनें।

संपादकीय

वर्ष २०२० हिंदी यू.एस.ए. की स्थापना का उन्नीसवाँ वर्ष है| विगत १९ वर्षों में संस्था ने जो अभूतपूर्व प्रगति की है वह किसी से छिपी नहीं है। |इस प्रगति का पूर्ण श्रेय हमारे समर्पित अध्यापकों, स्वयंसेवकों, एवं अभिभावकों को ही जाता है। उनके कठोर श्रम के बिना संस्था का इस स्तर पर और इतनी उपलब्धियाँ प्राप्त करना संभव नहीं था। |

वर्ष २०२० पूरे विश्व में एक काले अध्याय के रूप में जाना जायेगा। `कोरोना' संक्रमण ने लाखों लोगों को अपनी चपेट में अब तक ले लिया है और यह कहर अभी भी जारी है|। जन जीवन, अर्थव्यवस्था तथा आवागमन, इस महामारी के कारण पूर्ण रूप से अस्त व्यस्त हो चुके हैं और इसका कोई अनुमान भी नहीं है कि यह त्रासदी हमसे कब विदा लेगी||

जहाँ सभी व्यापार एवं शैक्षिक संस्थाएं कोरोना संक्रमण के कारण दुष्प्रभावित हुए हैं, हिंदी यू.एस.ए. भी इसका अपवाद नहीं है। महामारी के तीव्र संक्रमण के कारण हमारी सभी पाठशालाएं प्रशासन के आदेशों की अनुपालना में हमें बंद करनी पड़ी तथा सभी कक्षाएँ इन्टरनेट के माध्यम से ही जारी रखी गईं|| संस्था का मुख्य वार्षिक पर्व `हिन्दी महोत्सव' भी हमें निरस्त करना पड़ा|| यह `कर्मभूमि' पत्रिका प्रतिवर्ष हिन्दी महोत्सव के दौरान ही प्रकाशित की जाती रही है, परन्तु इस वर्ष इसे समय पर प्रकाशित नहीं किया जा सका और इसका प्रकाशन मुद्रित रूप में न करके इसे ई-पत्रिका के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है|| इस कारण इसे समय पर तथा सभी को पूर्ण रूप से वितरण करने में सहूलियत रहेगी तथा हम पर्यावरण को भी संरक्षित करने में सहभागी हो सकेंगे||

कोरोना संक्राणु का यह विध्वंस यह पीढ़ी अपनी आँखों से देख ही रही है और इससे हमें बहुत ही शिक्षा लेने की आवश्यकता है|। हम यदि इस महामारी के बाद भी प्रकृति का आदर और पर्यावरण की रक्षा करने हेतु प्रतिबद्ध नहीं होंगे तो प्रकृति भी हमें इसकी सजा निरंतर देती रहेगी और भविष्य में इससे भी बड़ी महामारियाँ विश्व को काल के गर्त में ढकेल देंगी। | कर्मभूमि का यह अंक `पर्यावरण विशेषांक' के रूप में प्रस्तुत है|। यह एक महज संयोग ही है कि `पर्यावरण विशेषांक' इस वर्ष का यह विषय हमने पिछले वर्ष ही तय कर लिया था और यह ज्ञात नहीं था की विश्व पर्यावरण सम्बन्धित इस महामारी के भीषण दौर से इस वर्ष रूबरू होगा|। इस कारण को देखते हुए यह अंक अपने आप में एक विशिष्ट तथा महत्वपूर्ण अंक है|। प्रदूषण, इनसे होने वाली हानियाँ एवं पर्यावरण की रक्षा हम कैसे कर सकते हैं इन सभी पर हमारे नन्हे मुन्ने बच्चों, अध्यापकों तथा अभिभावकों ने बहुत सुन्दर लेख इस अंक में लिखे हैं जो शिक्षाप्रद होने के साथ ही हमारी वर्तमान एवं आने वाली पीढ़ियों को पर्यावरण की रक्षा करने हेतु चेतावनी प्रदान करने के साथ ही भविष्य में होने वाली हानियों के बारे में सचेत किया गया है||

पर्यावरण की रक्षा करने में भारतीय त्योहारों का सदियों से कैसा योगदान रहा है, हवन, मंत्र आदि के पीछे पर्यावरण सम्बन्धित क्या वैज्ञानिक कारण हैं, इसके विवरण विद्यार्थियों ने अपने लेखों में दिए हैं जिन्हें आप अवश्य पढ़ें|। वायु प्रदूषण/ ध्वनि प्रदूषण अधिकांश बीमारियों की जड़ हैं, इन्हें कम करने के बारे में इस अंक में बहुत महत्वपूर्ण आलेख हमारे विद्यार्थियों और अभिभावकों ने लिखे हैं|। पर्यावरण पर ही कुछ सुन्दर कविताएँ भी हमारे अध्यापकों व

अभिभावकों ने लिखी है जिन्हें यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है।।

हिंदी यू.एस.ए. हर दूसरे वर्ष, चुने हुए कुछ छात्रों का १५ दिन का शैक्षणिक भारत भ्रमण आयोजित करता है। दिसंबर २०१९ में १४ विद्यार्थियों का एक दल २ अध्यापकों के साथ १५ दिन की भारत यात्रा पर गया। कई रमणीय स्थान इन्होंने यहाँ देखे, जैसे दिल्ली, अमृतसर, हरिद्वार, आगरा, जयपुर, उदयपुर तथा अन्य कई स्थानों का इन्होंने भ्रमण किया।। भारत की कुछ पाठशालाओं का भी अवलोकन कर वहाँ के छात्रों से खुलकर वार्तालाप कर अपने विचारों का आदान प्रदान किया।। उनकी यात्रा एवं संस्मरणों को इस अंक में प्रकाशित किया जा रहा है।। अगली भारत यात्रा दिसंबर २०२१ में आयोजित होगी जिसके लिए आवेदन मार्च २०२१ में लिए जायेंगे।।

कोरोना की इस विश्वव्यापी त्रासदी में जहाँ हजारों संस्थान, संस्थाएं जन कल्याण का कार्य कर रहीं हैं, हिंदी यू.एस.ए. के स्वयंसेवकों एवं छात्रों ने भी इसे अपनी व्यक्तिगत जिम्मेदारी समझा तथा अपनी क्षमतानुसार मुख-मास्क तथा अन्य आवरण सिलकर हमारे स्वास्थ्य कर्मियों हेतु स्थानीय चिकित्सालयों में दान किए। इसके अलावा भोजन, किराना तथा आर्थिक सहायता भी हमारे स्वयंसेवक जरूरतमंदों को निरंतर कर रहे हैं, ऐसे समय में हम सभी का यह दायित्व है कि हमें यह सेवा निरंतर करते रहना चाहिए।। आप सभी से भी यही विनती है कि इसमें अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करें।।

विश्व इस समय एक बहुत ही संकट के दौर से गुजर रहा है, ऐसे समय में हम सभी का यह दायित्व है कि हम सरकार एवं स्थानीय प्रशासन द्वारा बनाये गए सभी स्वास्थ्य सम्बन्धी नियमों का पूर्ण रूप से पालन करें तथा हमारे बच्चों को इनके लिए शिक्षित करें| आशा है कि कर्मभूमि का यह अंक आपको अवश्य ही पसंद आयेगा।। पर्यावरण संबन्धित जो जानकारियाँ पाठकों को इसमें प्रदान की जा रही है वह आप सभी के लिए उपयोगी सिद्ध होंगी।। कृपया अपनी प्रतिक्रिया अवश्य दें तथा इस अंक को ज्यादा से ज्यादा पाठकों तक प्रेषित करने का कष्ट करें।।

धन्यवाद

संपादक

आरति शिरालि, अभिभावक

विश्व हिंदी दिवस - २०२०

सत्यमेव जयते

जैसा कि सर्वविदित है हिंदी यू.एस.ए. हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में गत् कई वर्षों से पूरी तत्परता से कार्यरत है। इसके इन्हीं ठोस प्रयासों की पहचान एवं लोकप्रियता को और बल मिला जब इस वर्ष न्यूयॉर्क स्थित कौंसलावास ने विश्व हिंदी दिवस २०२० का आयोजन संयुक्त रूप से करने की अपनी इच्छा जाहिर की।

इसी सन्दर्भ में गत् १८ जनवरी को न्यूजर्सी स्थित प्रसिद्ध अक्षरधाम मंदिर में कौंसलावास एवं हिंदी यू.एस.ए. के परस्पर सहयोग और समन्वय से इस कार्यक्रम को अत्यंत सफलतापूर्वक मूर्त रूप दिया गया, जिसकी कुछ प्रमुख झलकियाँ इस प्रकार हैं:

- न्यूयॉर्क स्थित कौंसलावास में संचालित हिंदी एवं वेद-विद्या कक्षाओं के विद्यार्थियों और आचार्य जी द्वारा क्रमशः कविता पाठ, गायत्री मंत्र एवं प्रवचन
- कौंसलावास में चांसरी प्रमुख श्री जयदीप चोला जी द्वारा प्रारंभिक उद्बोधन एवं माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा विश्व हिन्दी दिवस पर भेजे गए सन्देश का वाचन
- हिंदी यू.एस.ए. के वार्षिक उत्सव में विभिन्न सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं में विजेता रहे नन्हे कलाकारों द्वारा अपनी प्रतिभा का संस्कृति एवं भाषा पर आधारित विभिन्न रोचक कार्यक्रमों का मंचन, जिसमें सम्मिलित थे -
- एडिसन पाठशाला - अभिनय गीत (हिंदी ने जोड़े रिश्ते अनमोल)
- प्लेंसबोरो पाठशाला - नृत्य (गणेश वंदना)
- साउथ ब्रुंस्विक पाठशाला - नाटक (भारत का गौरव, भारत की वीरांगनाएं)
- मोनरो पाठशाला - नृत्य (गणेश उत्सव)
- वुडब्रिज पाठशाला - नुक्कड़ नाटक (हिंदी ही है पहचान हमारी)
- पिस्काटवे पाठशाला - अभिनय गीत (ऐ मेरे प्यारे वतन)
- कविता पाठ - देश भक्ति से ओतप्रोत, वीर रस की विभिन्न कविताओं का वाचन, जिनमें प्रतिभागी थे - चेरी हिल, मोनरो, प्लेंसबोरो, साउथ ब्रुंस्विक, विल्टन हिंदी पाठशालाओं के अत्यन्त प्रतिभाशाली छात्र -छात्राएं,
- जर्सी सिटी पाठशाला - अभिनय गीत (हमारे सैनिक) - स्वयंसेवी शिक्षक और शिक्षिकाओं द्वारा भावनात्मक प्रस्तुति

हिंदी यू.एस.ए. के प्रस्तुतीकरण ने न केवल हॉल में

उपस्थित सभी लोगों के मन पर अमिट छाप छोड़ी, बल्कि देश विदेश में कार्यक्रम के सीधे प्रसारण के माध्यम से जुड़े अन्य लोगों ने भी इसे बहुत सराहा। एक साथ इतने लोगों तक इस कार्यक्रम को पहुंचाने के लिए हिंदी यू.एस.ए. की टीम बधाई की पात्र है। चांसरी प्रमुख श्री जयदीप चोला जी ने कार्यक्रम का समापन विचार रखा जिसमें उन्होंने सभी प्रस्तुतियों एवं हिंदी यू.एस.ए. की भूरी-भूरी प्रशंसा की तथा आगे भी ऐसे आयोजनों को करने में अपनी गहरी रुचि दिखाई। कौंसलावास द्वारा सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित किये गए तथा कार्यक्रम के अंत में श्री राज मित्तल जी द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया गया। इस आयोजन की उल्लेखनीय बात यह रही कि हिंदी एवं भारतीय संस्कृति के प्रति हमारी आस्था, सजगता एवं सहयोग का एक बार फिर उत्तम उदाहरण देखने को मिला। बाल कलाकारों से लेकर उनके माता-पिता, हिंदी यू.एस.ए. के सभी स्वयंसेवक उस दिन के प्रतिकूल मौसम (बर्फवारी के कारण मौसम बहुत ठंडा था) के बावजूद पूरे उत्साह से सुबह से ही वहाँ उपस्थित थे जो कि बहुत ही प्रशंसनीय है। आशा है भविष्य में भी इस ही प्रकार हम सब मिलकर हिंदी यू.एस.ए. को अपना सहयोग देते रहेंगे।

सत्र २०१९-२०

हिन्दी यू.एस.ए. के वर्ष भर के कार्य तथा कार्यक्रम

हिन्दी यू.एस.ए. एक ऐसी स्वयंसेवी संस्था है जो पूरे वर्ष सक्रिय रहती है। इसके हिन्दी शिक्षण का सत्र सितंबर माह से जून माह तक चलता है। इन दस महीनों में संस्था की सभी पाठशालाओं में हिन्दी कक्षाएँ तो प्रति शुक्रवार अनवरत चलती ही हैं, साथ ही नीचे दिए गए कार्य और कार्यक्रम भी वर्ष भर चलते रहते हैं। हिन्दी यू.एस.ए. जिस नियमितता तथा गंभीरता से कार्य करती है उसे देखते हुए भारत के एक उच्च पद पर आसीन हिन्दी विभाग के अधिकारी ने कहा था कि "यह संस्था नहीं संस्थान है और इस पर शोध होना चाहिए"। तो आइए जानते हैं हिन्दी यू.एस.ए. के वर्ष भर के कार्य।

१. पंजीकरण – पिछले ८ वर्षों से संस्था ऑन लाइन रजिस्ट्रेशन (**www.hindusa.org**) कर रही है जिससे अभिभावकों और संचालकों का कार्य सुलभ हो गया है।

२. पुस्तक मुद्रण तथा वितरण – हिन्दी यू.एस.ए. ने अपनी स्वयं की पुस्तकें तथा पाठ्यक्रम ९ स्तरों में तैयार किया है जो विदेशों में जन्मे तथा पले-बढ़े विद्यार्थियों को ध्यान में रख कर बनाया गया है। प्रत्येक स्तर में ४-४ पुस्तकें तथा फ्लैश काड्र्स का एक सेट सम्मिलित है। छोटे स्तरों में हिन्दी के मोबाइल ऐप का भी उपयोग किया जाता है। इन पुस्तकों के लिए ३ भंडार गृह हैं। ४००० विद्यार्थियों में इन पुस्तकों का सही वितरण पाठशाला संचालकों के लिए एक बड़ी चुनौती होता है।

३. प्रचार एवं प्रसार – ग्रीष्मकालीन अवकाश तथा पंजीकरण के समय संस्था दूरदर्शन, रेडियो तथा पुस्तक-स्टॉल के माध्यम से हिन्दी तथा हिन्दी कक्षाओं का प्रचार करती है।

४. त्योहार का परिचय – प्रवासी विद्यार्थियों को भारतीय त्योहार तथा संस्कृति का परिचय देने के लिए संस्था प्रतिवर्ष न्यू जर्सी में आयोजित दशहरे के आयोजन में सक्रिय रूप से भाग लेती है तथा दीपावली के समय प्रत्येक पाठशाला में दीपावली उत्सव का आयोजन धूम-धाम से किया जाता है। होली, मकर संक्रांति, लोहड़ी, बैसाखी आदि त्योहार जो सत्र के दौरान आते हैं उन्हें कक्षाओं में मनाया जाता है।

५. अर्धवार्षिक परीक्षा – दिसंबर माह में छुट्टियों के पहले लिखित तथा मौखिक अर्धवार्षिक परीक्षा का आयोजन किया जाता है जिसके लिए प्रतिवर्ष नए परीक्षा-पत्र बनाए जाते हैं।

६. शिक्षक अभिनंदन समारोह – हिन्दी यू.एस.ए. प्रतिवर्ष दिसंबर माह के प्रथम सप्ताह में अपने सभी ४५० स्वयंसेवकों का अभिनंदन तथा धन्यवाद करने के लिए प्रीतिभोज तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करता है। इस समारोह में सभी स्वयंसेवकों के जीवनसाथी भी आमंत्रित किए जाते हैं तथा कुछ चुने स्वयंसेवकों को प्रतिवर्ष उनकी विशेष सेवाओं के लिए पुरस्कृत किया जाता है तथा बाकी सभी स्वयंसेवकों को भी हिन्दी यू.एस.ए. उपहार प्रदान करता है।

७. विद्यार्थियों की भारत यात्रा – छात्रों को प्रोत्साहित करने और उनमें देशभक्ति की भावना जागृत करने तथा भारत से सम्बंध बने रहने के लिए हिंदी यू.एस.ए. उन्हें भारत यात्रा पर भी भेजता है, जिससे वे अपने संस्कारों की जन्मभूमि से जुड़ें रहें और भाषा एवं संस्कृति की ऊर्जा की उन्हें कभी कमी महसूस न हो। इसका विस्तृत विवरण पेज १४ पर देखें।

८. पाठशाला स्तर पर कविता पाठ का आयोजन – प्रत्येक हिन्दी पाठशाला जनवरी माह में अपनी-अपनी पाठशाला में कविता-पाठ का आयोजन करती है जिसमें उस पाठशाला के सभी विद्यार्थियों को भाग लेने का अवसर मिलता है।

९. कर्मभूमि की तैयारी – जनवरी और फरवरी माह में सभी स्तरों के शिक्षक कर्मभूमि में भेजने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रोजेक्ट विद्यार्थियों को देते हैं, जिनके माध्यम से विद्यार्थी हिन्दी के साथ-साथ भारतीय संस्कृति तथा इतिहास का ज्ञान भी प्राप्त करते हैं।

१०. अन्तर्शालेय कविता पाठ – इस प्रतियोगिता का आयोजन प्रति वर्ष फरवरी माह के अंत में किया जाता है। इस कविता पाठ में हिन्दी यू.एस.ए. की २० पाठशालाओं के विजेता विद्यार्थी स्तरानुसार प्रतियोगिता में भाग लेते हैं। यह प्रतियोगिता २ दिन चलती है तथा इसमें लगभग ४५० विद्यार्थी ९ स्तरों में भाग लेते हैं। प्रत्येक स्तर से १० सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थियों को चुन कर महोत्सव में होने वाले अंतिम चरण की प्रतियोगिता के लिए भेजा जाता है।

११. महोत्सव तथा परीक्षा की तैयारी – मार्च और अप्रैल माह में सभी पाठशालाओं के विभिन्न स्तरों में महोत्सव की प्रतियोगिताओं की तैयारी तथा परीक्षा के लिए पाठ्यक्रम का दोहराव प्रारम्भ हो जाता है।

१२. मौखिक परीक्षा – मार्च के अंतिम सप्ताह से लेकर अप्रैल के अंतिम सप्ताह तक सभी पाठशालाओं में मौखिक परीक्षा का आयोजन होता है, जिसके माध्यम से विद्यार्थियों की हिन्दी समझने, बोलने तथा पढ़ने की क्षमता को जाना जाता है। यह व्यक्तिगत परीक्षा होती है।

१३. हिन्दी महोत्सव – यह एक ऐसा सांस्कृतिक कार्यक्रम और मेला है जिसमें हिन्दी और हिंदुस्तान को प्यार करने वाले मिलते हैं तथा विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थी अपने हिन्दी ज्ञान तथा अन्य कलाओं जैसे नृत्य, अभिनय, वेषभूषा, संगीत आदि का प्रदर्शन करते हुए अपने आपको भारत से जोड़ते हैं। महोत्सव में विभिन्न सामूहिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है, जैसे लोक नृत्य प्रतियोगिता, विभिन्न त्योहार पर नृत्य, अभिनय गीत प्रतियोगिता, देशभक्ति गीत प्रतियोगिता, भजन प्रतियोगिता, नाटक प्रतियोगिता, हिन्दी ज्ञान तथा व्याकरण प्रतियोगिता तथा फ़ाइनल कविता पाठ प्रतियोगिता। इसी दिन हिन्दी यू.एस.ए. से स्नातक होने वाले विद्यार्थियों का दीक्षांत समारोह भी होता है। इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने के लिए भारत से विशेष अतिथि भी आते रहते हैं।

१४. वार्षिक परीक्षा – जून के प्रथम सप्ताह में लिखित वार्षिक परीक्षा का आयोजन सभी पाठशालाओं में किया जाता है तथा जून के मध्य में सभी विद्यार्थियों के प्रगति-पत्र तथा प्रमाण-पत्र देकर सत्र का अंत किया जाता है।

१५. वार्षिक पिकनिक - जून के अंत में पिकनिक का आयोजन किया जाता है जिसमें सभी शिक्षक शिक्षिकाएँ, पाठशाला संचालक और परिवार सम्मिलित होते हैं।

अब तो आप जान ही गए होंगे कि यदि किसी ने हिन्दी यू.एस.ए. को संस्थान कहा तो गलत नहीं कहा। हिन्दी यू.एस.ए. अपने सभी कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त करता है तथा उन्हें कोटिश: धन्यवाद देता है। उनके अथक प्रयास से जो हिन्दी की पवित्र धारा न्यू जर्सी और अन्य राज्यों में बह रही है वह प्रशंसनीय है।

क्या आप भी अपने बच्चों को भारतीय बनाना चाहते हैं?

क्या आप भी अपने बच्चों को हिन्दी सिखाना चाहते हैं?

क्या आप भी हिन्दी की सेवा कर आत्म संतोष चाहते हैं?

यदि हाँ तो हमारी वेबसाइट **www.h|nd|usa.org** पर जाएँ या हमें 1-877-**H|ND|USA** पर फोन करें।

नोट: कोरोना वायरस महामारी के कारण इस वर्ष हिंदी महोत्सव का आयोजन नहीं किया गया।

शैक्षिक भारत यात्रा २०१९-२०

हिन्दी यू.एस.ए. छात्र-छात्राओं के संस्मरण

दिल्ली : दिलवालों का शहर है

नमस्ते! मेरा नाम विरेन असरानी है और मैं ब्रिजवाटर-रारितान हाई स्कूल की ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं अपने स्कूल में एक हैल्थ और फिटनेस क्लब चलाता हूँ। मुझे फोटोग्राफी का बहुत शौक है और मुझे अपने खाली समय में फोटो खींचना और फ़िल्में बनाना अच्छा लगता है।

मैं हिंदी यू.एस.ए. का एक स्नातक हूँ और पिछले २ सालों से इस संस्था में स्वयंसेवा करता आ रहा हूँ। १८ दिसम्बर २०१९ को मैं और १३ अन्य हिंदी यू.एस.ए. के होनहार बच्चे, १४ दिन की एक बहुत ही शिक्षात्मक और मज़ेदार भारत यात्रा के लिए रवाना हुए थे – इसी उम्मीद के साथ कि हम भारत की संस्कृति के बारे में ज्यादा सीखेंगे और हमारे देश, हमारे वतन से और जुड़ेंगे।

दिल्ली पहुँच कर, सभी बहुत खुश और उत्साहित थे। विमान के १८ घंटे देरी होने के बाद, हम सब आखिर में भारत सही सलामत पहुँच गए। हवाई अड्डे से होटल तक की यात्रा, हमारी बस में पहली यात्रा थी। किसी ने नहीं सोचा था कि १४ दिन के अंत तक वह बस हमारा छोटा सा घर बन जाएगी।

दिल्ली के के. आर. मंगलम वर्ल्ड स्कूल ने हमारा भारत में स्वागत किया। हमें भारतीय शिक्षिकाओं से मिल कर बहुत अच्छा लगा। उनसे हमने भारत के विद्यालयों के बारे में सीखा और जाना कि भारत की पढ़ाई अमेरिका की पढ़ाई से कितनी अलग और मुश्किल है। अमेरिका में पढ़ाई के साथ-साथ, बच्चों को खेल, नृत्य, और कई सारे पाठ्यक्रम के अतिरिक्त चीजों में भाग लेने का अवसर मिलता है। वैसे तो भारत की शिक्षा प्रणाली में पढ़ाई पर ज़्यादा ज़ोर दिया जाता है, पर आज के जमाने में भारत के स्कूल और कालेज भी बच्चों को अपनी प्रतिभा दिखाने के अवसर दे रहे हैं।

दिल्ली पहुँच कर हम अगले दिन अमृतसर के लिए निकल गए और हमने लौटते समय दिल्ली विस्तार से देखा।हिंदी यू.एस.ए. और हमारे लिए बहुत उत्साह की घड़ी थी कि हमें दिल्ली में भारतीय संसद (Indian Parliament) में लोक सभा टी.वी. पर `हिंदी दिवस' मनाने के लिए बुलाया गाया था। हम सब को एक फ़िल्म सेट पर बिठाया गया था और हमने कैमरे पर हमारे हिंदी सीखने के अपने अनुभव और हमारी

भारत यात्रा के बारे में बात-चीत की। हम सब थोड़े से घबराए हुए थे, पर हमें अपने आपको टी.वी. पर देख कर और हिंदी यू.एस.ए. का नाम रोशन कर के बहुत आनंद का अनुभव हुआ।

दिल्ली में हम सब को BAPS के अक्षरधाम मंदिर में भी जाने का अवसर मिला था। वहाँ पर बहुत कठोर सुरक्षा थी और कोई भी फ़ोन और कैमरा उपयोग करने की अनुमति नहीं थी। अक्षरधाम मंदिर के बारे में मुझे सबसे अनोखी बात यह लगी कि मंदिर के अंदर जो भी मूर्तियाँ हैं - वे सब मज़दूरों ने अपने हाथों से बनाई थीं। मुझे दिल्ली का अक्षरधाम मंदिर बहुत अच्छा लगा क्योंकि वह बहुत ख़ूबसूरत था और वह एक बहुत सुकून की जगह भी थी।

हमारे दिल्ली और भारत यात्रा के अंतिम दिन हम क़ुतुब मीनार और दिल्ली हाट देख कर आए। क़ुतुब मीनार भारत की सबसे ऊँची मीनार है जो ७३ मीटर ऊँची है और ११९३ में बनाई गई थी। दिल्ली हाट दिल्ली का सबसे मशहूर खुला बाज़ार है। यहाँ पर हम सब ने बहुत ख़रीदारी की और भाव तोल करना सीखा जिसमें हमें बड़ा मज़ा आया।

कहते है कि दिल्ली दिलवालों का शहर है - वह केवल सच बात है क्योंकि सभी लोग जिनसे दिल्ली में हमारी मुलाक़ात हुई, उन सब ने हमारी बहुत अच्छे से ख़ातिरदारी की। असल में पूरे भारत में बहुत सारे दिलदार लोग है - चाहे वह राजस्थान हो या पंजाब - भारत के कोने-कोने में अच्छाई भरी हुई है।

मैं और २०१९-२० भारत भ्रमण का पूरा समूह हिंदी यू.एस.ए. का बहुत आभारी है। हमारे संरक्षक, राज मित्तल जी और कविता प्रसाद जी को हमारा अच्छे से ध्यान रखने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। हम सब ने बहुत कुछ सीखा, बहुत मज़ा किया, और अंत में, एक परिवार बनकर अमेरिका लौटे।

यह मेरे ज़िंदगी का सबसे महत्वपूर्ण अनुभव रहा है और हमेशा मेरे दिल से जुड़ा रहेगा।

मेरा प्रिय स्थान हरि का द्वार: हरिद्वार

Astha Rajpal - आस्था राजपाल

मेरा नाम आस्था राजपाल है। मैं अभी बोर्डनटाउन हाई स्कूल में दसवीं कक्षा की छात्रा हूँ। मैंने चेस्टरफील्ड हिंदी यू.एस.ए. पाठशाला से सन २०१७ में हिंदी स्नातकता प्राप्त की है। अब मैं हिंदी यू.एस.ए. से एक स्वयंसेविका के रूप में जुडी हुयी हूँ। शिक्षा में मेरी मुख्य रूचि विज्ञान ओर गणित विषयों में है एवं खेल में मुझे मैदान हॉकी बहुत पसंद है जिसमें मैं अपने विद्यालय की तरफ से भाग लेती हूँ। मुझे हिंदी बोलना, हिंदी कविताएं, हिंदी फिल्में एवं शास्त्रीय नृत्य बहुत अच्छे लगते है। मैं पिछले १० वर्षों से भारत नाट्यम नृत्य कला का प्रशिक्षण ले रही हूँ।

अभी हाल ही में मुझे हिंदी यू.एस.ए. की ओर से श्री राज मित्तल जी एवं श्रीमती कविता प्रसाद जी के नेतृत्व में १३ अन्य हिंदी पाठशाला के विद्यार्थियों सहित भारत भ्रमण पर जाने का अवसर मिला। वैसे तो हमारी पूरी भारत यात्रा बहुत ही रोमांचित एवं भारत के बारे में ज्ञान देने वाली रही, मैं अपना अनुभव भारत की एक ऐतिहासिक एवं अति सुन्दर शहर के बारे में बाँटना चाहूंगी, जो की एक पवित्र भूमि के रूप में भी जाना जाता है, जिसका नाम का मतलब बिलकुल इसके महत्व से मेल खाता है, हरिद्वार मतलब हरी (भगवान) का द्वार। इस शहर की सुंदरता देखते ही बनती है। छोटे-छोटे पर्वतों की छाया में, बहुत ही सुन्दर मंदिरों से सजे इस शहर की शोभा गंगा मईया और भी कई गुना बढ़ा देती है। यह हमारा अमृतसर के बाद दूसरा पड़ाव था जहाँ हम सब एक लम्बे सफर के बाद रात में पहुँचे। हरिद्वार में होटल पहुँचते ही हमें यह बताया गया था की अगली सुबह को हमें ४ बजे उठ कर बाबा रामदेव जी के आश्रम में योग करने के लिए जाना है। लम्बे सफर की थकान के बाद सुबह जाने के बारे में सुन कर हमें लगा की इतनी जल्दी जागना कैसे हो पायेगा, पर बहुत ही आश्चर्य की बात थी कि अगली सुबह हम सब जल्दी उठ कर पूरे उत्साह के साथ तैयार हो गए। ऐसा लग रहा था कि हमने बहुत ही अच्छा आराम कर लिया हो। शायद इस देव भूमि और यहाँ के पवित्र वातावरण ने हमारी सारी थकान समाप्त कर हमें तरो ताज़ा कर दिया था

बाबा मौर्य जी एवं बाबा रामदेव जी के वरिष्ठ अधिकारी श्री तिजारावाला जी हमारा स्वागत करने एवं आश्रम ले जाने के लिए आये थे। उनके साथ सूर्य उदय से पहले ही हम सभी पतंजलि आश्रम में पहुँच गए और बाबा जी के साथ योगा में भाग लिया। बाबा जी ने हमारे हिंदी यू.एस.ए. संस्था एवं हमारा परिचय सब को दिया। हमें बाबा जी से स्वास्थ्य को अच्छा रखने के बारे में बहुत अच्छी जानकारी के साथ-साथ उनका आशीर्वाद भी प्राप्त हुआ। हमें यहाँ बाबा जी के सामने नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत करने का भी अवसर मिला जिसे देख कर बाबा जी अत्यंत प्रसन्न हुए। बाबा जी ने हमारे हिंदी यू.एस.ए. संस्था की बहुत प्रशंसा की। हमारा यह सारा कार्यक्रम को आस्था दूरदर्शन के माध्यम से विश्व भर में प्रसारित भी किया गया। इसके बाद हमें आश्रम में यज्ञ करने के बाद पतंजली के बगीचों में भी जाने का अवसर मिला जहाँ प्राचीन तरीकों से जड़ी बूटियों की पैदावार की जाती है जो की कुछ महत्वपूर्ण आयुर्वेदिक दवाइयों के लिए प्रयोग की जाती है। यहाँ के प्राचीन विज्ञान पर आधारित अनुसन्धान केन्द्रों को देख कर मैं बहुत ही

प्रभावित हुई। एक बहुत ही दिलचस्प एवं सिखाने वाली बात जो मुझे बहुत पसंद आयी वह थी कि बाबा जी के आश्रम में खाना खाते समय कोई भी वार्तालाप नहीं करता बल्कि संवाद के लिये सिर्फ इशारों का ही उपयोग किया जाता है। इसके पश्चात हमने ऋषिकेश की ओर प्रस्थान किया। हरिद्वार से करीब आधे घंटे की दूरी पर स्थित यह अद्भुत शहर अत्यंत सुन्दर है जो कि हिमालय

की गोद में बसा है। तीन तरफ से पर्वतों से घिरा और इसके बीच में बहती गंगा एक सुन्दर संकीर्ण बाँध से सुशोभित है जिसे लक्षमण झूला के नाम से भी जाना जाता है। मुझे यहाँ के खूबसूरत दृश्य देख कर बहुत ही आनंद आया।

यहाँ हमने कई तरह के मनोरंजन का भी आनंद उठाया, जैसे की नाव की सवारी, पैदल लक्ष्मण झूले पर चलना, ताज़े भुने हुए मकई के फुल्ले खाना इत्यादि। मनोरंजन से जुड़े ये मजेदार किस्से जो एक मुस्कराती याद के रूप में आजीवन हमें याद रहेगा वह यह की भारत में अत्यंत प्रचलित तिपहिया वाहन जो की छोटे आकर का वाहन है जिसमें सिर्फ ५ से ६ यात्री एक बार में सवारी कर सकते है, हम सभी १६ लोग एक साथ इस वाहन में जैसे-तैसे संकुचित हो कर बैठ गए और सवारी का आनंद उठाया। इस वाहन पर, ये एक बहुत ही छोटा सफर था पर हम सभी के हँस-हँस कर पेट में दर्द होने लग गया था।

शाम को हमें गंगा मैया जी की महा आरती देखने का मौका मिला जिसमें सैकड़ों श्रद्धालु बहुत ही श्रद्धा से भाग ले रहे थे, सैकड़ों दीये रात को दिन के उजाले से भी अधिक रोशन कर रहे थे, घंटियों एवं शंख की आवाजें सुन कर बहुत ही अच्छा महसूस हो रहा था। ये दृश्य बहुत ही आश्चर्यजनक, उत्तम, मनमोहक एवं सुकून देने वाला था। हरिद्वार का यह पूरा अनुभव इतना अच्छा रहा कि वहाँ बार-बार जाने का मन करता है। इस बहुत ही निराली एवं अद्भुत धरती से हम बहुत दूर है इसलिए यहाँ जल्दी-जल्दी तो नहीं आ पाएँगे परन्तु हरिद्वार की यह खूबसूरत याद सदैव हमारे दिलों में रहेंगी। हमें इतना अच्छा भारत भ्रमण का अनुभव देने के लिए मैं हिंदी यू.एस.ए. की बहुत आभारी हूँ।

अटारी बॉर्डर : एक अनोखा अनुभव

नमस्ते मेरा नाम रोहन शर्मा है, मैं पिछले ६ वर्षों से हिंदी यू.एस.ए. से जुड़ा हुआ हूँ। मैंने पिछले वर्ष यहाँ से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। इस वर्ष हिंदी यू.एस.ए. ने मुझे भारत भ्रमण पर भेजने के लिए चुना। हम १४ बच्चे इस यात्रा पर गए थे।हम कई स्थानों पर जैसे दिल्ली, अमृतसर, हरिद्वार, ऋषिकेश, आगरा, जयपुर, उदयपुर, और चित्तौड़गढ़ गए थे। इन स्थानों में जो स्थान मुझे सबसे अधिक अच्छा लगा वह अमृतसर में भारत और पाकिस्तान की सीमा था। यह स्थान अमृतसर से करीब ३० किलोमीटर की दूरी पर है। हम वहाँ बस से गए थे। भारत की सीमा को अटारी बॉर्डर और पाकिस्तान की सीमा को वाघा बॉर्डर कहते हैं। जब हम सब वहाँ जा रहे थे तो हमें यह पता नहीं था कि हम जो देखने वाले हैं वह हमें जीवन भर याद रहेगा। वहाँ भारत की सीमा में एक स्टेडियम बना हुआ था और बीच में परेड के लिए एक सड़क थी। वहाँ बी.एस.एफ. के बहुत से जवान "बीटिंग रिट्रीट" समारोह की तैयारी कर रहे थे। भारत और पाकिस्तान की सीमा पर दो बहुत बड़े लोहे के दरवाजे थे। हम सब वहाँ दो पंक्तियों में बैठ गए। कुछ समय बाद, स्पीकर पर जोर-जोर से देश भक्ति के गाने बजने लगे। लोग उठकर सड़क पर नाचने लगे। सभी लोगों में बहुत जोश था। सभी बीटिंग रिट्रीट कार्यक्रम को देखने के लिए बहुत उत्सुक थे। भारत की ओर बहुत ज्यादा उत्साह था। सब लोग जोर-जोर से चिल्ला रहे थे और हम सब एकदम चकित थे। छोटे बच्चे भारत का झंडा हाथ में लिए हुए थे। तभी हमने देखा कि पाकिस्तान से दो परिवार द्वार पार कर भारत में आ गए। सीमा के द्वार के एकदम पास में जो सैनिक थे उनमें बहुत ज्यादा औपचारिकता दिखाई दे रही थी। वे आपस मेंकुछ नहीं बोल रहे थे। वे बस अपने कर्तव्य पर ध्यान दे रहे थे। जैसे-जैसे सूरज डूबा, दोनों ओर से सिपाही अपने देश के झंडे को उतार कर उसे तह करके अपने साथ ले गए। जितना शोर पहले हो रहा था अब उतनी ही शांति हो गई थी। हम सब बिना कुछ बोले बाहर चले गए। जब हम वापस बस की तरफ जा रहे थे तब हमारे पास से दो बी.एस.एफ. के अधिकारी गुजरे। हमने उनके साथ फोटो खिंचाई। यह अनुभव हम कभी नहीं भूलेंगे।

भारत यात्रा: चोखी ढाणी का अनूठा अनुभव

Muskan Seksaria - मुस्कान सेकसरीया

नमस्ते। मेरा नाम मुस्कान सेकसरीया है। मैं हिन्दी यू.एस.ए. से पिछले आठ वर्षों से जुड़ी हुई हूँ। पिछले वर्ष मैंने पिसकाटवे की पाठशाला से स्नातक किया, और इस वर्ष मैं एक स्वयंसेवक के रूप में काम करती हूँ। मैं चौदह वर्ष की हूँ और नौवीं कक्षा में पढ़ती हूँ।

भारत यात्रा मेरी ज़िन्दगी का सबसे ग़ज़ब का अनुभव था। मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला, जैसे खुद का और दूसरों का ध्यान रखना, भारत को विस्तार से देखा, भारत के इतिहास के बारे में सीखा, और एक नए परिवार के साथ वापस आयी। हालाँकि हम अमेरिका में रहते हैं और भारत के बारे में अगर सोचते भी हैं तो ताज महल और स्वर्ण मंदिर जैसे सारे विश्व प्रसिद्ध स्थान दिमाग़ में आते हैं। पर भारत यात्रा के कारण हमने वह देखा जो आम तौर पर नहीं देख पाते। हमने भारत को भीतर से जाना, पहचाना और यह देखा कि वास्तव में भारत क्या है।

हम चौदह बच्चों को भारत जाने का अवसर मिला, और उधर की संस्कृति के साथ जुड़ने का मौक़ा मिला। जबकि पूरी यात्रा बहुत यादगार थी, मुझे सबसे अनोखा राजस्थान के जयपुर में चोखी ढाणी लगी। हमने यहाँ पर राजस्थानी गाँव की संस्कृति को बहुत करीब से देखा। चोखी ढाणी का मतलब होता है `अच्छा गाँव'। हमने यहाँ प्राचीन कलाकृतियों, हस्तशिल्प, चित्रकारी, लोककथाओं और मूर्तियों के साथ पारंपरिक राजस्थान का वास्तविक चित्रण देखा। हम लोगों को राजस्थान के अलग-अलग लोक नृत्य देखने को मिले, और उन के साथ हमने भी नृत्य किया। इसके अलावा सारे लड़कों ने मालिश करवायी और अग्नि के पास बैठकर हमने रावण हत्था की मधुर आवाज़ सुनी। हालाँकि हमें घुड़सवारी, ऊंट की सवारी और घोड़ा गाड़ी की सवारी करने का समय नहीं मिला, फिर भी हमने इन्हें देखकर ही आनंद उठाया। चोखी ढाणी में हम सब ने राजस्थानी तरीक़े से पंगत में बैठकर अत्यंत स्वादिष्ट भोजन का स्वाद चखा। वहाँ के परिचारिकों की मेहमान नवाज़ी इतनी शानदार थी की हम अपने आप को विशिष्ट महसूस कर रहे थे। अगले दिन हम सुबह ठीक साढ़े सात बजे उदयपुर के लिए निकल गए। हमारे संरक्षक कविता जी और राज जी को बहुत-बहुत आभार, हम सभी का स्वयं के बच्चों के जैसे ध्यान रखा और भारत यात्रा को सफल बनाया। धन्यवाद रचिता जी और देवेंद्र जी को, अगर आप लोगों ने अठारह वर्ष पहले भारतीयों को एक साथ लाने के लिए दृढ़ संकल्प नहीं किया होता तो आज हमें यह लाजवाब अनुभूति का मौक़ा कभी नहीं मिलता। आखिरी धन्यवाद हिन्दी यू.एस.ए. को पूरी यात्रा का आयोजन करने के लिए।

अमृतसर

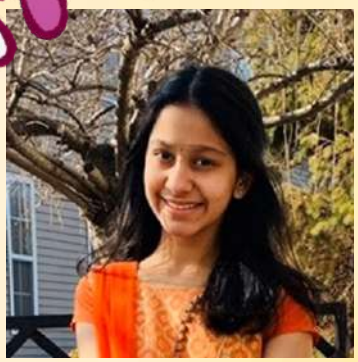

नमस्ते! मेरा नाम क्रीशा सोनेजी है। मैं मोनरो टाउनशिप मिडिल स्कूल में आठवीं कक्षा में पढ़तीहूँ। मैं साउथ ब्रुंस्विक हिंदी पाठशाला में उच्यस्तर-२ की कक्षा में हिंदी यू.एस.ए. की दिसंबर २०१९ की भारत यात्रा में हम १४ छात्र-छात्राएँ और २ संरक्षक साथ गए थे।हम कई शहर जैसे की दिल्ली, अमृतसर, हरिद्वार, आगरा, जयपुर और उदयपुर गए थे। यह अनुभव हमारे लिए तो बहुत ही यादगार रहा।

मुझे अमृतसर सबसे अच्छा लगा। अमृतसर में हमने अटारी बॉर्डर, जलियांवाला बाग और स्वर्ण मंदिर देखा। हमें भारत का इतिहास जानने का मौका मिला।स्वर्ण मंदिर हरमंदिर साहिब के नाम से भी जाना जाता है। गुरु रामदास जी ने स्वर्ण मंदिर को १५८८ में बनाना शुरू किया था और फिर गुरु अर्जुन देव जी ने पूर्ण किया\। मंदिर के अंदर जाते समय सर ढका हुआ होना चाहिए इसलिए हम सब ने रुमाल से अपना सर ढका। हम जब अंदर गए तब हमने प्रार्थना की और वह वातावरण बहुत शांत था। हमने गुरु साहिब जी के मंत्र भी बोले। मंदिर सरोवर के बीचोंबीच था और लोग अंदर नहा रहे थे। हमें यह जान कर कि यह जगह अत्यंत पवित्र है बहुत अच्छा लगा। हमने लंगर का स्वादिष्ट भी प्रसाद खाया। स्वर्ण मंदिर के बाद हम जलियांवाला बाग गए।

अमृतसर के जलियांवाला बाग में हमने शहीदों को याद करते हुए श्रद्धांजलि दी। जलियावाला बाग में १३ अप्रैल १९१९ में जनरल डायर के आदेश पर ४०० से ज़्यादा लोगों कोगोलियों से मार दिया गया था। आज भी दीवारों पर गोलियोंके निशान उस भयानक दिन का चित्र हमारी नज़रों के सामने लाते हैं। हम सब यह देखकर बहुत शांत और दुखी हो गए।

अटारी बॉर्डर में हमने भारत और पाकिस्तान की सीमा देखी। वह माहौल बहुत उत्साह से भरा था। सब लोग देश भक्ति के गानों परनाच रहे थे। हमने झंडा उतारने का कार्यक्रम देखा। वह बहुत ही अलग अनुभव था। सब लोग "वंदे मातरम्" और "भारत माता की जय" के नारे लगा रहे थे। पंजाब के इस खूबसूरत शहर अमृतसर और भारत के अन्य शहर का भ्रमण ज़िन्दगी भर याद रहेगा। आज भी उस यात्रा का स्मरण मुझे खुश कर देता है।

जलियांवाला बाग़

मेरा नाम आश्रित आत्माराम है। मैंने दो साल पहले हिंदी यू.एस.ए. से स्नातक की उपाधि प्राप्त की और तब से मैं ईस्ट ब्रंस्विक पाठशाला में युवा कार्यकर्ता हूँ। मुझे बच्चों को पढ़ाना बहुत अच्छा लगता है। इसलिए मुझे युवा कार्यकर्ता होने से बहुत ख़ुशी मिलती है। पिछले साल मेरा युवा कार्यकर्ता के रूप में पहला साल था और मैंने उच्चतर-२ के बच्चों को पढ़ाया। इस साल मैं अपनी माँ के साथ मध्यमा-३ के बच्चों को पढ़ा रहा हूँ।

जब मेरा चुनाव भारत यात्रा के लिए हुआ, मैं बहुत उत्साहित था। मैं अन्य साथियों के साथ भारत घूमने निकल पड़ा। मैं भारत की प्रसिद्ध और ऐतिहासिक जगहों पर जाने के लिए और वहाँ का ज्ञान प्राप्त करने के लिए बहुत उत्सुक था। वहाँ पर मुझे अपनी मातृ भाषा, हिंदी में बात करने का बहुत ही अच्छा अवसर मिला। पूरी यात्रा के दौरान हमें आध्यात्मिक, ऐतिहासिक और चमत्कारिक स्थलों को देखने का मौक़ा मिला जो इस प्रकार है, ताज महल, स्वर्ण मंदिर (अमृतसर), वागह और अटारी बॉर्डर, अक्षरधाम, इत्यादि। जलियाँवाला बाग मेरे दिल के बहुत क़रीब है। जलियाँवाला बाग हमारे इतिहास की एक बहुत ही दर्दनाक घटना है। हम जलियाँवाला बाग दिसम्बर २२ तारीख़ को देखने गए थे जो कि स्वर्ण मंदिर से कुछ ही मीटर की दूरी पर स्थित है। वहाँ पर जाते ही मेरा दिल भर आया। यह एक सिखों का शहीद स्मारक है जिन्होंने अपनी ज़िंदगी क़ुर्बान कर दी।जालियाँवाला बाग हत्याकांड १३ अप्रैल १९१९ (बैसाखी के दिन) हुआ था। रौलेट एक्ट का विरोध करने के लिए एक सभा हो रही थी जिसमें जनरल डायर नामक एक अँग्रेज ऑफिसर ने आ कर उस सभा में उपस्थित भीड़ पर गोलियाँ चलवा दीं जिसमें ४०० से अधिक व्यक्ति मरे और २००० से अधिक घायल हुए। जब जनरल डायर वापस इंग्लैण्ड पहुँचे, तब वहाँ के लोगे ने उनका स्वागत सत्कार किया। अभी भी वहाँ पार गोलियों के निशान वैसे के वैसे ही हैं और जब हमने

उन निशानों को देखा, तब हमारे कानों में इन शहीदों की आवाज़ गूंजने लगी और हमारी आँखों से आँसू आ गए। उन जैसे महान व्यक्तियों के बलिदान से ही हमें आज़ादी मिली। उस घटना से मुझे अमेरिका में हुए रेवलूशनेरी युद्ध की याद आयी।

उदयपुर

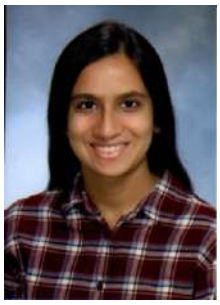

मेरा नाम सुहानी गुप्ता है। मैं ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ती हूँ, और सत्रह साल की हूँ। मैं हिंदी यू.एस.ए. के साथ पिछले बारह वर्षों से जुड़ी हुई हूँ, और मैं ४ वर्षों से स्वयंसेविका के रूप में काम कर रही हूँ। २०१९-२०२० भारत यात्रा में हमने बहुत सारे शहर देखे, और हर जगह हमने अलग-अलग चीजें देखीं और सीखीं। हमने भारतीय इतिहास और संस्कृति के बारे में वे चीजें सीखीं जो हम पहले नहीं जानते थे। हमारे सभी साथियों को अलग-अलग जगह पसंद आई, लेकिन मुझे उदयपुर सबसे अच्छा लगा क्योंकि मैंने वहाँ बहुत कुछ सीखा। उदयपुर में मैंने भारत के इतिहास के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त की, जिसके कारण मैं अपनी संस्कृति से और जुड़ गई। उदयपुर में हमने हिन्दू राजपूतों, जैसे महाराणा प्रताप और महारावल रतनसिंह, के बारे में सीखा। हमने इन राजाओं की बहादुरी के बारे में बहुत कुछ जाना। जब हम ये सब बातें सुन रहे थे, मेरे मन में ख्याल आया कि कैसे ये कहानियाँ उन कहानियों से अलग हैं जो मैंने अपनी पाठशाला में सुनी हैं। वर्तमान में मैं अपनी अमेरिका की पाठशाला में विश्व इतिहास के बारे में पढ़ रही हूँ, ख़ास तौर पर यूरोप के राजाओं के बारे में। मैंने देखा कि यूरोपीय राजाओं और भारत के राजपूत राजाओं में बहुत अंतर था। पश्चिमी राजाओं के लिए धन और संपत्ति महत्वपूर्ण थे, लेकिन राजपूत राजाओं ने हमेशा भारतीय संस्कृति और संस्कारों के अनुसार काम किया। राजपूत राजा जानते थे कि एक विदेशी राजा अपने देश की संस्कृति और सभ्यता के विरुद्ध जाकर काम कर सकता है ताकि उसकी समृद्धि बढ़े और उसकी विजय हो। लेकिन राजपूत राजाओं ने ऐसा नहीं किया। वे मानते थे कि न्याय के साथ राज करना, अपनी संस्कृति और सभ्यता को सम्मान देना और अपने आदर्शों के अनुसार काम करना ही एक राजपूत राजा की निशानी है। राजपूत राजाओं के कई किस्से हैं जिनमें वे हमेशा अपने आदर्शों पर खड़े रहे चाहे कुछ भी हो जाये। एक उदाहरण हैं महारावल रतनसिंह। भले ही उन्हें अलाउद्दीन खिलजी को मारने के कई अवसर मिले थे, उन्होंने खिलजी को उस समय नहीं मारा जब खिलजी के पास कोई हथियार नहीं था क्योंकि राजपूत राजा निहत्थे पर वार नहीं करते थे। एक और उदाहरण हैं, महाराणा प्रताप। वे हमेशा मुग़लों से लड़ते रहे ताकि वे स्वतंत्र राज्य में रहें। हल्दी घाटी के युद्ध और उसके कई सालों के बाद भी उन्होंने कभी हार नहीं मानी और कभी भी मुग़ल राजा, अकबर से पराजित नहीं हुए। एक बार जब अकबर ने अपने आदमी को महाराणा प्रताप से लड़ने के लिए भेजा, महाराणा प्रताप ने उसे हरा दिया था। वह दुश्मन जमीन पर था और मर रहा था, लेकिन उसे प्यास लगी थी। भले ही महाराणा प्रताप का वह दुश्मन था, फिर भी महाराणा प्रताप ने उसका सर उठाकर उसे पानी पिलाया। जब उनसे पूछा गया कि वे ऐसा क्यों कर रहे हैं, तब उन्होंने कहा कि दुश्मन होने से पहले, यह एक इंसान है। यह कहानी यह दर्शाती है कि कैसे महाराणा प्रताप के लिए इंसानियत और दूसरों की मदद करने का मूल्य हार-जीत से ज़्यादा था। इन सारी कहानियों से मुझे यह एहसास हुआ कि कैसे हिन्दू राजपूत राजा सारे विश्व के राजाओं से अलग थे क्योंकि वे हमेशा अपनी संस्कृति और सभ्यता से जुड़े रहे। मुझे यह भी समझ में आया कि भारतीय संस्कृति असल में क्या है, और कैसे मुझे उसके साथ जुड़ा रहना चाहिए, और इन आदर्शों पर डटे रहना चाहिए चाहे परिणाम

भारत यात्रा - मेरे प्रिय अनुभव

नमस्ते मेरा नाम संजना गोयल है। मैं चेरी हिल पाठशाला की स्नातक हूँ, और अब पिछले दो सालो से एक युवा कार्यकर्ता हूँ। इस साल मुझे भारत भ्रमण करने का अवसर मिला। हमने बहुत सारे शहर घूमे और बहुत कुछ देखा। सभी जगह बहुत मज़ा आया लेकिन मुझे ऋषिकेश सबसे अधिक पसंद आया। ऋषिकेश जाने से पहले हम हरिद्वार गये, और बाबा रामदेव के साथ योग करने के लिए सुबह चार बजे से उठे थे तो शाम तक बहुत थकान हो गयी थी। लेकिन जब हम ऋषिकेश पहुँचे और बस से उतरे, सारी थकान मिट गयी। हम गंगा के किनारे पहुँचे तो बहुत शांत और अच्छा लगा। नदी का पानी बहुत सुंदर सा नीले रंग का था। एक ओर ऊँचे पहाड़ थे और दूसरी ओर सूरज डूब रहा था। उस समय गंगा आरती में बैठने में बहुत ही अच्छा लगा। ऋषिकेश बहुत पवित्र जगह है और आरती में बैठकर मुझे समझ में आया ऐसा क्यों मानते है। मुझे यह भी समझ में आया कि ऋषिकेश सिर्फ हिंदू धर्म वालों के लिए ही नहीं, पर सब के लिए पवित्र है। वहाँ भारतीय लोगों से ज़्यादा मुझे विदेशी लोग दिखाई दिये।

मुझे उदयपुर में भी बहुत अच्छा लगा। मुझे उदयपुर की सबसे अच्छी जगह सहेलियों की बाड़ी लगी। बाहर से यह सिर्फ एक उपवन जैसी दिखती है, पर यह एक ऐतिहासिक जगह है। हमने सीखा कि रानी और रानी की सहेलियों के लिए राणा संग्राम सिंह ने यह उपवन बनाया। वहाँ पर हमने फ़व्वारे के पानी में बहुत मस्ती की। पानी से खेलने के बाद मैंने देखा कि मेरे आस-पास क्या-क्या था। सुंदर फूल वाले पेड़ थे। गमले और ज़मीन में भी बहुत सुंदर फूल और पौधे लगे थे। वहाँ कई फव्वारे और मूर्तियाँ थीं, जिनकी सुन्दरता को देख कर बहुत आनन्द आया।

जलियाँवाला बाग का माहौल मुझे बहुत भावुक लगा। यहाँ ब्रिटिश सैनिकों ने मासूम और निर्दोष भारतीयों पर हमला किया था। जब हम अंदर जा रहे थे, हम देख रहे थे कि लोग रोते-रोते और उदास होकर बाहर आ रहे थे और मुझे समझ में आ गया कि हम भी ऐसे ही बाहर निकलेंगे। आज भी बाग़ के अंदर और बाहर आने जाने का एक ही रास्ता है। जिस रास्ते से हम अंदर जा रहे थे, वही एक रास्ता था जिससे लोग भाग सकते थे और यह सोच कर मुझे बहुत दुख हुआ। अंदर पहुँच कर स्मारक देख कर मैं बहुत उदास हो गयी। और हमने देखा कि गोलियों के निशान अभी तक दीवारों पर हैं। बाहर निकल कर मुझे बिलकुल अच्छा नहीं लगा और समझ में नहीं आ रहा था कि इतनी बड़ी नाइन्साफ़ी कैसे हो सकती है।

हम बहुत जगह गये, लेकिन ये तीन जगहों ने मुझे बहुत प्रभावित किया। यह अनुभव मुझे बहुत अच्छा लगा। पहले जब मैं भारत के बारे में सोचती थी, तब मैं अपने परिवार के बारे में सोचती थी। अब मैं इस यात्रा और अनुभव के बारे में सोचती हूँ।

जो भी हो। इसी वजह से भारत में गीता की यह एक पंक्ति बहुत प्रसिद्ध है, "कर्म करो, फल की चिंता मत करो।" इस भारत यात्रा ने मुझे इस कहावत का असली मतलब समझाया है, और यह सिखाया है कि कैसे हमें हमेशा अपनी संस्कृति और अपने संस्कारों से जुड़े रहना चाहिये वरना हम अपनी भारतीय पहचान और सभ्यता को खो देंगे।

गुलाबी शहर जयपुर

नमस्ते, मेरा नाम अनुशा गुप्ता है। मैं पिछले सात वर्षों से कत्थक सीख रही हूँ। मुझे बांसुरी बजाने, खेल और संगीत में बहुत रुचि है। मैं पिछले वर्ष हिंदी यू.एस.ए. से स्नातक हुई थी और अब मैं कनिष्ठ-२ में स्वयं सेविका हूँ।

२०१९ में मुझे हिंदी यू.एस.ए. की ओर से भारत यात्रा पर जाने का अवसर मिला। हम बहुत सारे शहरों में गये और इन में से एक मुझे बहुत पसंद आया, यह था गुलाबी शहर जयपुर। जयपुर में हमने कई जगहों की सैर की और मुझे सबसे अच्छा आमेर का किला लगा।

जब हम वहाँ पहुँचे तो मैंने देखा कि ऊपर जाने के लिए हाथी पर बैठ कर जाना पड़ेगा। यह जानकर मुझे बहुत खुशी हुई क्योंकि यह मैं अमेरिका में नहीं कर सकती हूँ। जब हाथी हम सब को ऊपर ले कर जा रहे थे तो हमारे साथ के कई बच्चों को डर लग रहा था, पर हम सब को बहुत मज़ा भी आया क्योंकि यह हमारे लिए एक नया अनुभव था। उसके बाद हम किले के अंदर गए। वहाँ पर हमारे गाइड राजीव जी ने हम सब को किले के इतिहास के बारे में बताया। इस किले में एक शीश महल है जो मुझे बहुत सुन्दर लगा क्योंकि वहाँ सब दीवारों पर शीशे लगे हैं। राजीव जी ने बताया कि यहाँ एक मोमबत्ती जलाने से उसका प्रतिबिम्ब सब शीशों में दिखाई देता है। रानियों के कमरे के प्रांगण में एक छोटी सी जगह थी जहाँ पर वे तुलसी का पौधा उगाती थीं। मेरे घर में भी एक तुलसी का पौधा है और मुझे यह देख कर एहसास हुआ कि यह अत्यंत पुरानी परंपरा है। फिर राजीव जी ने बताया कि वहाँ के राजा गर्मी के मौसम में एक महल में रहते थे क्योंकि वहाँ छाया आने से महल ठंडा रहता था। फिर वे सर्दी में दूसरे महल में रहने के लिए चले जाते थे क्योंकि वहाँ पर बहुत धूप आती थी और वह महल गरम रहता था। यह बात मुझे बहुत रुचिकर लगी कि कैसे उस समय में लोग तापमान की समस्या का समाधान करते थे।

आमेर किला जा कर मैंने सीखा कि उस समय के जीवन और हमारे जीवन में बहुत अंतर है - तब बहुत सुविधाएँ नहीं थी परन्तु फिर भी सभी लोग अच्छा जीवन व्यतीत करते थे। उन्होंने इतनी सुन्दर इमारत बनायी और मुझे अपनी संस्कृति और इतिहास के बारे में जानने का अवसर मिला।

स्वामीनारायण मंदिर : अक्षर धाम

नमस्कार मेरा नाम प्रीशा अग्रवाल है। मैं पिछले ९ वर्षों से हिंदी यू.एस.ए. की छात्रा हूँ। मैं उच्च स्तर २ में साउथ ब्रंस्विक स्कूल में हिंदी सीखती हूँ, और मैं सामान्य पाठशाला में नौवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं चौदह साल की हूँ।

२०१९ की हिंदी यू.एस.ए. की भारत यात्रा में जाकर मुझे बहुत आनंद आया, जिसके माध्यम से मैं भारत से जुड़ पायी और वहाँ की संस्कृतियों से परिचित हुई। अक्षरधाम जाने का हमारा अनुभव बहुत ही अविस्मरणीय और अद्भुत रहा। हम सभी दिसंबर ३१ को, दिल्ली में BAPS स्वामीनारायण अक्षरधाम गए थे। हम सभी वास्तुकला की सुंदरता से प्रभावित हुए। मन्दिर के अंदर जा कर हम सब देखते रह गए कि मार्बल पत्थर में भी अत्यंत जटिल और सुन्दर नक्काशी की जा सकती है। वहाँ हमने शुद्ध शाकाहारी भोजन किया। भोजन बहुत ही स्वादिष्ट था, मुझे सबसे ज्यादा उनके बड़े-बड़े गुलाब जामुन पसंद आये। उसके बाद हम जूते निकालकर मुख्य मंदिर के अंदर गए। वहाँ, स्वामीनारायणजी की एक भव्य मूर्ति थी और अन्य सारे भगवान की सुन्दर सुनहरी मूर्तियां थी। बाहर सुन्दर फव्वारे थे,

और मेरा मन कर रहा था कि मैं ढेर सारे फोटो खींचूँ पर वहाँ फोटोग्राफी मना था। हम सब ने वहाँ भगवान स्वामीनारायण के बारे में एक रोबोटिक्स शो देखा। रोबोट बहुत रोमांचक थे बिलकुल मनुष्यों के जैसे हिलते थे और बात करते थे। वहाँ बड़े-बड़े कमरों में अलग-अलग दृश्य के माध्यम से स्वामीजी के बचपन, युवा, और वृद्ध जीवन को दर्शाया गया था। इन्हें देखकर हमें लगा की हम मानो प्राचीन काल में आ गए हों। एक कहानी जो मुझे बहुत पसंद आयी, स्वामीजी ने एक मछली को मछुआरों से बचाया और उनको सिखाया की कैसे हम अहिंसा का पालन कर सकते हैं। मन्दिर के अंदर हम एक नाव की सवारी में भी गए थे जिसमें सब लोग एक नाव में बैठकर रोबोट् की सहायता से दर्शाए दृश्यों को देख रहे थे। रोबोट्स ने दिखाया की भारत की उपलब्धियाँ क्या हैं, जैसे की आयुर्वेद, योग, गणित, विज्ञान, और कला। हमने एक चल चित्र देखा, जिसमें दर्शाया था की कैसे स्वामी जी ने पूरा भारत भ्रमण पैदल किया और गाँवों में जा-जा कर प्रवचन दिए। अंदर मंदिर में जाकर हमने प्रार्थना भी की। स्वामीनारायणजी के जीवन की झाँकियाँ देखकर हम सब बहुत प्रसन्न हुए। हमें वहाँ भारत की तकनीकी विकास के बारे में पता चला, और स्वामीजी के विचार धारा से हम परिचित हुए। मैं इस अद्भुत जगह को देखने के अवसर के लिए हिंदी यू.एस.ए. की आभारी हूँ और आशा करती हूँ की भविष्य में मैं फिर से अक्षरधाम और अन्य जगह जा पाऊँ।

सीमा वशिष्ट (शिक्षिका, मध्यमा-२, प्लेन्सबोरो पाठशाला)

पर्यावरण, आधुनिक समाज और आदिवासी जन-जातियाँ

वर्तमान में आधुनिक समाज को अपने प्रगतिशील होने पर बहुत गर्व है। इस तथाकथित प्रगति की दिशाहीन दौड़ में वह इतना आगे बढ़ चुका है कि उसे अपने सामने आ चुके संकट का भी भान नहीं। वह समझता है कि पृथ्वी, वायु और आकाश सभी उसके नियंत्रण में हैं और वह इस सृष्टि का एकमात्र स्वामी बन गया है। वह विज्ञान जिसका उचित प्रयोग कर पर्यावरण को सभी के लिए अधिक सुरक्षित और स्वच्छ बनाया जा सकता था, दुर्भाग्यवश आज वही विज्ञान पर्यावरण के विनाश का एक बड़ा कारण बन चुका है।

भारत के विभिन्न प्रांतों जैसे मध्यप्रदेश, बिहार, राजस्थान, आँध्रप्रदेश, गुजरात, उड़ीसा, त्रिपुरा, पश्चिम बंगाल आदि में बहुत सी आदिवासी जनजातियाँ पाई जाती हैं। इनमें मुंडा, संथाल, भील, उरांव, गोंड और मीना प्रमुख हैं। यह देखा गया है कि आधुनिक समाज की अपेक्षा आदिवासी समाज पर्यावरण के प्रति अधिक उदार व संवेदनशील होता है। वह पर्यावरण का अंधाधुंध दोहन नहीं बल्कि उसका सीमित उपयोग व सुरक्षा साथ-साथ करता है। उन्हें प्रकृति के साथ सामंजस्य रखते हुए जीवनयापन करना बहुत अच्छे से आता है। वे आज भी जल, जंगल और ज़मीन से जुड़े हुए हैं। उसके विपरीत आधुनिक समाज पर्यावरण की चिंता किए बिना केवल अपनी स्वार्थसिद्धि व क्षणिक लाभ के लिए उसे हानि पहुँचाने से भी गुरेज नहीं करता।

आदिवासी समाज पर्यावरण को अपने जीवन का एक अभिन्न अंग मानता है एवं उसके संरक्षण को सदैव प्राथमिकता देता है। वह नदियों, वृक्षों और वन्य-जीवन को आदर और सम्मान की दृष्टि से देखता है। उनके त्योहारों में भी पर्यावरण की सुरक्षा को सर्वोपरि रखा जाता है। उदाहरण स्वरूप, जहाँ सभ्य समाज होली में कृत्रिम रंगों और पानी का प्रयोग खुल कर करता है, वहीं आदिवासी आज भी प्राकृतिक तरीक़े से टेसू के फूलों के पानी से होली खेलने की परम्परा को जीवित रखे हुए हैं। इससे पर्यावरण और पानी दोनों की बचत होती है। दिवाली पर जहाँ शहरों में पटाखों से होने वाले वायुप्रदूषण और शोर से पर्यावरण नष्ट होता है वहीं आदिवासी क्षेत्रों में नाच-गाना करके सामूहिक रूप से त्योहार मनाए जाते हैं।

जहाँ हम पेड़ों की बेहिसाब कटाई करके इमारतों के जंगल खड़े कर रहे हैं, वहीं आदिवासी जंगल के बीच अपने घर बनाते हैं। ईंधन के लिए केवल अपनी आवश्यकता अनुसार जंगल से लकड़ियाँ बीनते हैं और साथ ही वृक्षारोपण भी करते हैं। उनका वनों के साथ हमेशा से एक घनिष्ठ संबंध रहा है और इन वनवासियों ने हमारी अरण्य संस्कृति को जीवित रखा है। उनके लिए वृक्ष, नदियाँ और माटी देवी-देवता स्वरूप होते हैं। उनकी संस्कृति में अनेक पेड़-पौधों और जीव-जंतुओं की पूजा की प्रथा रही है।
जहाँ हम नाना प्रकार के खेती के तरीक़े, जिनमें कीटनाशकों और कृत्रिम उर्वरकों का बड़ी मात्रा में प्रयोग होता है, के ख़तरों को समझकर पुनः प्राकृतिक खेती पर वापस आ रहे हैं वहीं आदिवासी आज भी प्राकृतिक खेती से जुड़े हुए हैं।

शहरों में जहाँ बड़े स्तर पर समुद्र और नदियों

से मछलियाँ व अन्य जलीय जन्तुओं को पकड़ कर व्यापार किया जाता है और लाखों टन कचरा समुद्र में फेंककर जल प्रदूषण किया जाता है, वहीं आदिवासी पानी के महत्व को भली-भाँति समझते हैं और अपने जीवनयापन के लिए सीमित स्तर पर जल और जलीय प्राणियों का उपयोग करते हैं।

आदिवासी और प्रकृति दोनों एक दूसरे में रचे-बसे हैं। अतः हम कह सकते हैं कि पर्यावरण और आदिवासी एक दूसरे के पूरक हैं और आधुनिक समाज को इनके पर्यावरण केप्रति लगाव से प्रेरणा लेनी चाहिए।

हिंदी को पहचान मैं दूँ

मयंक जैन सैंट लुइस पाठशाला के संचालक और प्रथमा-२ के अध्यापक हैं। ये अर्नस्ट एंड यंग कम्पनी में प्रोग्राम मैनेजर हैं। हिन्दी यू.एस.ए. से इनका सम्बन्ध २०१८ से है।

फिर आई है याद वतन की, कुछ यादें ताज़ा कर लूँ
हिंदी से पहचान है मेरी, अब हिंदी को पहचान भी दूँ

अंग्रेज़ी की पतंग उड़ा कर, टिंकल-टिंकल तान सुनाकर,
महसूस किया था जो गौरव,शाबाशी अपनों की पाकर,
क्यों न अपने बच्चों को भी, दे दें आज वही अवसर,
क्यों ना भर दूँ डिंगे इनमें, हिंदी के कुछ गीत सिखा कर

जिस देश पर इतना नाज़ था हमको, तोड़ गये वे पश्चिम के,
कूटनीत का जाल बिछा कर, किया आक्रमण हिंदी पर,
छोड़ी हमने भाषा अपनी, सिमट गये अंग्रेज़ी पर

भाषा तो भाषा है सबकी, बैर नहीं है भाषा से,
हम तो अपनी हिंदी को पहचान दिखाने आए हैं
अजनबियों का रंज नहीं, हम अपनों को रिझाने आये हैं

चलो हर्ष के इस दिवस पर, हिंदी का झंडा लहराएँ,
सुन्न पड़ी इसहिंदी को भी, दुनिया में पहचान दिलाएँ,
हिंदुस्तान के वंशज हैं, अब हिंदी का एक बिगुल बजायें,
कर्मभूमि के इस सागर में, हिंदी का इतिहास बनाएँ

फिर आई है याद वतन की, कुछ यादें ताज़ा कर लूँ,
हिंदी से पहचान है मेरी, अब हिंदी को पहचान मैं दूँ

पर्यावरण

मेरा नाम सुमन चौधरी है। मैं एवॉन हिंदी यू.एस.ए. पाठशाला में मध्यमा-१ की शिक्षिका हूँ। हिंदी भाषा और साहित्य में मुझे और मेरे पति सौरभ की सदैव ही रुचि रही है। हिंदी भाषा में सृजन करना और बच्चों को हिंदी सीखने के लिए प्रोत्साहित करना हमारे लिए बहुत ही सुखद अनुभूति है।

श्वासों का अविरल आवागमन,
ऊर्जा जिससे बना सबका जीवन;
सब होता जहाँ पर उत्पन्न,
पर्याय तेरा क्या है, ओ पर्यावरण।

बिना मूल्य के वायु जल,
छटाओं के दाता ये पर्वत, ये वन;
उस पर नदियों से समुद्रों का संगम,
संसार बने जब इनका हो संयोजन।

पृथ्वी, वायु, जल, अग्नि, आकाश,
सबके मेल से बने ये प्राण;
समीकरण है विधि का विधान,
संतुलन आवश्यक अथवा गंभीर परिणाम।

मौसम का वैश्विक तापमान,
हिमनदों की अपार गलन;
ऊँचे होते समुद्र तल,
क्या हम रुके हुए हैं देखने अगला प्रमाण?

हित में अपने पुनः प्रयोग,
प्लास्टिक से वियोग, सौर से सुयोग;
जैव, नाभकीय, पवन ऊर्जा जैसे संसाधन,
वृक्ष धन से सब हो संपन्न।

रहे यह उपहार ऐसे संरक्षित,
अगली पीढ़ी न रह जाए वंचित;
प्रार्थना यही करें हमारे मन,
क्योंकि प्रयाय तेरा कुछ नहीं – ओ पर्यावरण!

योगिता मोदी

कहीं देर न हो जाये

शिक्षिका एवं संचालिका — नॉर्थ ब्रंस्विक हिंदी पाठशाला

बहुत कह चुके बहुत सुन चुके बस
अब कहीं देर न हो जाये
चलो मिलकर करें शंखनाद सभी
एक आशावादी शुरुआत के साथ
अपनों को अपनों से मिलाएँ

भौतिकतावादी चमक-दमक
निगलती जा रही हमारी सभ्यता-संस्कृति को
साक्षी मान पर इसी को करते हैं प्रतिज्ञा
नहीं मिटने देंगे इसकी अस्मिता को

दोष नहीं है हमारी नन्ही और युवा पीढ़ी का
ये जिम्मेदारी हमारी है, हम ही इसे निभाएंगे
कच्ची मिट्टी को जिस रूप, आकार में ढालेंगे
वो सरलता से वैसे ही ढल जायेंगे

वैभवशाली इतिहास की धरोहर
समृद्ध परंपरा की अमूल्य थाती
कौन सम्हालेगा इसे कल को
यही बात समझ नहीं आती

भारत पार बसने वाले मेरे देशवासियों
अब तो जागो अब तो सम्हलो
ये तुम्हारी है जवाबदारी
जो तुमने इस देश से पाया और सीखा
उसके संवरण-संरक्षण की कर लो तैयारी

जीवन है नाम कुछ खोकर कुछ पाने का
पर इस कुछ पाने के लिए हम क्या गँवा रहे हैं
अनेकों बनावटी आवरण ओढ़े हम बस
अपनी मूलभूत पहचान ही खोते जा रहे हैं

अपना देश, संस्कृति और निज भाषा
मात्र यही मूलमंत्र है, हमारे चिरकालिक गौरव का
जैसा देश वैसा भेष ये बस क्षणिक बात है
अपनी जड़ से विलग हो कोई अस्तित्व नहीं है पौधे का

निज तरक्की की सीढ़ी चढ़ना
केवल नाम नहीं उन्नति का
परिवार, परंपरा और देश को जो आगे बढ़ाये
सार्थक उन्नति उसी की है
जो इस लक्ष्य को साधे
और जीवन को धन्य बनाये

चूक गए अगर हम अभी अपने उद्देश्य से
आने वाली पीढ़ियां हमें क्षमा न कर पाएंगी
जब तक हमें और उन्हें होगा चेतना-बोध
कुछ न रहेगा बस में फिर देर बहुत हो जाएगी।

वनों की सिसकियाँ

पारुल काम्बोज

नमस्कार, मेरा नाम पारुल काम्बोज है। मैं स्टैमफोर्ड कनेक्टिकट में कक्षा मध्यमा-१ की शिक्षिका हूँ। मैं पिछले चार साल से बच्चों को हिंदी पढ़ा रही हूँ। मुझे अपनी दिनचर्या में से थोड़ा समय निकाल कर बच्चों को हिंदी पढ़ाना अच्छा लगता है। इस माध्यम से हम अपनी हिंदी भाषा को अगली पीढ़ी तक पहुंचाने का प्रयास कर सकते हैं। आजकल सब रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में इतने व्यस्त हो गए हैं कि हिंदी सबसे रूठती नज़र आ रही है। पर हिंदी यू.एस.ए. के माध्यम से हम अपनी धरोहर को कुछ हद तक बचा सकते हैं।

इस बार हमारी कक्षा के लिए कर्मभूमि पत्रिका का विषय था "पर्यावरण में पेड़ो का महत्व", इसीलिए मैंने अपनी कविता के माध्यम से थोड़ा इसी विषय पर लिखने की कोशिश की है।

निकला जब घर से सूने से एक वन में, सोचा मन शांत करूँगा बहती खुली हवा में।
चल रहा था मदमस्त अपनी ही धुन में, पड़ी एक सिसकती आवाज मेरे कानों में।
थमा, डरा, नज़र घुमाई इधर-उधर, न दिखा कोई उस सुनसान जगह में।
दूर-दूर इस वन में, बस आ रही थी कानों में सिसकियाँ।
देखा जब इधर उधर, एक कंपकंपाती आवाज ने कहा।
ढूँढ रहा है किसे, यहाँ न रहा अब कोई।
साँसें छीन ली सबने, चलाई बेरहमी से कुल्हाड़ी।
काट डाला मुझे, अब ताज़ी साँसें लेने आया है।
देखो धरती पर, यह कैसा मंज़र आया है।
अरे ओ निर्लज्ज मानव, ढूँढने अब क्या आया है।
सूखी कटी शाखों पर क्या, मातम मनाने आया है।
पीड़ा से भर गया मन, आँखें झुकी शर्म से।
पेड़ो की रक्षा करना, यही धर्म निभाना है।
धरती माँ का संतुलन, बस यही लक्ष्य हमारा है।

बंधन का महत्व

विश्वजीत वुडब्रिज हिन्दी पाठशाला में मध्यमा स्तर-३ के अध्यापक हैं। इन्होंने गणित में विद्यावाचस्पति (PhD) की उपाधि प्राप्त की है परंतु इन्हें हिन्दी से विशेष लगाव है। ये भारत में बरेली से हैं तथा अमेरिका में एडिसन, न्यूजर्सी में रहते हैं।

थाली से गिर कर
कोई महत्व नहीं है रोटी का

बहुत महत्व है बंधन का
रोटी पर थाली का
नदी पर किनारों का
पतंग पर डोर का

बहुत महत्व है बंधन का
पुस्तक पर जिल्द का
तस्वीर पर किनारों का
कहानी पर अंत का

बहुत महत्व है बंधन का
सुई पर धागे का
आँखों पर शर्म का
वाणी पर लहजे का

बहुत महत्व है बंधन का
शिक्षा पर कृतज्ञता का
विचारों पर पवित्रता का
उन्नति पर दिशा का

बहुत महत्व है बंधन का
कूकर पर ढक्कन का
झूले पर रस्सी का
हंसी पर लज्जा का

बहुत महत्व है बंधन का
पत्ते पर टहनी का
टहनी पर वृक्ष का
वृक्ष पर जमीं का

बहुत महत्व है बंधन का
जीवन पर शरीर का
शरीर पर आत्मा का
आत्मा पर परमात्मा का

बहुत महत्व है बंधन का
शरीर पर वस्त्रों का
वस्त्रों पर धागों का
धागों पर गाँठो का

बहुत महत्व है बंधन का
इंसान पर रिश्तों का
रिश्तों पर मर्यादा का
मर्यादा पर संस्कृति का

बहुत महत्व है बंधन का
घर पर दीवारों का
दीवारों पर गलियों का
गलियों पर गाँव का

बहुत महत्व है बंधन का
सामान पर थैले का
थैले पर हत्थे का
हत्थे पर हाथ का

बहुत महत्व है बंधन का
अफसर पर दफ्तर का
गृहणी पर घर का
पुजारी पर मंदिर का

बहुत महत्व है बंधन का
रेल पर पटरी का
पहिये पर धुरी का
साइकिल पर सवार का

बहुत महत्व है बंधन का
परिवार पर समाज का
समाज पर सरकार का
सरकार पर संविधान का

सूरज से बंधी है धरती
इस बंधन से टूटकर
कोई महत्व नहीं है इस
धरती का

एक बूँद ..... वही बूँद

परमेश चन्द;

परमेश चन्द; जी भारत में जयपुर शहर के निवासी हैं। इन्होंने दर्शन शास्त्र में एम.ए. किया हैं। इन्हें हिंदी, हिंदी/उर्दू और अंग्रेजी में गद्य (prose) और पद्य (poetry) लिखना पसंद है। इनकी रचनाएँ मूल रूप से धर्म का वर्तमान में स्वरूप और उस सन्दर्भ में उसका पुनर्निरीक्षण;, इसी विषय पर होती हैं।

यह रचना श्री अयोध्या सिंह उपाध्याय जी की कविता `एक बूँद' से प्रेरित है। इस कविता में जीवन के चित्रण का– भुक्तभोगी की दृष्टि से तथा दर्शक/तमाशबीन की दृष्टि से – तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। तुलना `स्वतंत्रता' में और तथाकथित `सुन्दर एवं सुदीर्घ किन्तुबंधे/जकड़े हुए' जीवन में है और कवि की मान्यता है कि स्वतंत्रता निश्चय ही अधिक वांछनीय है। यह कविता वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में तरक्की की अवधारणा को दर्शाती है कि कैसे धन सम्पदा की जमाखोरी हीतरक्की का सूचकांक बन गया है और उस दिशा में हम ऐसे काम भी कर रहे हैं जो कि हमारी अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए भी घातक होंगे।

मैं वही हूँ बूँद, जो उद्विग्न थी,
घर जो छोड़ा, उस समय मैं खिन्न थी,
डरती, गिरती मैं धरा की ओर थी,
और फिर आयी समन्दर ओर थी,

जिसको कवि ने भाग्यशाली था कहा,
बदल मोती में, उसे वह कह रहा,
बूँद, बन मोती, हुई कैसी सुगढ़,
कौन होगा, जिसने ऐसा न चाहा?
रूप भी है साथ ही है अमरता,
पूछिए, ... कुछ और भी कोई चाहता?
केंद्र आकर्षण का ... वह भी चिर-पर्यन्त,
कदाचित ... कवि भी स्वयं यह चाहता,

कवि तो किन्तु कवि है, उसको क्या पता,
अमर होने की है पीड़ा कैसी, क्या,
उसने देखा रूप ही बस, रुक गया,
जिसने पीड़ा सही न, वह जाने क्या?

अमरता क्या..? ज़िन्दगी की दासता...?
जिससे फिर कोई कभी न छूटता,
ज़िन्दगी से बंध गये तो बंध गये,
श्राप सम ही है यह मुक्ति-विहीनता,

रूप क्या है? सतही सतही बात है,
अंतः से इसका न कुछ भी जुड़ाव है,
मुग्ध उस पर हो के ही निर्णय करें,
गहन विषयों में ... यह छोटी बात है

रूप में यह दासता का स्थायी भाव,
ख़ुशी का कारक हो कैसे, ऐसा भाव,
हाथ पैर जब हों सदा जकड़े हुए,
रूप है या नियति का कोई दुराव,

मेरी बहने खेलती हैं कूदती,
कभी उडती कभी वे हैं मचलती,
लहरों के झूले पे वे लेतीं मज़े,
पहुँच कर नभ में पुनः वे बरसतीं,
आज धरती पर हैं, कल हैं गगन में,
आज सहरा में हैं, कल हैं चमन में,
आज उस बच्चे को हैं हर्षाती वे,
हाँ कभी पड़ती भी हैं वे अवन में,

यह नहीं, कि मृत सी हो बैठी रहें,
एक डिब्बे में या पायल में किसी,
रूपमय जीवन मेरा है मृत समान,
ज़िन्दगी वे जीतीं हैं भरपूर ही,

रूप और आज़ादी में जो कि चुनाव हो,
एक ही चुनने का जो कि दबाव हो,
चुनना आज़ादी ही मेरे मित्र तुम,
दासता तो कर्क (cancer) जैसा घाव हो

पीयूष गोपाल

प्रकृति की चेतावनी

पीयूष गोपाल जर्सी सिटी हिंदी यू॰एस॰ए॰ पाठशाला से सात वर्षों से जुड़े हुए हैं और अभी मध्यमा-३ कक्षा के सह-शिक्षक हैं। वे एक बहुराष्ट्रीय कम्पनी में वाइस प्रेसिडेंट हैं। उन्हें हिंदी कविताएँ लिखने में, क्रिकेट देखने में एवं अर्थशास्त्र तथा मनोविज्ञान सम्बन्धी साहित्य पढ़ने में विशेष रुचि है।

सहमगयाघमण्डीप्रकृतिकीलातखाके
झुलस गया पाखण्डी वाइरस के झाँसे में आके
घर बैठ गया घुमक्कड़ हवाई अड्डे में धक्के खाके
राशन की खुराक ढूँढने लगा मुफ़्तख़ोर बंद दुकान देखके
काम की अहमियत समझने लगा कामचोर बेरोज़गारी की कगार पर खड़े होके

एक झटके में
सन्नाटा कुछ कहने लगा
आसमान काला लगने लगा
हवा कानों को चीरने लगी
धरती की कंपन धमकाने लगी

पर फिर सुबह हुई
ग़ुस्से में लाल आसमान ने अंततः नीले रंग को स्वीकारा
सूरज फिर से लगने लगा एक चमकता सितारा
पेड़ में पत्ते उगे
बगिया में फूल खिले
चिड़ियों की चहक सुनायी दी
पड़ोसियों की शकल दिखायी दी
मरीज़ों का दर्द तो बहुत बयान होता रहा
पर सेवाकर्मियों का हौसला देख वह उनको नतमस्तक होता रहा

कैसे अंत होगा ये किसी ने न जाना है
पर लातख़ोर आदम जात को इतना तो समझ में आना है
कि उस अदृश्य दैविक शक्ति से संघर्ष नहीं करना है
इस जीवन और प्रकृति को अमूल्य समझना है
तथा सहज भाव, संवेदनशीलता और शालीनता से जीवन व्यतीत करना है!

पुनरुपयोग - REUSE

बबीता भारद्वाज — एडिसन पाठशाला, कनिष्ठा-२

नरुपयोग- यानी दोबारा इस्तेमाल, यानी बचत। बचत उन वस्तुओं की जिनकी हमें हमेशा ज़रूरत पड़ेगी और जिनका हम आज और आने वाली पीढ़ी आगे भी करती रहेगी। उन ज़रूरतों में सबसे प्रमुख है पेड़ और पानी, जिनके बिना हम जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते। इनका सदुपयोग और पुनरुपयोग करके ही हम जीवन को सफल और प्रकृति को बचा सकते हैं।

काग़ज़ का ज़्यादा इस्तेमाल करना यानी पेड़ों का ज़्यादा से ज़्यादा कटना और पेड़ों का कटना यानी भविष्य पर ख़तरा! अपनी छोटी-छोटी ज़रूरतों के कारण हम यदि इसी प्रकार से पेड़ों को काटते रहेंगे और प्राकृतिक संसाधनों का दुरुपयोग करते रहेंगे तो अपने ही जीवन को नष्ट करते रहेंगे।

सर्वप्रथम हमें इन्हें बचाने की योजनाओं को बढ़ाने और उन पर अमल करने की ज़रूरत है। वस्तुओं का पुनरुपयोग करने से हम विश्व में बढ़ते हुए प्रदूषण पर भी क़ाबू कर सकते हैं। प्रदूषण के साथ ही कचरे को निपटाने जैसी बड़ी समस्या पर भी रोक लगनी आवशयक है, जिसके कारण पर्यावरण पर बहुत बुरा असर हो रहा है ।

प्लास्टिक का निपटारा करना आज बहुत ही जटिल समस्या है। उसको जला कर जो वायु प्रदूषण फैलता है उसके कारण बहुत सी स्वास्थ्य सम्बन्धी बीमारियाँ फैल रही है। परंतु अगर हम प्लास्टिक से बनी हुए वस्तुओं को दोबारा से इस्तेमाल करें तो इस समस्या को कम किया जा सकता है। हमें अपने प्राकृतिक संसाधनों को बचाने के लिए समाज में जागरूकता लानी आवश्यक है। यह हम सबका कर्तव्य भी होना चाहिये। प्लास्टिक की बोतलें और अन्य कचरे को लोग बाहर फेंकते हैं जिनको पशु-पक्षी अनजाने में खाते हैं। उनके भारी संख्या में मरने का यह सबसे बड़ा कारण है, वही समुद्री मछलियाँ व अन्य जानवर भी प्लास्टिक का शिकार बनते हैं।

काग़ज़, लकड़ी और प्लास्टिक से बनी हुई वस्तुओं का पुनरुपयोग करने से न केवल हम प्रदूषण की समस्या को कम कर सकते है बल्कि बचत करके हम फ़िज़ूलख़र्ची जैसी घरेलू समस्या का समाधान भी कर सकते हैं। हमें शुरुआत घर से ही करनी पड़ेगी। घर में कितना कचरा ऐसे ही पड़ा होता है जिसका फिर से रूप बदल कर हम इस्तेमाल कर सकते हैं। बच्चों के स्कूल के प्रोजेक्ट के माध्यम से हम उनको इस्तेमाल करके उनका प्रोत्साहन भी बढ़ा सकते हैं। घर में प्लास्टिक की खाली बेकार बोतलों व डिब्बों को साफ़ करके उनका इस्तेमाल बाग़वानी में कर सकते हैं, जैसे पानी डालने के लिए, उसमें पौधों को उगा कर गमले के रूप में और बाकी सजावट के प्रयोग में कर सकते हैं।

आज इंटरनेट पर ढेरों ऐसे आकर्षक तरीक़े तथा उपाय हैं जिनको अपनाकर हम पुरानी चीज़ों को नया आकार देकर घर की शोभा भी बदल सकते हैं और साथ ही बचत भी कर सकते हैं। अकसर लोग अपने घर का कचरा बाहर मोहल्ले में डालते हैं। बाहर पड़ा कूड़ा गंदगी के साथ बीमारियाँ फैलाता है और प्रदूषण

भी। पुराने फ़र्नीचर को रंग रोगन करके उनका आकर बदल कर फिर से इस्तेमाल किया जा सकता है। घर का कूड़ा कब आपके नये प्रयोग में आ जाए क्या पता!

आपस में नए-नए तरीक़ों और सुझावों को बाँट कर हम अपना और दूसरे का समय एवं पैसा भी बचाते हैं और साथ ही पर्यावरण को भी सुंदर बनाने में अपना सहयोग देते हैं। ऐसे ही हम शिक्षक-गण हिंदी यू.एस.ए के माध्यम से ऐसे बहुत से प्रोजेक्ट बच्चों से बनवाते व सिखाते हैं जिनसे बच्चों को प्राकृतिक संसाधनों का ज्ञान होता है और पढ़ाई के साथ ही कुछ नया सीखने को मिलता है। आइये हम सब मिल कर पर्यावरण को सुंदर व स्वस्थ बनाने में साथ क़दम बढ़ाते हैं।

धृति ग्रोवर, उच्चस्तर-२, मॉन्टगोमरी पाठशाला

वायु प्रदूषण - एक गंभीर समस्या

मेरा नाम ऋषिका पटनम है और मैं ७वीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं एडिसन में रहती हूँ और वुडब्रिज हिंदी स्कूल की उच्चस्तर-१ की छात्रा हूँ।

वायु प्रदूषण क्या है?

वायु प्रदूषण वायु हानिकारक ठोस कणों और गैसों का मिश्रण है। ये हानिकारक कण कार उत्सर्जन, कारखानों के रसायनों के साथ-साथ धूल और पराग स्प्रे से आ सकते हैं। हालाँकि अन्य लोगों के दृष्टिकोण अलग हो सकते हैं, लेकिन यह स्पष्ट है कि विश्व में इसके विभिन्न नकारात्मक प्रभावों के कारण वायु प्रदूषण एक प्रमुख कारण है।

वायु प्रदूषण के कारण

हवा में इतने हानिकारक उत्सर्जन के साथ यह ग्रीनहाउस प्रभाव का कारण बनता है जो पृथ्वी के वातावरण में गर्मी का जाल बनाता है। हमारे ग्रह की ओजोन परत सूर्य से आने वाली हानिकारक यूवी किरणों से हमारी रक्षा करती है। ग्रीनहाउस प्रभाव ओजोन परत में अदृश्य छेद बनाता है जिससे यूवी किरणें प्रवेश करती हैं और मानव त्वचा कैंसर, प्रतिरक्षा प्रणाली दमन, समय से पहले बूढा, और अन्य त्वचा क्षति, और मोतियाबिंद या आंखों को नुकसान पहुंचाती हैं। वायुमंडल में फंसने वाली गर्मी भी प्रत्येक दशक में पृथ्वी के तापमान में ०.२ डिग्री सेल्सियस की वृद्धि करती है। यह हमारे मीठे पानी के बर्फ के कैप को पहले की तुलना में तेजी से पिघलाने का कारण बन सकता है। वैज्ञानिकों का दावा है कि यदि हम अपनी पृथ्वी को वायु प्रदूषण से बचाने के लिए कुछ नहीं करते हैं, तो हमारे पास पीने का साफ पानी नहीं रहेगा

वायु संरक्षण क्या है?

भावी पीढ़ी के लिए स्वच्छ हवा को बचाना वायु संरक्षण कहलाता है।

वायु संरक्षण कैसे करें?

हम अपने ग्रह को इतनी बड़ी समस्या से कैसे बचाएं? खैर, हम हवा के संरक्षण से शुरू कर सकते हैं। उदाहरण के लिए कारों का उपयोग करने के बजाय साइकिल का उपयोग करें। यदि आप साइकिल का उपयोग नहीं करना चाहते हैं तो सड़क पर ग्रीनहाउस गैस बनाने वाले वाहनों की संख्या को सीमित करने में दोस्त के साथ कारपूल करें या सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करें। हवा के संरक्षण के कुछ तरीकों में शामिल हैं; बिजली के बजाय हाथ से बने बगीचे के उपकरण का उपयोग करना, पुन: उपयोग, सामग्रियों को रीसायकल करना और हवा को साफ करने के राष्ट्रीय और स्थानीय प्रयासों में शामिल होना। भारत पहले से ही हवा के संरक्षण के प्रयास कर रहा है। भारत में रहने वाले लोग पेड़ों और अन्य पौधों का सम्मान करते हैं क्योंकि वे हमें सांस लेने के लिए ऑक्सीजन देते हैं। वे अपने घर में स्वच्छ हवा लाने में मदद करने के लिए अपने घरों में तुलसी नामक एक पवित्र पौधा लगाते हैं। रात में पेड़ों को न छूना या "पेड़ को जगाना" उनके लिए सामान्य है क्योंकि उन्हें कार्बन डाइऑक्साइड लेने और हवा को साफ करने के लिए जाना जाता है ।

निष्कर्ष

इसलिए वायु प्रदूषण एक बहुत गंभीर समस्या है जो प्रत्येक दिन हमारे ग्रह को प्रभावित कर रही है। वायु संरक्षण के बिना जानवरों, पौधों और दूसरों की प्रजातियाँ मर जाएँगी और आने वाली पीढ़ियों को एक दिन भालू या यहाँ तक कि एक मच्छर को देखने का भी मौका नहीं मिलेगा। हमें हवा का संरक्षण करके पृथ्वी को बचाने में मदद करनी चाहिए।

वायु प्रदूषण और उसे कम करने में हमारे प्रयास

वायु प्रदूषण विश्व की बड़ी समस्याओं में से एक है। सभी प्राणियों के लिए स्वच्छ वायु का होना बहुत आवश्यक होता है। बिना वायु के मानव जीवन संभव नहीं है। शुद्ध और ताजी हवा का हमारे स्वास्थ्य पर जादुई असर होता है। हमारी काया निरोगी रहती है और तन-मन दोनों स्फूर्तिदायक। परन्तु जब वही शुद्ध ताजी हवा धूल, धुआँ, विषैली गैसों, मोटर वाहनों, मिलों और कारखानों आदि के कारण प्रदूषित होती है तो उसे वायु प्रदूषण कहते हैं। इस प्रदूषित वायु का हमारे शरीर पर बहुत ही बुरा प्रभाव होता है। बढ़ता हुआ वायु प्रदूषण कई घातक रोग जैसे कैंसर, दिल का दौरा, अस्थमा, त्वचा की समस्या और मृत्यु का कारण बन रहा है। वायु प्रदूषण को कम करने के लिए हमने अपनी ओर से कुछ कदम उठाए हैं। आशा है कि हमारे इन प्रयासों में आप भी साथ देंगे ताकि आने वाले समय में वायु प्रदूषण, बढ़ने की जगह कम होने लगे।

आर्यमन अरोरा

जब मैं छोटा बच्चा था तो मुझे बेबी अस्थमा हुआ करता था। वायु प्रदूषण मेरे लिए खाँसी का कारण बनता था। अब जब मैं स्कूल जाता हूँ तो मैं स्कूल बस का उपयोग करना पसंद करता हूँ। बस में कई बच्चे हैं और यह बहुत सारी कारों को सड़क पर आने से रोकता है। इसलिए यह वायु प्रदूषण को कम करने में मदद करता है। दिवाली पर मैं बहुत कम या छोटे पटाखे फोड़ता हूँ जो वायु प्रदूषण को कम करने में मदद करता है। मेरी कॉलोनी में मैं अपने माता-पिता को छोड़ने के लिए कहने के बजाय अपने दोस्त के यहाँ जाने के लिए या तो पैदल जाता हूँ या अपनी साइकिल का उपयोग करता हूँ। यह वायु प्रदूषण को कम करने में मदद करता है।

आर्यमन अरोरा

हमारे घर में पर्यावरण को सुरक्षित करने वाले नियमों का विशेष रूप से ध्यान रखा जा रहा है। मैं और मेरे परिवार वाले इस बात की हमेशा कोशिश करते हैं कि हम लोग पानी और बिजली का अनावश्यक उपयोग न करें। अगर मुझे और मेरे मित्रों को एक ही दिशा में काम से जाना होता है तो हम एक ही कार का प्रयोग करते हैं। इसके अतिरिक्त मैं और मेरे मित्र अपने घरों के आस-पास पेड़-पौधों को लगाने की भी कोशिश करते हैं। हम लोग एक और प्रयास कर रहे हैं कि ज्यादा लोगों को प्लास्टिक के हानिकारक प्रभावों के बारे में बता कर अवगत किया जाए। अगर हम सब पर्यावरण को सुरक्षित करने वाले नियमों का कड़ाई से पालन नहीं करेंगे तो वायु प्रदूषण का बढ़ा हुआ स्तर आने वाली पीढ़ियों के लिये बहुत खतरनाक साबित होगा।

आदित्य साहनी

हाल ही में जब मैं दिवाली के लिए भारत गया, तो मैंने देखा कि प्रदूषण कितना बुरा हो सकता है। जब मैं वहाँ था तो मैंने कई छोटे बच्चों और बूढ़े लोगों को बीमार देखा। लोग चेहरे पर पर हानिकारक गेस से बचने के लिए अपने चेहरे पर "मास्क" पहने हुए थे। यह बहुत ही भयावह था। जब मैंने देखा कि भारत में वायु की गुणवत्ता कितनी खराब है, तो मेरे मन में पर्यावरण की मदद करने की इच्छा हुई। मैंने कम ऊर्जा का उपयोग करना शुरू कर दिया और हमारे परिवार ने हवा में खराब गैसों को कम करने के लिए हमारे घर पर सौर पैनल लगवाया। हमने पर्यावरण में मोटर वाहनों से पैदा होने वाले प्रदूषण को कम करने के लिए एक हाइब्रिड कार भी ली।

यदि पूरी दुनिया के लोग अपने-अपने तरीके से पर्यावरण की रक्षा में कुछ योगदान देंगे तो हमारे इन सामूहिक प्रयासों के द्वारा वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने में मदद मिल सकती है।

ओम लाड

जंगल की आग: हमारी हवा को प्रदूषित करती है

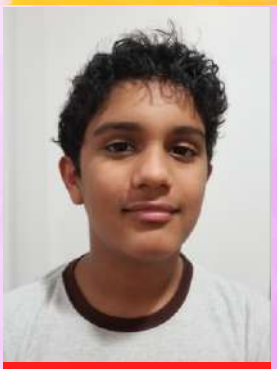

ओम लाड

मैं ट्रूप ६६, एडिसन, न्यूजर्सी में एक बॉय स्काउट हूँ। हम कैंपिंग ट्रिप पर जाते हैं और बाहरी गतिविधियाँ करते हैं। हम पैदल यात्रा के लिए जाते हैं। पिछले नवंबर, हमने उत्तरी बर्गन के स्काउट शिविर का दौरा किया। वहाँ हमें पता चला कि आग वन्यजीवों को जला देती है और उसका धुआँ हमारी हवा को प्रदूषित करता है। अपनी यात्रा के दौरान, हम न्यूजर्सी में सबसे ऊंचे फायर टॉवर को देखने के लिए पहुँचे, जो शिविर की जगह के पास ही था। यह समुद्र तल से १,५५५ फुट ऊँचा था। न्यूजर्सी में २१ फायर टॉवर बनाए गए हैं। प्रत्येक टॉवर में एक व्यक्ति वन क्षेत्र में आग का अवलोकन करता है। वे शुष्क मौसम के दौरान हर दिन टॉवरों पर जाते हैं। उनका काम जंगल का निरीक्षण करना है ताकि यह निश्चित किया जा सके कि कोई भी आग फैल न जाए। वे धुएँ और आग का निरीक्षण करते हैं। वे आपात कालीन सेवाओं को सतर्क करते हैं ताकि कोई भी आग सुरक्षित रूप से बुझाई जा सके। ये २१ फायर टॉवर न्यूजर्सी में हमारी हवा की रक्षा करते है। इस तरह अब हम अपने पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वाली आग रोक सकते हैं।

केटिटनी पर्वत की चोटी पर कैटफ़िश फायर टॉवर, समुद्र तल से १५८० फीट पर स्थित एक साठ फुट लंबा टॉवर है।

वायु प्रदूषण - कारण और बचाव

नमस्ते, मेरा नाम अक्षरा गुप्ता है और मैं तेरह साल की हूँ। मैं उच्चस्तर-१ में पढ़ती हूँ और छह वर्षों से एडिसन विद्यालय में हिंदी सीख रही हूँ। सामान्य पाठशाला में मैं आठवीं कक्षा में पढ़ती हूँ।

इस लेख में मैं वायु प्रदूषण के प्रभावों के बारे में चर्चा करूँगी। इस बारे में लोगों में कैसे जागरूकता लायी जाए और प्रदूषण को कम करने के तरीके भी बताना चाहती हूँ। हमारा मुख्य लक्ष्य आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित और स्वस्थ वातावरण बनाना है।

सबसे पहले यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि वायु प्रदूषण क्या है और यह समाज के लिए बहुत बड़ा खतरा है। वायु प्रदूषण आमतौर पर धुआँ और कई अन्य हानिकारक गैसों के कारण होता है। यह मानव स्वास्थ्य और पृथ्वी के कई पारिस्थितिक तंत्रों के लिए खतरा है। वायु प्रदूषण के कुछ विनाशकारी प्रभावों में सांस लेने की समस्या और यहाँ तक कि कैंसर, न्युमोनिआ, अस्थमा जैसी गंभीर स्थिति शामिल हैं। वैश्विक तापमान (Global Warmlng) एक और बड़ी समस्या है जिसके कारण वायु प्रदूषण होता है। इसके अतिरिक्त जानवरों को भी नुकसान पहुँचाया जा रहा है और जहरीली हवा उन्हें अपने घरों को स्थानांतरित करने और एक नए वातावरण के लिए अनुकूल होने के लिए मजबूर करती है।

वायु प्रदूषण के सभी विनाशकारी परिणामों के बारे में जानने के बाद आप शायद सोच रहे होंगे कि हम जागरूकता कैसे बढ़ा सकते हैं और एक अच्छे कारण का समर्थन करने के लिए और अधिक लोगों को कैसे शामिल कर सकते हैं? पहला और सबसे आसान तरीका अपने घर से शुरू करना है। वायु प्रदूषण के बारे में अपने परिवार को शिक्षित करें, और अपने जीने के तरीके में बदलाव लाने का प्रयास करें। इस सन्देश को फैलाने का एक और तरीका, वायु प्रदूषण जानकारी कार्यक्रम आयोजित करना तथा परियोजनाओं को व्यवस्थित करना है।

वायु प्रदूषण घरेलू स्वच्छता सामग्री और उन वस्तुओं के कारण भी होता है जिनका उपयोग हम हर एक दिन करते हैं। हर बार जब हम कोई भी वाहन चलाते हैं, हीटर या एयर कंडीशनर का उपयोग करते हैं या अपने बालों को सीधे या घुंघराले करते हैं तो हम वायु प्रदूषण को बढ़ाते हैं और इसे बदतर बनाते हैं। यहाँ कुछ तरीके दिए गए हैं जिनसे हम वायु प्रदूषण को कम करने की कोशिश कर सकते हैं।

- जब भी रोशनी, इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों और बिजली पर चलने वाली वस्तुएँ उपयोग में न हों उन्हें बंद रखें। इससे ऊर्जा का संरक्षण होता है।
- *जब आवश्यक हो केवल तभी वाहन से जाएँ, अन्यथा पैदल चलें या साइकिल चलाएँ।
- *वस्तुओं का पुन: उपयोग करें और यदि पुनरावृत्ति संभव हो तो इन्हें दूर फेंकने के बजाय इस्तेमाल करें।

बस इन युक्तियों का पालन करके हम वायु प्रदूषण को काफी कम कर सकते हैं और हमारे ग्रह को साफ रखने में अपनी भूमिका निभा सकते हैं।

पर्यावरण में वायु प्रदूषण

नमस्ते। मेरा नाम त्रिस्था फर्नांडेस है। मैं डैरियन कनेक्टिकट में रहती हूँ। मैं ११ साल की हूँ और मिड्डलसेक्स मिडिल स्कूल में छठवीं कक्षा की छात्रा हूँ। मैं हिंदी यू.एस.ए. स्टैमफोर्ड में मध्यमा-३ कक्षा में पढ़ती हूँ।

मैं इस लेख को एक सवाल के साथ शुरू करना चाहूंगी। क्या आप जानते हैं कि पर्यावरण इतना महत्वपूर्ण क्यों हैं?पर्यावरण हमारे लिए कई तरह से उपयोगी होता है।यह हमें हमारा पीने का पानी देता है, हमें खाना उगाने में मदद करता है, हमारी हवा को शुद्ध बनाता है और ऐसी बहुत कुछ चीजें। मैं इस लेख में आपके साथ पर्यावरण में वायु प्रदूषण के बारे में बात करना चाहूंगी।

मैंने एक लेख पढ़ा, "दुनिया में कितने शहर हैं?" उसके अनुसार दुनिया में कुल ५०,००० शहर हैं। क्या आप जानते हैं की २०१९ तक भारत दुनिया में सबसे अधिक वायु प्रदूषित स्थानों में से एक है।मैंने सबसे वायु प्रदूषित वाले शीर्ष ५० स्थानों पर शोध किया और उस सूची के पहले ७ शहर भारत में थे। इसके अलावा सबसे आगे २० पहले स्थानों में १३ शहर भारत में थे।यह जानना बहुत जरूरी है, क्योंकि वायु प्रदूषण के कारण एक साल में करीब बीस लाख भारतीयों की अकाल मृत्यु होती है।

मुझे मालूम है कि मैं सिर्फ ग्यारह साल की हूँ। मैं शायद इसके बारे में कुछ नहीं कर सकती लेकिन मैंने कुछ चीजों के बारे में सोचा जिसमें मैं मदद कर सकती हूँ।

१) त्योहारों के समय पटाखे चलाना कम करना या बंद करना।

२) हवा को कम प्रदूषित करने के लिए जब भी हो सके तब कार पूलिंग या पैदल चलना।

३) हवा में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ाने के लिए पेड़ लगाना और उनको संभालना।

यह कुछ चीजें हैं जिससे हम बेहतर हवा में सांस ले सकते हैं।आशा है कि आप सब मुझसे सहमत होंगे और इस लेख को पढ़कर आपको अच्छा लगा होगा।

त्रिशा दलवी

पेड़ लगाओ – पर्यावरणबचाओ,
इस दुनिया को सुंदर बनाओ।

पर्यावरण के संरक्षण में हमारे त्योहारों का योगदान

मोहित पाठक

नमस्ते, मेरा नाम मोहित पाठक है। मैं चेरी हिल हिंदी पाठशाला की उच्चस्तर-२ कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं हेनरी बेक मिडिल स्कूल में आठवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। मुझे गणित और विज्ञान में रुचि है। मुझे सॉकर खेलना और किताबें पढ़ना अच्छा लगता है। मुझे पाठ्योत्तर गतिविधियों में भाग लेना भी पसंद है। अंग्रेजी और हिंदी के अलावा मैं गुजराती भाषा भी बोलता हूँ और मैं संस्कृत भाषा का उत्साही छात्र हूँ। मुझे वैदिक मंत्रों का जाप करना अच्छा लगता है। मैं आध्यात्मिक हूँ और मैं वर्तमान में "भगवद्गीता" और "तत्व बोध" का सार अंग्रेजी में पढ़ रहा हूँ।

जब हम भारतीय त्योहारों का पर्यावरण पर प्रभाव के बारे में सोचते हैं तो हम आमतौर पर मान लेते हैं कि वे नकारात्मक हैं। उदाहरण के लिए, दिवाली में पटाखों के धुएं से वायु प्रदूषण होता है और पटाखों की ध्वनि से ध्वनि प्रदूषण होता है। इसके अलावा होली के दौरान फेंका गया रंगीन पाउडर हवा को प्रदूषित करता है। लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि क्या कोई त्यौहार वास्तव में पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकता है? खैर, यही मैं आपको बताने जा रहा हूँ।

प्राचीन भारत में हर त्योहार, अनुष्ठान और शुभ अवसर पर यज्ञ किए जाते थे। और ये यज्ञ हमारे पर्यावरण की बहुत मदद करते हैं। आज के दिन में भी हम नवरात्रि, शिवरात्रि, होली, गणेश चतुर्थी, मकर संक्रांति जैसे त्योहारों में यज्ञ करते हैं। आम तौर पर यज्ञ को ब्राह्मणों द्वारा किया जाता है जो धार्मिक अनुष्ठानों को करने में अत्यधिक सक्षम होते हैं। परंतु कोई भी व्यक्ति जिसको यज्ञ की विधि का पर्याप्त ज्ञान हो, वह उचित हवन सामग्री और वेद मंत्रोच्चारण के साथ यज्ञ कर सकता है।

यज्ञ को ईंटों से बने हवन कुंड में करते हैं। यज्ञ करने के लिए कई प्रकार की हवन सामग्री का उपयोग करते हैं जैसे कि घी, नारियल, केसर, चंदन, कपूर, चना, गेहूं, चीनी, बीजों का मिश्रण, और कुछ औषधीय जड़ी-बूटियां इत्यादि। यज्ञ का संचालन करने के लिए सबसे पहले हवन कुंड में लकड़ी पर घी डालकर लकड़ी को आग में जलाते हैं। इसके बाद वेद मंत्रोच्चारण करते हुए हवन सामग्री और घी को अग्नि में डाल कर जलाते हैं।

अब मैं आपको यज्ञ करने के लाभों के बारे में बताने जा रहा हूँ। यज्ञ से दुर्गंध, जीवाणु और कीड़े दूर होकर शुद्धि होती है। प्रथम लाभ: जब आग में सामग्री डाली जाती है तो वह भाप और धुएं के साथ आसपास के वातावरण में वाष्पित होकर दुर्गंध को दूर करती है। द्वितीय लाभ: जब सामग्री अग्नि में जलकर हवा में फैलती है तो आंशिक ऑक्सीकरण (अंग्रेजी में जिसे कहते हैं "पार्शियल ऑक्सीडेशन") प्रक्रिया के कारण हमें सामग्री के औषधीय लाभ मिलते हैं। तृतीय लाभ: जब कपूर वातावरण में फैल जाता है तो कई कीड़े जैसे कि मक्खी, मच्छर, पिस्सू

आदि या तो मारे जाते हैं या आसपास के वातावरण से दूर हो जाते हैं। अंत में, यज्ञ करते समय कई लोग संस्कृत मंत्रों का जाप भी करते हैं। जब मंत्रों का सही ढंग से उच्चारण किया जाता है तो वातावरण में विशेष कंपन उत्पन्न होते हैं जिनसे यज्ञ करने वालों की एकाग्रता में सुधार होता है, मानसिक तनाव कम होता है, और कुल मिलाकर उनके मन और शरीर पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। ये बातें कई वैज्ञानिकों के विभिन्न आधुनिक वैज्ञानिक प्रयोगों के द्वारा प्रमाणित की गई हैं।

निष्कर्ष में, यज्ञ कई त्योहारों का एक प्रमुख हिस्सा है जो पर्यावरण को शुद्ध करने में मदद करता है। यज्ञ जब ठीक से किया जाता है तो यह हवा को शुद्ध करता है, बैक्टीरिया को मिटाता है, और अवांछित कीड़ों को मारता है। इसके अलावा जब मंत्र जाप के साथ किया जाता है तो पर्यावरण को अधिक लाभ होता है। इस प्रकार यज्ञ के साथ आयोजित किए जाने वाले त्यौहार पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव डाल कर उसकी रक्षा करने में मदद करते हैं।

मेधा शिंदे

भारत त्यौहारों का देश है। सभी भारतीय इन त्यौहारों को बड़ी ख़ुशी और धूमधाम से मनाते हैं। किंतु, कुछ सालों से इन त्यौहारों पर प्रदूषण फैलाने का आरोप लगाया जा रहा है। लेकिन दोस्तों,

क्या आपको पता है कि हमारे भारतीय त्यौहारों का उद्देश्य प्रकृति के विविध बदलावों का स्वागत करना है? तो फिर ये प्रकृति को हानि कैसे पहुँचा सकते हैं? जैसे मकर संक्रांति, छठ-पूजा और पोंगल जैसे त्यौहारों में सूरज की आराधना की जाती है। होली में हम बसंत ऋतु का स्वागत करते हैं। बैसाखी, ओनम, बिहु द्वारा हम ईश्वर को अच्छी फसल के लिए धन्यवाद करते हैं। वटपूर्णिमा के दिन बरगद के पेड़ की पूजा होती है। दिवाली, नवरात्रि, गणेश चतुर्थी, इत्यादि त्यौहारों के माध्यम से हम अच्छाई की जीत मनाते हैं।

त्यौहारों का हेतु कभी पर्यावरण को हानि पहुँचाना नहीं, बल्कि हमेशा लोगों को एकत्रित करना रहा है। लेकिन कुछ त्यौहारों के बढ़ते व्यापारीकरण की वजह से प्रदूषण फैलने लगा है। उदाहरणत: प्लास्टर ओफ़ पेरिस की बड़ी मूर्तियाँ, पटाखों, और होली के रंगों में हानिकारक रसायनों का उपयोग; इन सब के कारण हवा और पानी प्रदूषित होते हैं। साथ ही बच्चे, बूढ़े और जानवरों को भी इनसे तकलीफ़ होती है।

त्यौहारों पर पाबंदी लगाने की बजाय लोगों को उन्हें सही तरीक़े से मनाने की सीख देनी चाहिए। हमें त्यौहारों के लिए पर्यावरण-अनुकूल चीजों का प्रयोग करना चाहिए, जैसे कि मिट्टी की मूर्तियाँ जो पानी में आसानी से घुल सकें। आजकल मूर्तियों में बीज बोकर, विसर्जन के बाद उन्हें पौधों में परिवर्तित करने का उत्तम प्रयोग हो रहा है। साथ ही होली में प्राकृतिक रंगों का उपयोग और कम शोर वाले पटाखों से त्योहारों का पूरा आनंद उठाया जा सकता है। अगर हम पुराने रीति-रिवाजों के साथ नयी सोच को जोड़ दें तो हम त्यौहारों के पूर्ण आनंद के साथ पर्यावरण को भी सुरक्षित रख सकते हैं। तो आइए, सही तरीक़े से त्यौहार मनाएँ, पर्यावरण को सुरक्षित बनाएँ!!

अनिका कौशल

मेरा नाम अनिका कौशल है। मैं चैरी हिल हिंदी यू.एस.ए. में उच्चस्तर–२ की छात्रा हूँ। मैं तेरह साल की हूँ और मुझे गाने गाना पसंद है। दीपाली आंटी इस साल हमारी शिक्षिका हैं और हमने उनसे बहुत कुछ सीखा है। हमने भारत के त्यौहारों के बारे में जाना और मेरा यह लेख इस विषय को संबोधित करता है।

भारत के बहुत सारे त्यौहार प्रकृति के लिए बहुत अच्छे होते हैं। इसका एक उदाहरण है छठ पूजा! यह उत्सव सूर्य देव का धन्यवाद करने के लिए और उनसे अपनी इच्छाओं की पूर्ति की प्रार्थना के लिए मनाया जाता है। इस त्यौहार में लोग दौरा और सूप का उपयोग करते हैं और ये दोनो चीज़ें बायोडिग्रेडबल हैं। इस उत्सव में लोग मंदिर में प्रार्थना नहीं करते, बल्कि वे नदियों की सफाई करते हैं।

हमारा सबसे बड़ा त्यौहार दीपावली भी प्रकृति की मदद करता है। मिट्टी के दीयों को बार बार इस्तेमाल करने से हम कचरा बनाना कम कर सकते हैं। इसी तरह नवरात्रि के त्यौहार में हम देवताओं की मिट्टी की आकृतियों और प्राकृतिक रंगों का उपयोग करके प्रकृति की सहायता कर सकते हैं।

इन उदाहरणों से पता चलता है कि भारत के बहुत सारे त्यौहार वातावरण की मदद कर सकते हैं।

मोहित आम्बे

मेरा नाम मोहित आम्बे है। मैं चौदह साल का हूँ और नौवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। सात साल से मैं हिंदी यू.एस.ए की चैरी हिल पाठशाला का छात्र हूँ। यह मेरा अंतिम साल है। मैं सैक्सोफोन बजाता हूँ और टेनिस खेलता हूँ।

हिंदू त्योहार और छुट्टियाँ हमेशा एक मजेदार समय होता है। हम दोस्तों और परिवार वालों से मिलते हैं और उनके साथ समय बिताते हैं। लेकिन हिंदू त्योहार वास्तव में पर्यावरण के लिए भी लाभकारी हैं।

उदाहरण के लिए, तुलसी के पौधे की पूजा करने के लिए तुलसी लग्न किया जाता है जो लक्ष्मी के अवतार और विष्णु के संघ का प्रतिनिधित्व करता है। तुलसी का पौधा सेहत के लिए बहुत अच्छा होता है। यह एक जीवाणुरोधी, एंटीवायरल और उच्च प्रतिउपचायक पौधा है। यह कैंसर से भी बचाता है।

एक अन्य उदाहरण पोंगल का त्योहार है। पोंगल के चौथे दिन, मनुष्यों की सेवा करने वाले गाँव के जानवरों, जैसे गाय आदि को सम्मान देने के लिए खूब खिलाया जाता है। वे हमें दूध देती हैं, जिससे पनीर, दही और क्रीम बनाते हैं।

अंत में, कई हवन जो हम अलग-अलग त्योहारों पर पूरे वर्ष भर करते हैं, वे भी पर्यावरण को लाभान्वित करते हैं। आम के पेड़ की लकड़ी को हवन में जलाया जाता है, लेकिन जब उस पर घी डाला जाता है तो इससे वास्तव में वायु प्रदूषण कम होता है और हवा भी शुद्ध होती है।

हमें यह ग्रह हमारे पूर्वजों से उत्तराधिकार में नहीं मिला
ये हमें अपने बच्चों से उधार में मिला है।

वायु संरक्षण द्वारा पर्यावरण की रक्षा

अनिशा वैद्य

मैं क्रॉसरोड्स नॉर्थ मिडिल स्कूल में छठवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे किताबें पढ़ना, तैरना, पियानो बजाना, भरतनाट्यम करना और बास्केटबॉल खेलना पसंद है। मुझे तरह-तरह के बोर्ड गेम्स खेलना भी बहुत अच्छा लगता है। मुझे नई जगहें घूमना भी बहुत पसंद है।

वायु प्रदूषण ज्यादातर जीवाश्म ईंधन के कारण होता है अगर हम जीवाश्म ईंधन कम जलाएंगे तो हम पर्यावरण का संरक्षण कर पाएंगे। वायु का प्रदूषण हमारी सेहत खराब करता है। अगर हम तेलसे चलने वाले वाहनों का उपयोग कम करेंगे तो वायु प्रदूषण कम होगा। हम बिजली से चलने वाले वाहन या साइकिल का उपयोग कर सकते हैं। अगर दूरी कम हो तो हम चल कर भी जा सकते हैं। बिजली उत्पादन के लिए कोयला या तेल जलाने के बजाय हम स्वच्छ तरीकों का प्रयोग कर सकते हैं। पनबिजली ऊर्जा, सौर ऊर्जा, वायु ऊर्जा तथा भूतापीय ऊर्जा ऐसे कुछ स्वच्छ तरीके हैं। खेती में उपयोग होने वाले रासायनिक खाद और कीटनाशकों की वजह से वायु में हानिकारक रसायन बढ़ जाते हैं। यदि किसान जैविक खाद और कीटनाशकों का प्रयोग करें तो वायु में ऐसे हानिकारक रसायनों का प्रभाव कम होगा। पेड़ लगाकर वायु प्रदूषण को कम किया जा सकता है। दूषित वायु में पाए जाने वाले हानिकारक कार्बन डाइऑक्साइड को सोख कर पेड़ हमें साफ़ हवा देते हैं। इन सभी विकल्पों को अमल में लाकर हम वायु प्रदूषण दूर कर सकते हैं और हमारे पर्यावरण की रक्षा कर सकते हैं।

शैली ठक्कर

मैं क्रॉसरोड्स नॉर्थ मिडिल स्कूल में छठवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे किताबें पढ़ना, तैरना, पियानो बजाना, भरतनाट्यम करना और बास्केटबॉल खेलना पसंद है। मुझे तरह-तरह के बोर्ड गेम्स खेलना भी बहुत अच्छा लगता है। मुझे नई जगहें घूमना भी बहुत पसंद है।

वायु हमारे चारों ओर सभी स्थानों पर पाई जाती है। वायु जिसमें हम सांस लेते है, रंगहीन एवं पारदर्शी होने के कारण हमें दिखाई नहीं देती। वायु के बिना तो मनुष्य अपने जीवन की कल्पना तक नहीं कर सकता। वायु मनुष्य के अलावा पेड़, पौधे, पशु-पक्षी आदि के जीवन के लिए भी जरूरी है। वायु प्रदूषण एक ऐसा प्रदूषण है जिसके कारण दिन-प्रतिदिन मानव का स्वास्थ्य ख़राब होता चला जा रहा है और पर्यावरण के ऊपर भी इसका बहुत बुरा प्रभाव पड़ रहा है। वायु प्रदूषण को रोकने के लिये वनों और पेड़-पौधों का ज्यादा से ज्यादा रोपण किया जाना चाहिए, ताकि वातावरण शुद्ध हो सके। वृक्षों के कटान पर रोक लगानी चाहिए। कारखाने और दुकानों में आधुनिक तकनीकी का प्रयोग करें। लोगों को ज्यादातर सार्वजनिक यातायात के साधनों जैसे सरकारी बसें, रेल, मेट्रो आदि का इस्तेमाल करना चाहिए। बिजली को बनाने में बड़ी मात्रा में फॉसिल फ्यूल्स को जलाना पड़ता है, जो वायु को दूषित करता है। सौर ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा देना चाहिए, क्योंकि ये एक साफ-सुथरी ऊर्जा का अक्षय भंडार है, जिसके उपयोग से वायु प्रदूषण नहीं होता।

चेस्टरफ़ील्ड पाठशाला – मध्यमा-२

नमस्ते, मेरा नाम सोनल विजयवर्गीय है। मैं चेस्टरफ़ील्ड, हिंदी यू.एस.ए. पाठशाला में पढ़ाती हूँ। मेरी कक्षा हर शुक्रवार को प्रार्थना और भारतीय राष्ट्रीय गीत से शुरू होती है। वर्णमाला और गिनती बोल कर हम अपनी कक्षा में अध्ययन प्रारंभ करते हैं। हर कक्षा अध्ययन को हम कहानी पढ़कर समाप्त करते हैं। मुझे पढ़ाते समय छात्रों के प्रश्नों के उत्तर देने, उनकी जिज्ञासा को पूरा करने और उन्हें भारतीय संस्कृति के बारे में बताने का अवसर मिलता है। मैं और मेरे शिष्य हर सप्ताह शुक्रवार का इंतज़ार बड़ी उत्सुकता से करते हैं।

पर्यावरण परिवर्तन के खिलाफ लड़ने में मदद करने के लिए पानी कैसे बचाएं और संरक्षित करें

हमारी पृथ्वी ७१% पानी और २९% भूमि है लेकिन हमें अभी भी पानी को बचाने और संरक्षित करने की आवश्यकता है। ७१% में से केवल ५% पानी उपयोग करने योग्य है।

जब आप पानी का उपयोग नहीं कर रहे हैं तो चल रहे नल को बंद कर दें। सुनिश्चित करें कि वह पूरी तरह से बंद हो गया है। टपकते हुए पाइप को भी ठीक करें, क्योंकि वे बहुत सारा पानी बर्बाद कर सकते हैं।

जब आप अपनी कार धो रहे हों तो एक नली नोजल का उपयोग करें या पानी को बंद कर दें। आप हर बार १०० गैलन बचाएंगे। प्रत्येक दिन अपने पीने के पानी के लिए एक गिलास नामित करें, या एक पानी की बोतल को बार-बार भर कर उपयोग करें जो धोने के लिए पानी की मात्रा में कटौती करेगा।

नई वॉशिंग मशीन की खरीददारी करते समय ऊर्जा स्टार मॉडल के बीच संसाधन बचत की तुलना करें। कुछ मॉडल प्रति लोड २० गैलन पानी बचा सकते हैं। अपने शॉवर को ५ मिनट से कम उपयोग करें। आप प्रति माह १००० गैलन तक पानी बचा सकते हैं।

श्रीराम प्रशांत

नल से पानी चलाने के बजाय एक कटोरी पानी में अपने फलों और सब्जियों को धोएं और अपने पौधों को पानी देने के लिए उस पानी का उपयोग करें।

केया बकरानिया

पानी जीवन के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। हमें पानी बचाना चाहिए क्योंकि दुनिया में पानी की कमी है। बचे हुए पानी को बचाने के लिए हम कुछ कर सकते हैं जैसे --

१) हमें कम पानी से और जल्दी नहाना चाहिए।

२) जब सबेरे दातुन करें तो हेम नल बंद रखना चाहिए।

३) बर्तन साफ़ करते समय और उन पर साबुन लगाते समय हेम नल बंद रखना चाहिए।

हमें पानी बचाना चाहिए और सब को भी ऐसा करने को कहना चाहिए।

राधा पंत

पानी जीवन का आधार है। पृथ्वी पर पानी सीमित मात्रा में है। विश्व की आबादी बढ़ने से अब हम पानी की कमी का सामना कर रहे हैं।

सरकारें बड़े-बड़े बाँध बनाकर पानी को साधने का प्रयास कर जल्दी नहाना चाहिए।

२) जब सबेरे दातुन करें तो हेम नल बंद रखना चाहिए।

३) बर्तन साफ़ करते समय और उन पर साबुन लगाते समय हेम नल बंद रखना चाहिए।

हमें पानी बचाना चाहिए और सब को भी ऐसा करने को कहना चाहिए।

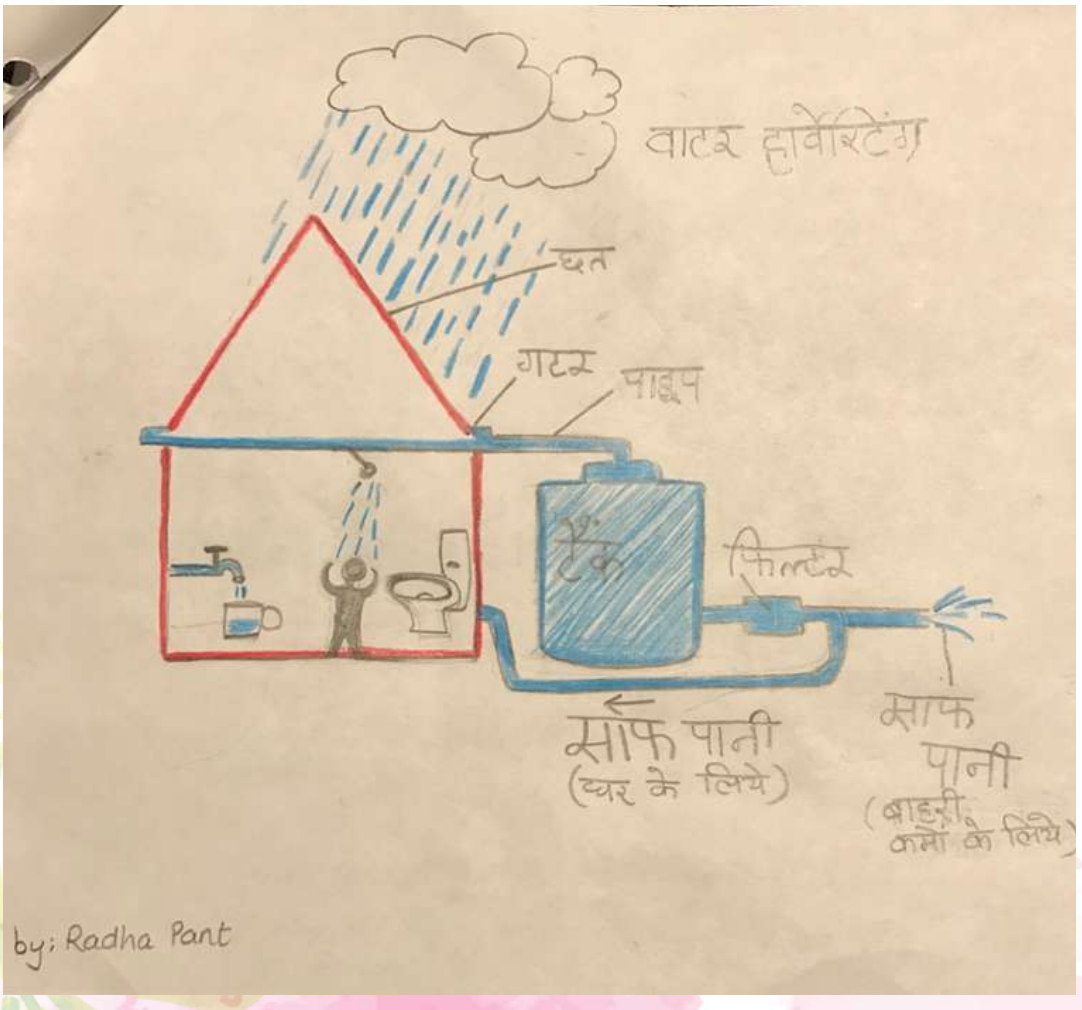

इस पानी का उपयोग पीने के लिए, कारों को धोने, फसलों को पानी देने, स्नान करने आदि के लिए भी किया जा सकता हैं। वाटर हार्वेस्टिंग हमारे घर को हरा भरा करने और आपके पर्यावरण को सुरक्षित रखने की अच्छी तकनीक है।

चैरी हिल पाठशाला - मध्यमा-२

मेरा नाम डॉ. दीप्ति रायबागकर-मलिक है। मैं और मेरे सह शिक्षक पीयूष नाथानि जी मध्यमा-२ के शिक्षक हैं। मध्यमा-२ के छात्र-छात्राओं ने इस वर्ष जल संरक्षण के अपने योगदान के बारे में कुछ पंक्तियाँ लिखीं हैं।

अंश जग्गी: मैं कम समय के लिए नहाता हूँ।मैं अपनी बोतल का बचा हुआ पानी पौधों में डालता हूँ।मैं मंजन करते समय पानी को बंद कर देता हूँ।मैं अपने दोस्तों को पानी बरबाद करने से रोकता हूँ।

अरनव सिंह: हमारे शरीर का सत्तर प्रतिशत भाग जल से बना है, इसलिए जल नहीं तो कल नहीं। जल को बचाने के बहुत तरीक़े हैं। जैसे कि नल को बिना आवश्यकता के नहीं चलाना चाहिए। ज़्यादा देर तक पानी से नहीं नहाना चाहिए और बचे हुए जल का सही उपयोग करना चाहिए। कृपया जल को बचाएँ।

अन्वी सिंह: जैसा कि आप सब जानते हैं कि जल ही जीवन है, इसलिए मैं जल को कई तरीक़े से बचाती हूँ। एक तरीक़ा है कि जब मैं दाँत साफ़ करती हूँ तो

मैं पानी ज़रूरत के समय चलाती हूँ। जब मैं साबुन लगाती हूँ तो मैं नल बंद कर देती हूँ। जल नहीं तो कल नहीं।

निखिल सुब्रमणियम: मैं अपने दांतों को ब्रश करते समय नल को बंद रखता हूँ। मैं पौधों के लिए बचे हुए पानी का उपयोग करता हूँ। मैं जल्दी नहाता हूँ।

वैश्नवि कट्टमुरि: उपयोग में ना होने पर मैं नल बंद कर देती हूँ और मैं अपने नहाने के समय को छोटा रखती हूँ। मैं एक ड्रम में बारिश का पानी उपयोग के लिए इकट्ठा करती हूँ जिससे पानी की बचत हो। जब दिन में तापमान कम हो तब हम लॉन में पानी देते हैं।

हार्दिक अग्रवाल: जब भी मैं ब्रश करता हूँ तो मैं नल को बंद रखता हूँ। मैं नहाने के लिए कम पानी का उपयोग करता हूँ।

आरव कौशल: पानी जीवन के लिए बहुत ज़रूरी है। पानी बचाने के लिये मैं सुबह ब्रश करते समय नल बंद रखता हूँ और नहाते समय साबुन लगाते हुए शावर बंद कर देता हूँ। हम सब को कोशिश करनी चाहिए कि हम पानी की बर्बादी ना करें।

कुणाल प्रभाकर: नहाते समय सिर्फ उतने ही पानी का उपयोग करे जितने की जरूरत है। दांत साफ़ करने के समय नल खुला न रखें।

पूजा जोशी: मैं हर बार पानी का नल सख्त बंद करती हूँ जिससे पानी की बूंदें न गिरें और पानी जाया न हो। मैं जितना चाहिये उतना ही पानी पीने के लिये या नहाने के लिये लेती हूँ। इस तरह मैं पानी की बचत करती हूँ।

जल संरक्षण में पर्यावरण में योगदान

सायेशा अरोरा — मोन्टगोमेरी हिन्दी पाठशाला

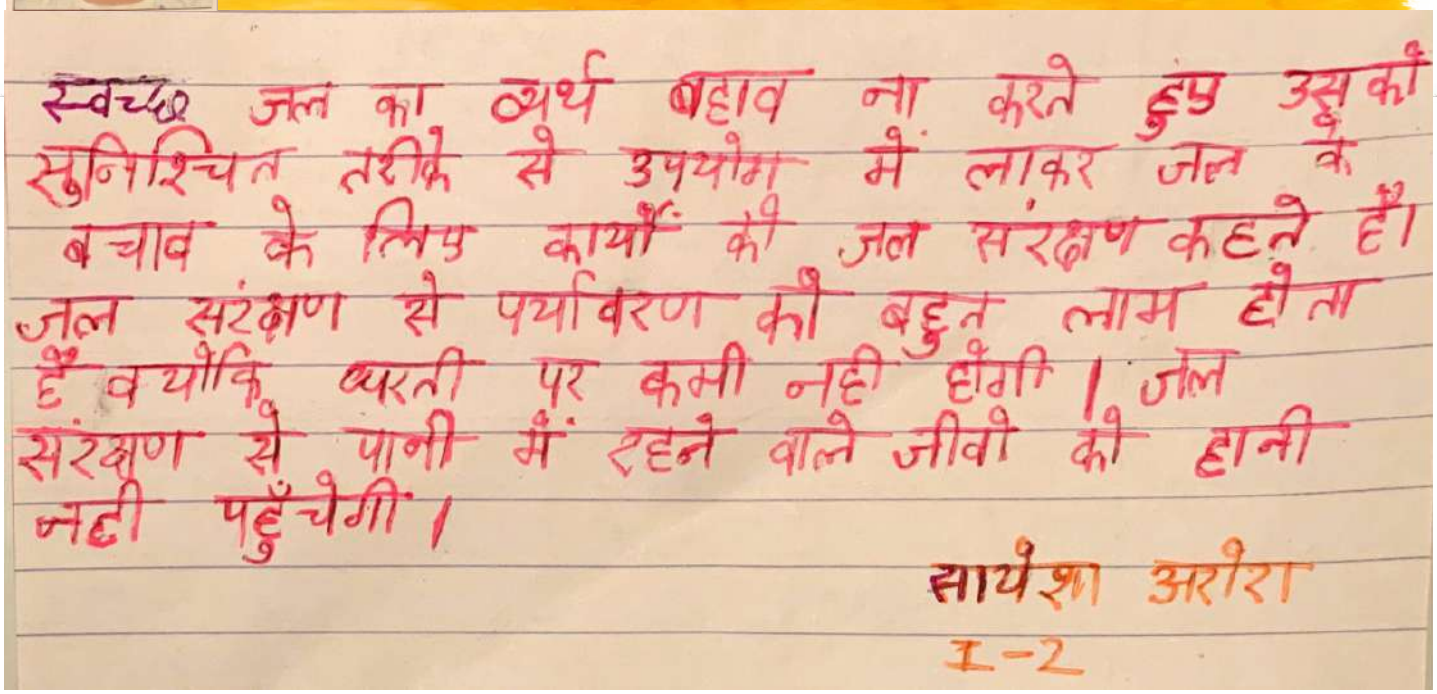
स्वच्छ जल का अर्थ बहाव ना करते हुए उसको सुनिश्चित तरीके से उपयोग में लाकर जल के बचाव के लिए कार्यों को जल संरक्षण कहते हैं। जल संरक्षण से पर्यावरण को बहुत लाभ होता है क्योंकि धरती पर कमी नहीं होगी। जल संरक्षण से पानी में रहने वाले जीवों को हानी नहीं पहुँचेगी।

सायेशा अरोरा
I-2

पर्यावरण की रक्षा में वृक्षों का योगदान

नमस्कार, यह लेख स्टैमफोर्ड के मध्यमा-१ कक्षा के छात्रों द्वारा लिखा गया है। इस लेख में बच्चों ने बहुत ही खूबसूरती के साथ पर्यावरण में वृक्षों के महत्व को समझाने का प्रयत्न किया है। आजकल जिस प्रकार से मनुष्य की बढ़ती आकाँक्षाओं ने हर जगह वन्य जीवन को आघात पहुँचाना शुरू किया है और धरती पर असंतुलन पैदा होने लगा है, इस लेख के माध्यम से बच्चों ने समझाया है कि हम किस प्रकार पेड़ो की सुरक्षा कर के धरती पर इस बढ़ते प्रदूषण को रोक सकते हैं और सभी वन्य प्राणियों और जीव-जन्तुओं की रक्षा कर सकते हैं।

सभी हरे पौधों की तरह पेड़ भी प्रकाश संश्लेषण के माध्यम से ऑक्सीजन उत्पादन करते हैं। जहाँ भी पेड़ स्थापित किए जाते हैं, वहाँ वन्यजीवन और अन्य पौधों का पालन करना सुनिश्चित होता है, जिससे एक स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र सुनिश्चित होता है। पेड़ हमें प्रदूषण से बचाते हैं। पेड़ हमें छाया देते हैं और आसपास का तापमान कम करते हैं। पेड़ जानवरों के खाने का साधन होते हैं। पेड़ धरती से पानी सोख कर, हवा में छोड़ते हैं, जिससे बारिश होती है। पेड़ वायु को शुद्ध करते हैं। पेड़ प्राण रक्षक वायु ऑक्सिजन की आवश्यकता को पूरा करते हैं। मुझे लगता है की पेड़ महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे पक्षियों और अन्य जानवरों को आवास प्रदान करते हैं। मनुष्य पेड़ों पर निर्भर हैं। आज मानव ने अपनी जिज्ञासा में पर्यावरण के सहज कार्यों में हस्तक्षेप करना शुरु कर दिया है, उस वजह से धरती का संतुलन बिगड़ रहा है। पेड़ों को बचाने के लिए हमें अपने कागज़ के उपयोग को सीमित करना चाहिए और पेड़ों और जंगलों के करीब हमारी गतिविधियों से अवगत होना चाहिए। ऑस्ट्रेलिया में जंगल की आग के कारण लाखों पेड़ और जानवर मर रहे हैं।

पेड़ बचाव, पर्यावरण बचाव।

श्रेया भारद्वाज — ईस्ट ब्रंसविक उच्चतर-१ युवा कार्यकर्ता

वैश्विक ऊष्मीकरण

भारत, अमेरिका, और पूरा विश्व सभी वैश्विक ऊष्मीकरण की एक बड़ी समस्या से गुज़र रहे हैं;। आम जनता को लगता है कि वैश्विक ऊष्मीकरण एक साधारण समस्या है, जिस पर हमेशा समाचारों में कुछ न कुछ आता रहता है। उनको यह मालूम नहीं है कि वैश्विक ऊष्मीकरण मानव जाति की बनाई हुई समस्या है, यानी कि उन्होंने ही इस समस्या को जन्म दिया है। सुधारना तो दूर की बात है, लोग अपनी समस्या को स्वीकार भी नहीं कर रहे हैं। अगर इस समस्या पर अभी ध्यान नहीं दिया तो कही देर न हो जाए। पिघलते हुए हिमालय से लेकर सूखे पड़े कैलिफोर्निया तक, विश्व के हर एक हिस्से में वैश्विक ऊष्मीकरण का प्रभाव महसूस हो रहा है, पर वैश्विक ऊष्मीकरण का असली मतलब क्या है? उसके कारण क्यों तरह-तरह की प्राकृतिक प्रलय हो रही हैं? जब ग्रीनहाउस गैसों का स्तर आसमान में बहुत बढ़ जाता है, और उसके कारण पृथ्वी गर्म हो जाती है तो उसे वैश्विक ऊष्मीकरण कहते हैं। कार्बन डायआक्सायड जैसी कई ग्रीनहाउस गैस सूर्य की किरणों को चारों तरफ़ से घेर लेती हैं, और वे किरण वापस अंतरिक्ष में विकीर्णित नहीं कर पाती हैं। इसकी वजह से जो ऊष्मा बनती है वह फँस जाती है और पृथ्वी को गर्म करती है। पहले जब पृथ्वी का निर्माण हुआ था तभी कार्बन डायआक्सायड अस्तित्व में आयी थी। उसके बाद पृथ्वी अत्यंत गर्मी और अत्यंत ठंड के बीच में चक्रण करती रही है। पहले इंसान को जीवित रहने के लिए अपने खान-पान, कपड़े, और आश्रय को ढूँढना पड़ता था। जैसे ही मनुष्य होशियार बनने लगा और इंसानियत प्रगति की ओर बढ़ने लगी, जीने के लिए मूलभूत साधनों का तेज़ी से इस्तेमाल होने लगा। १८६२ में एलेक्झेंडर पार्क ने प्लास्टिक का आविष्कार किया था, उसके बाद लोग उसके आदी हो गये, और उसका इस्तेमाल हर चीज़ में करने लगे। उस समय बहुत से लोगों को पता नहीं था कि प्लास्टिक कृत्रिम और गैर-बायोडिग्रेडेबल हैं।

जब पहले आधुनिक तकनीक से हेनरी फोर्ड ने गाड़ी बनाई तो उसको चलाने के लिए पेट्रोलियम का इस्तेमाल हुआ। इस पेट्रोलियम पदार्थ का भविष्य में बहुत बुरे तरीक़े से दुरुपयोग होगा, यह किसको मालूम था? अब तेल से सैकड़ों गाड़ियाँ हर क्षण चलती हैं और जो धुआँ उनसे निकलता है, वह प्रदूषण का बहुत बड़ा कारण है। इन्हीं ग्रीनहाउस गैसों से हमारे हिमनद पिघल रहे हैं, और प्रदूषण शहरों में रिकार्ड-तोड़ते हुए तापमान ला रहाहै, यह वैश्विक ऊष्मीकरण नहीं तो क्या है? वैश्विक ऊष्मीकरण को कम करने के लिए हमें जैव ईंधन का इस्तेमाल करना चाहिए, प्लास्टिक की जगह कपड़े से बने थैलों का इस्तेमाल करना चाहिए और इलेक्ट्रिक कारों को बढ़ावा देना चाहिए। समस्या कितनी बड़ी भी क्यों न हो, जब इंसान ठान लेगा तो ज़रूर सुलझ जाएगी। आइए अपने स्तर पर प्रदूषण घटाएँ, और आने वाली इंसानियत के लिए धरती को सज़ाएँ।

चैरी हिल हिन्दी पाठशाला — मध्यमा-३

नमस्ते मेरा नाम ऋतु जग्गी है। मैं चैरी हिल हिंदी पाठशाला में मध्यमा-३ की शिक्षिका एवं स्तर संचालिका हूँ। इस वर्ष मेरी कक्षा के छात्र एवं छात्राओं ने 'पर्यावरण को स्वच्छ रखने में हमारा योगदान' पर संयुक्त शब्दों का समावेश करके लेख लिखने का सराहनीय प्रयास किया है।

आदित्य खुराना

पर्यावरण को और अच्छा बनाने के लिए हमें सड़क पर कूड़ा कचरा नहीं फेंकना चाहिए। पेड़ों की कटाई नहीं करनी चाहिए। बिजली का कम प्रयोग करना चाहिए। कचरे को जलाकर उससे खाद बनानी चाहिए। फलों के वृक्ष लगाने चाहिए। हमें यातायात के लिए वाहनों का प्रयोग कम करना चाहिए जिससे ध्वनि प्रदूषण कम हो।

रोनक पाठक

पर्यावरण को स्वच्छ रखने के लिए पहला कदम आम लोगों को अपने परिवेश के बारे में शिक्षित करना है। ऐसा करने से वे अपने परिवेश के बारे में जागरूक हो सकते हैं और समझ सकते हैं कि उनके वातावरण में क्या हो रहा है। तब वे पर्यावरण के प्रति अपनी आदतों में अनुशासित होंगे। दूसरा कदम आम लोगों के लिए वास्तव में उन तरीकों के बारे में सोचने के लिए है जो वे पर्यावरण को स्वीकार करने के इस नए तरीके का पालन कर सकते हैं। पहले उदाहरण के लिए सामान्य लोग उपयोग के एकल-उपयोग वाले प्लास्टिक को कम करने और उपयोग किए जाने पर उन्हें कूड़ेदान में डालने का प्रयास कर सकते हैं। दूसरे उदाहरण के लिए आम लोग पर्यावरण को स्वच्छ रखने में मदद के लिए नियमों के लिए मतदान कर

सकते हैं और पर्यावरण की स्वच्छता के लिए हर कोई इन नियमों का पालन कर सकता है।
पर्यावरणीय स्वच्छता के लिए तीसरा कदम पर्यावरण को प्रदूषित करने वाली वस्तुओं की मात्रा को कम करने के लिए पुनरुपयोग और पुनर्चक्रण करना है। उदाहरण के लिए आम लोग सफाई ब्रश के रूप में एक पुराने दातुन का उपयोग कर सकते हैं। दूसरे उदाहरण के लिए आम लोग नए आइटम बनाने के लिए पुनर्चक्रण योग्य वस्तुओं को रीसायकल कर सकते हैं और ऐसा करने में वे पर्यावरण को साफ रखने में मदद कर सकते हैं। इसलिए इन तीन चरणों का पालन करते हुए आम लोग पर्यावरण को साफ रखने में मदद कर सकते हैं।

धृति खगाती

हम वातावरण स्वच्छ करके पृथ्वी को साफ रखने में मदद कर सकते हैं। यदि पर्यावरण साफ नहीं है तो यह जानवरों और पौधों को चोट पहुंचा सकता है। उदाहरण के लिए, हमारे कचरे को साफ न करके उसे रास्ते पर फेंकने से जानवर कचरा खा जाते हैं और बीमार हो जाते हैं या वे मर भी सकते हैं। यह अच्छा नहीं है। तो इसे रोकने के लिए हम अपने कचरे को रीसायकल और पुन: उपयोग कर सकते हैं। एक उदाहरण, आज कल हम प्लास्टिक का बहुत उपयोग करते हैं। हमें प्लास्टिक का उपयोग बंद करना होगा, जोकि सरल नहीं हैं। हमें प्लास्टिक से बने थैलों का उपयोग नहीं करना चाहिए हैं और हेम दूसरी सामग्री से बने थैलों का उपयोग करना चाहिए जिसे हम बार -बार उपयोग कर सकते हैं। इस तरह प्लास्टिक सड़कों और समुद्र में कम नज़र आयेगा।

शिरव गुप्ता

पर्यावरण की रक्षा में स्वच्छता का बहुत योगदान है। कचरा कम होना चाहिए। गीले कचरे से खाद बना सकते हैं। खाद फसल के लिए उपयोगी है। सूखा कचरा जैसे डिब्बा, गत्ता, और शीशे के सामान को पुनः उपयोग में लाना चाहिए।

स्पूर्ति रेड्डी

हर दिन बेकार चीजों का पुनः प्रयोग करने के लिए बहुत सारे तरीके हैं। नारंगी, नींबू, और चूने के छिलके का पेस्ट बनाकर खाना बनाने में उपयोग कर सकते हैं। अधिक पके केले से त्वचा का मॉइस्चराइज़र बना सकते है। उसके छिलके को जूते की पॉलिश के रूप में उपयोग कर सकते हैं। चीजों को फेंकने के बजाए उनको दूसरे उपयोग में लाना चाहिए। इस तरह हम पर्यावरण की रक्षा कर सकते हैं।

ईशान सेठी

स्वच्छता स्वास्थ्य के लिए बहुत आवश्यक है। उससे न केवल अच्छा विकास होता है, बल्कि मनुष्य निरोगी रहता है। हम सब अगर चाहें तो कचरा कम पैदा कर सकते हैं। हम कम्पोजिट बिन का उपयोग कर सकते हैं। इससे हम अपने जैविक कचरे से पौधों की खाद बना सकते हैं। अगर हम सब मिलकर ये सब करें तो पर्यावरण अच्छा और साफ रहेगा।

पूजा पटेल

शुद्ध पर्यावरण मनुष्य जीवन के लिये अनिवार्य है। पर्यावरण को स्वच्छ रखने में हम बहुत योगदान दे सकते हैं। हम कपड़े के थैले का उपयोग खरीददारी में करते हैं। अभी विद्युत गाड़ी का उपयोग हो रहा हैं। हम घर में गमले में पौधे और बाहर पेड़ उगाते हैं। इस तरह हम पर्यावरण की रक्षा में योगदान करते हैं।

प्रांशी गोयल

आज कल हमारे पर्यावरण की परिस्थिति बहुत भयानक स्तर पर आ गयी है। हम सब लोग इस बात को जानते हैं, फिर भी कोई कदम नहीं उठाता है। हम अपने वातावरण की रक्षा करने के लिये

अपनी रोज की जिंदगी में बहुत कुछ कर सकते हैं, जैसे प्लास्टिक की चीज़ें न खरीदना, डिब्बे और दूसरे पैकेजिंग सामग्री को रीसायकल करना, यहाँ तक कि पुरानी चीज़ों को फेंकने की बजाय गरीब लोगों को दान करना। दुकान जाते समय अपने थैले ले कर जा सकते हैं। यह छोटी और आसान बातें महत्वहीन लग सकती है परन्तु यह करने से विश्व को बहुत फायदा होगा। अगर हम रीसायकल करेंगे और कम कचरा इकट्ठा करेंगे तो प्रदूषण भी कम होगा। ये सब जीव-जंतुओं के हित में एक महत्वपूर्ण कदम है।

थीरु वेलेयुद्धम

पर्यावरण की रक्षा में स्वच्छता का बड़ा योगदान हैं। धूम्रपान ना करें और कचरा कूडेदान में फेकें। प्लास्टिक के थैले का उपंयोग कम करें। प्लास्टिक की वस्तुओं का पुनः उपयोग करें। हमेशा कचरे को अलग करें, जैसे रीसायकल और कूडा। हमें अधिक से अधिक पेड़ लगाना चाहिये।

सुजाता चौधरी

ऐसे कई तरीके हैं जिनसे हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि पृथ्वी को स्वच्छ, कचरे से मुक्त और स्वस्थ अवस्था में रखा जाए। सबसे पहले हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि हम सभी अपने आप को हर संभव तरीके से साफ करें। यदि हमारे पास कचरा है जिसे हमें फेंकने की आवश्यकता है तो हम कूड़े के बजाय उचित ग्रहण में फेंक सकते हैं। दूसरा, हम सभी कचरा फेंकने में मदद करने में संलग्न हो सकते हैं। यदि आपको जमीन पर कचरा दिखाई देता है तो आपको उसे उठा लेना चाहिए। अंत में, हम सभी मिलकर एक ऐसी मशीन बना सकते हैं जो भविष्य में हमारी मदद करने के लिए कचरा उठा सकती है। हमारे पर्यावरण को साफ रखने के लिए ये सभी अच्छे तरीके हैं।

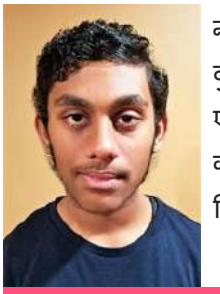

नमस्ते। मेरा नाम रिथ्विक अग्रवाल है। मैं वुडब्रिज हिन्दी पाठशाला की मध्यमा-१ कक्षा में एक स्वंयसेवक हूँ। यह मेरा स्वंयसेवक बनने का प्रथम वर्ष है और मुझे अपने विद्यार्थियों को हिन्दी सिखाना अच्छा लगता है।

हमारी महान प्रकृति

फूल खिल-खिलाते,
जिनको देखकर सब चौंक जाते।
प्रकृति की यह सुंदरता देखकर,
दिल धड़कने लगता।
पेड़ों पर चिड़िया घोंसला बनाती,
अपने बच्चों का ख्याल रखती।
एक-एक दाना चुग-चुगकर,
उड़कर जाती अपने घर को।
नदी के किनारे बैठकर तो देखो,
शीतल जल महसूस करो।
पैरों में ठंडा-ठंडा पानी,
जिसका ना हो कोई सानी।
और हमारे सबसे खास मित्र को मत भूलो,
हवा-हवा जब चलती,
हमारी परेशानियाँ उड़ा ले जाती।
वाह-वाह!
क्या अद्भुतपृथ्वी है हमारी!
परंतु मनुष्य ने इसका नाश कर-करके,
कर दिया धरती माँ को परेशान,
प्रकृति को बचाना हमारा काम,
चुकाना पड़ेगा अपनी भूलों का दाम।

पर्यावरण की रक्षा में वृक्षों का योगदान

सैंट लुइस के रित्विक जैन कक्षा सात के विद्यार्थी हैं। ये हिंदी पाठशाला में अंशु जैन जी की मध्यमा-१ कक्षा में पढ़ते हैं। बचपन से ही इनके पिताजी ने इन्हें हिंदी पढ़ना और लिखना सिखाया है। इन्हें विभिन्न स्पोर्ट्स और संगीत में रुचि है।

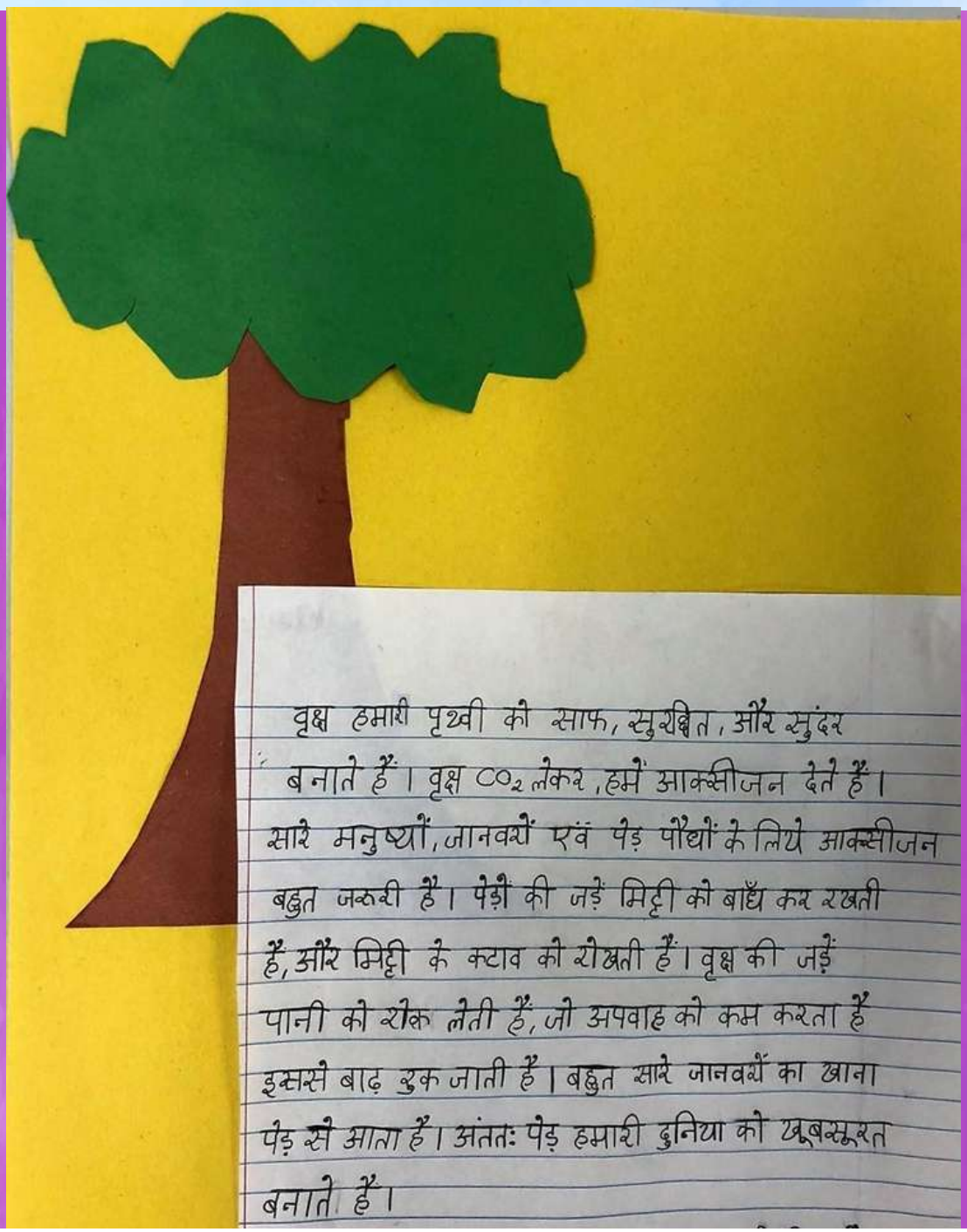

व्यंजन और स्वरों को बुन कर बांधते हैं हम शब्द भंडार,
अथाह सागर सा हिंदी का है हमारा अक्षय संसार।

एडिसन पाठशाला - मध्यमा-१, शिक्षिकाएँ: प्रिया गोडबोले और प्रीति शुक्ला

इन दो पंक्तियों से आप समझ गए होंगे कि हमारे मध्यमा-१ के विद्यार्थी इस साल क्या-क्या अध्ययन कर रहे हैं। इन बच्चों की शुक्रवार की उपस्थिति और मजे लेकर पढ़ने का जोश हम शिक्षिकाओं को भी पढ़ाने का एक नया उत्साह देता है। मध्यमा-१ तक आकर नई भाषा, नए सहपाठी, नए शिक्षक और नई पाठशाला से अब ये बहुत आनंदित हैं। इस साल बच्चों ने दिवाली कैसे मनाई यह उन्होंने अपने शब्दों में लिखा है और कलश का चित्र भी बनाया है। हमने पर्यावरण के विषय पर भी बच्चों से बातें कीं कि किस तरह से हमें नैसर्गिक संपत्ति की रक्षा करनी चाहिए। इन बच्चों ने बहुत ही सुंदर तरीके से उस जानकारी को अपनी कल्पना से रचा है।

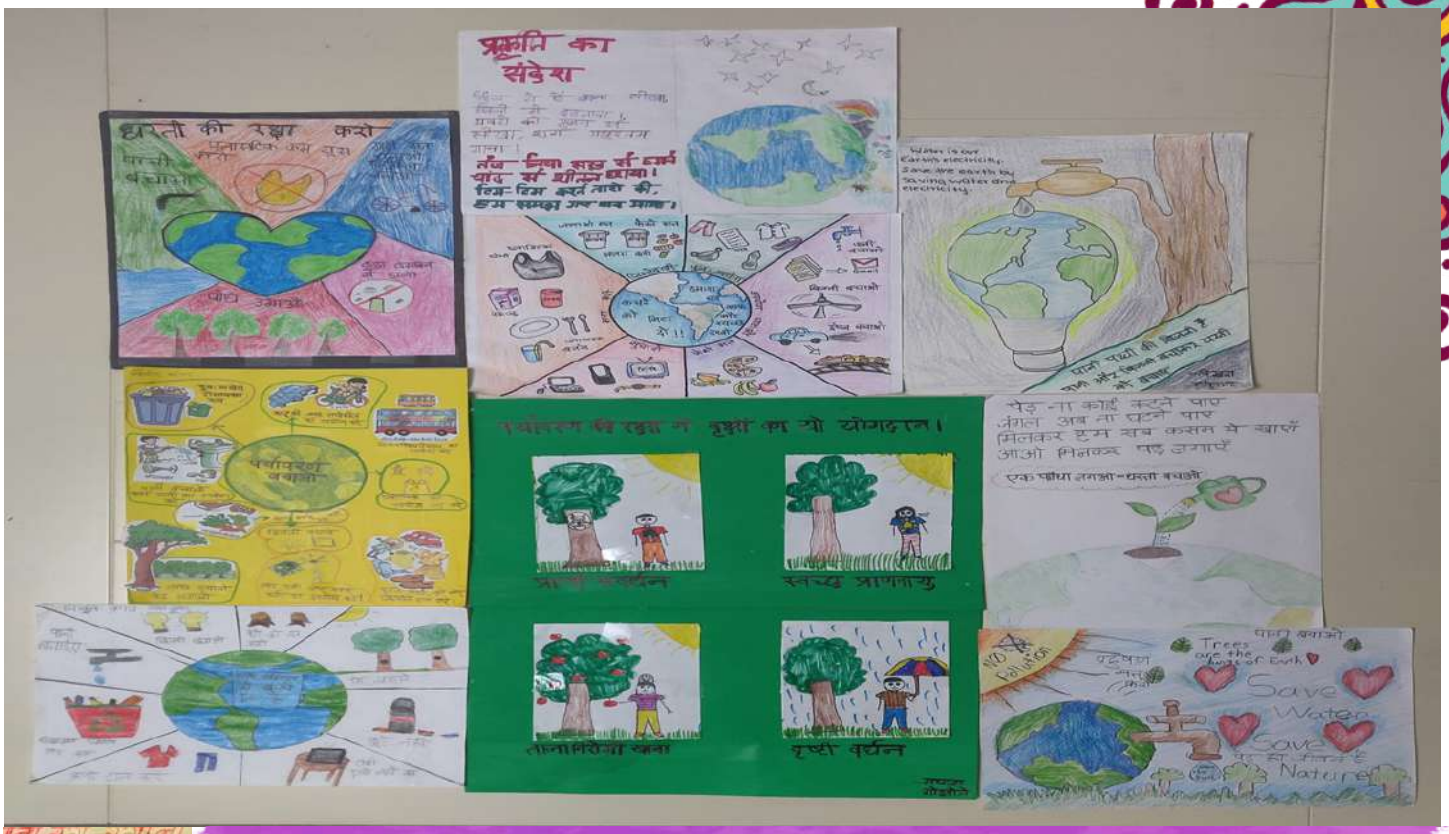

पर्यावरण की रक्षा में वृक्षों का योगदान

मेरा नाम अनायशा झा है। मैं जर्सी सिटी हिंदी स्कूल में मध्यमा-१ की छात्रा हूँ। मुझे हिंदी सीखना बहुत अच्छा लगता है। मुझे भारत का खाना, पोशाकें, संगीत, और नृत्य बहुत पसंद हैं। मुझे अपने भारतीय मूल पर गर्व है।

पर्यावरण की रक्षा के लिए वृक्ष बहुत महत्वपूर्ण हैं। वृक्ष हमें साँस लेने के लिए ऑक्सीजन देते हैं तथा प्रदूषण कम करते हैं। यदि वृक्ष न हों तो पर्यावरण का संतुलन बिगड़ जायेगा। वृक्ष की जड़ें मिट्टी को बाँध कर रखती हैं जिससे भूमि उपजाऊ बनी रहती है व भूमि पानी को सोख लेती है। यही पानी मनुष्य को जीवन देता है। वृक्ष हमें छाया देते हैं और धरती को अत्यधिक गर्मी से बचाते हैं। वृक्ष हमें हवा और पानी के साथ-साथ खाने-पीने की सामग्री, ईंधन, वस्त्र और जानवरों को रहने की जगह भी देते हैं। अतः इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि वृक्ष पर्यावरण का संतुलन बनाये रखने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। यदि वृक्ष न हों तो धरती पर पर्यावरण जीवन के लिए अनुकूल नहीं रहेगा। वृक्ष हैं तो संसार है।

वायु प्रदूषण

साउथ ब्रंस्विक पाठशाला — उच्च स्तर-१

मेरा नाम श्रीया वेलूरी है। मैं सातवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। वायु प्रदूषण चर्चा का एक बहुत महत्वपूर्ण मामला है। वायु प्रदूषण हवा में ठोस कणों और गैसों का मिश्रण है। इसमें धूल, कारखानों के रसायन, पराग और कार उत्सर्जन शामिल हैं। ओजोन जैसी गैसें भी हमारी वायु को दूषित करती हैं। जब यह वायु प्रदूषण बनाता है तो यह धूमिल हो जाता है। कुछ वायु प्रदूषक जहरीले और घातक हो सकते हैं। वायु प्रदूषण विभिन्न स्रोतों से आता है। चार मुख्य प्रकार हैं, मोबाइल स्रोत, स्थिर स्रोत, क्षेत्र स्रोत और प्राकृतिक स्रोत। मोबाइल स्रोत कार, बस, प्लेन, ट्रक और ट्रेन जैसे वाहन हैं। स्थिर स्रोत बिजली संयंत्र, औद्योगिक सुविधाएं और कारखाने जैसी इमारतें हैं। क्षेत्र के स्रोतों में खेती के क्षेत्र, शहर और लकड़ी जलाने वाली चिमनियाँ शामिल हैं। अंत में प्राकृतिक स्रोत अपने दम पर होते हैं, न कि मानव निर्मित। इसमें वाइल्डफायर, ज्वालामुखी और हवा में उड़ने वाली धूल शामिल हैं। वायु प्रदूषण बहुत खतरनाक हो सकता है। लोगों को सिरदर्द हो सकता है, मितली महसूस हो सकती है, और एलर्जी हो सकती है। शॉर्ट-टर्म वायु प्रदूषण अस्थमा जैसी चिकित्सा स्थितियों में व्यवधान पैदा कर सकता है। दीर्घकालिक प्रभाव श्वसन रोग, फेफड़े का कैंसर, हृदय रोग और यहां तक कि मस्तिष्क, तंत्रिकाओं, यकृत या गुर्दे को नुकसान पहुंचा सकता है। वायु प्रदूषण की समस्या को हल करने का सबसे अच्छा तरीका जीवाश्म ईंधन से दूर जाना और उन्हें अन्य ऊर्जा स्रोतों के साथ बदलना है, उदाहरण के लिए, सौर, पवन और भू-तापीय। हमें अपने ऊर्जा स्रोतों का संरक्षण करना चाहिए और अधिक कुशल उपकरणों का उपयोग करना चाहिए। इससे प्रदूषण कम होगा।

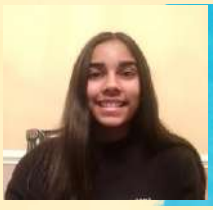

मेरा नाम ईशा वेंकटनारायण है। मैं नौंवी कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं मिडिलसेक्स काउंटी स्टेम स्कूल जाती हूँ। मुझे फुटबॉल खेलना और वाद्य यंत्र बजाना पसंद है। अपने खाली समय में मुझे गाना और नृत्य करना पसंद है। मेरा पसंदीदा शौक रोबोटिक्स है।

प्रकृति की पूजा करने के लिए भारत में कई त्योहार मनाए जाते हैं। हालाँकि, भारतीय इन छुट्टियों के उत्सव के माध्यम से वायु और पृथ्वी को प्रदूषित करते हैं। भारत के शहर, प्रदूषण और ज़हरीली हवा से ग्रस्त हैं। भारत की बढ़ती आबादी और पर्यावरण के लिए यह परिस्थिति खतरनाक होती जा रही है। आतिशबाजी का उपयोग करना हवा के लिए बहुत ही हानिकारक है और दिवाली की छुट्टियों के दौरान प्रदूषण का कारण बनता है। कई कानून बनाए जा चुके हैं। कई जगहों पर पटाखे और पटाखे बेचने और जलाए जाने की अनुमति नहीं है। पटाखों और पटाखों के उपयोग को रोकने से भारत के पर्यावरण को कम नुकसान होगा। इसके अलावा भारतीयों ने पर्यावरण के अनुकूल पटाखे विकसित किए हैं जो हवा और मिट्टी को प्रदूषित नहीं करेंगे। ये समाधान भारत में एक स्वच्छ, सुरक्षित वातावरण के लिए पहला कदम हैं।

नमस्ते मेरा नाम आयुष अनुमोलु है। मैं साउथ ब्रंस्विक क्रॉसरोड्स मिडिल स्कूल की सातवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। तैरना, चित्रकारी, और साइकिल चलाना मुझे पसंद है।

वायु प्रदूषण के बारे में मेरे कुछ विचार नीचे लिखे लिखें है। वायु प्रदूषण तब होता है जब गैस, धूल, धुआँ, गंध हवा में मिल जाती है और इसे अशुद्ध बना देती है। वायु प्रदूषण मनुष्यों, जानवरों और पौधों के लिए हानिकारक है। पृथ्वी एक वातावरण से घिरा हुआ है, जो गैसों की एक परत है। जब वायु प्रदूषण होता है तो यह पृथ्वी के वायुमंडल को बरबाद करता है और लोगों के लिए परेशानी का कारण बनता है। वायु प्रदूषण से ब्रोंकाइटिस जैसी बीमारियां हो सकती हैं और अस्थमा से पीड़ित लोगों को तकलीफ हो सकती है। यहाँ तक कि यह बच्चों के विकास में भी रूकावट बन सकता है। वायु प्रदूषण के कुछ कारण:

- जीवाश्म ईंधन
- जहरीली गैसों का उत्पादन करने वाले कारखाने
- वाहनों का गैस उत्सर्जन

आप अधिक पेड़ लगाकर और वाहनों के उपयोग को कम करके वायु प्रदूषण को काम करने में मदद कर सकते हैं।

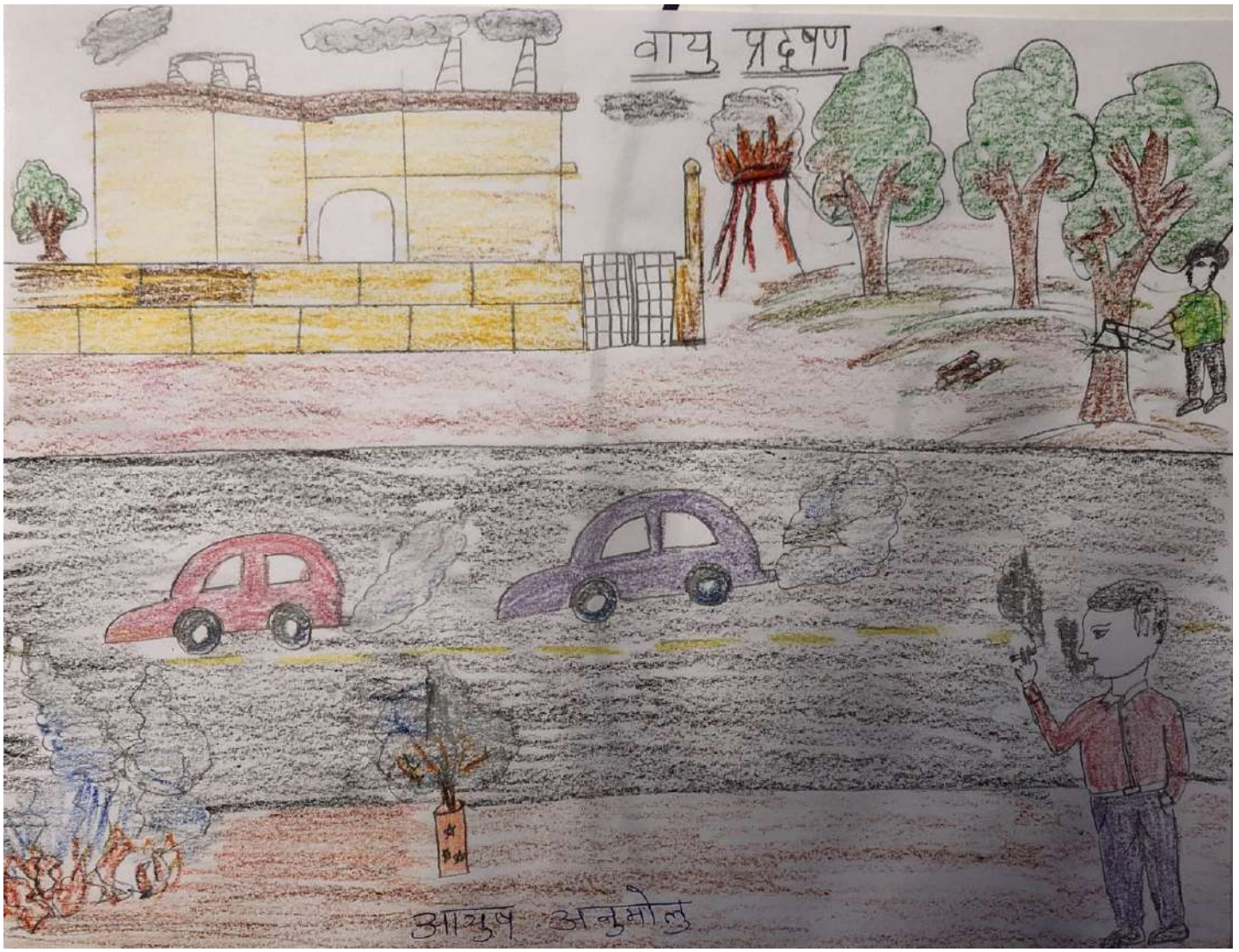

मेरा नाम साईरक्षा तिरूनावुकरसू हैं। मैं तेरह साल की हूँ। मैं क्रोस्स्रोअड्स नार्थ मिडिल स्कूल में आठवें कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे चित्रकारी करना बहुत पसंद है। मैं एक दिन लेखिका बनना चाहती हूँ।

दशकों से वायु प्रदूषण हमें प्रभावित करने वाली समस्या है। यह समस्या मनुष्यों के कारण होती है और कुछ छोटे कदमों के साथ हम इसे दुनिया में कम करने के लिए काम कर सकते हैं, जिसके परिणामस्वरूप एक साफ, सुरक्षित धरती होगी। वायु प्रदूषण ज्यादातर वाहनों से गैस के धुएँ और जीवाश्म ईंधन के जलने के कारण होता है। यहाँ कुछ तरीके दिए गए हैं जिनसे हम वायु प्रदूषण की अत्यधिक मात्रा को रोक सकते हैं:

- गैस बचाने के लिए यात्रा पर जाते समय सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करें।
- अधिक ऑक्सीजन प्रदान करने के लिए अपने पिछवाड़े में एक बाग़ लगाएं।
- अपने घर को धूल से मुक्त रखने के लिए अपनी माँ की मदद करें ताकि आप साफ हवा में साँस लें।
- एयर कंडिशनिंग का उपयोग करने के बजाय ताजी हवा के लिए अपनी खिड़कियाँ अधिक समय खुली रखें

वायु प्रदूषण एक विश्वव्यापी समस्या है जो रातों रात दूर नहीं होगी। हालाँकि, अपनी जीवनशैली में छोटे बदलाव करके आप दुनिया को बचाने में मदद कर सकते हैं।

नमस्ते, मेरा नाम कृषा जॉन है और मैं सातवीं कक्षा में हूँ। मैं तेरह साल की हूँ और आज मैं आपको वायु प्रदूषण के बारे में बताने जा रही हूँ। वायु प्रदूषण हमारे पर्यावरण के लिए बहुत खतरनाक है। कई अन्य समस्याओं की तरह वायु प्रदूषण उनमें से एक है। इस प्रकार का प्रदूषण किसी और चीज की तरह खतरनाक है लेकिन यह अधिक हानिकारक भी है। यह उन लोगों के लिए सबसे खतरनाक है जिन्हें सांस लेने में समस्या है। यह कई चीजों के कारण होता है। जंगल की आग, ज्वालामुखी विस्फोट, और हवा कटाव जैसी कई आपदायें इस आपदा के लिए जिम्मेदार हैं। लोग भी वायु प्रदूषण का कारण हैं। लोगों द्वारा निर्मित कारखाने वातावरण में भारी मात्रा में धुवां छोड़ते हैं। यह हमारे लिए सांस लेने के लिए और हमारे साथ इस ग्रह पर रहने वाले जानवरों के लिए बहुत खतरनाक है। इसके अलावा लोग अपनी जरूरतों के लिये पेड़ काटते हैं। पेड़ों का काटना वातावरण की समस्या को और गंभीर बना देता है। पेड़ हमें सांस लेने के लिए ऑक्सीजन प्रदान करते हैं।

वायु प्रदूषण किसी भी व्यक्ति एवं बच्चे की मानसिक अवस्था एवं व्यवहार में भी परिवर्तन ला सकता है। न्यूयॉर्क की तरह हवा में मिश्रित खतरनाक रसायनों के कारण एक बच्चे का सरल और मीठा व्यक्तित्व एक ऐसे व्यक्तित्व में बदल सकता है जो हमेशा गुस्से में रहता है। यही कारण है कि हमें वायु प्रदूषण के बारे में जागरूक होना होगा और इसे दूर करने का प्रयास करना होगा।

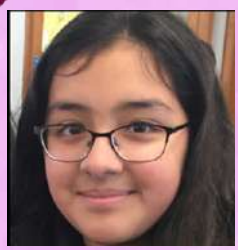

हम सुचेता शर्मा और तिशा सुभेदार, प्रदूषण की समस्या के बारे में आपका ध्यान चाहते हैं। हम सातवीं कक्षा में पढ़ते हैं और हिन्दी पाठशाला में हम उच्च स्तर-१ कक्षा में हैं। हमको तैरना, बाहर खेलना, खाना बनाना और टेनिस खेलना पसंद है।

हमें लगता है कि भारत की सबसे बड़ी समस्या प्रदूषण है। भारत के सुन्दर समुद्र तट इस समस्या का शिकार हैं। हर साल भारत के समुद्र तट और गंदे होते जा रहे हैं। प्रदूषण के कारण कई जानवरों को जान का खतरा रहता है। भारत में कुछ संस्थाएँ इसको साफ़ रखने का प्रयास कर रही हैं। इनकी वजह से कई समुद्र तट साफ़ हुए हैं। हम चाहते हैं कि इस परेशानी को सभी लोग समझें और भारत के समुद्र तट को साफ़ रखने में मदद करें। अमेरिका में रहने वाले भारत के लोग भी अगर इन संस्था की मदद करें तो फिर से समुद्र तट साफ़ हो सकते हैं। आशा है आप इस बारे में सोचेंगे और कोई कदम उठाएंगे।

प्रदूषण की समस्या एक दीमक की तरह है,
जो पर्यावरण को धीरे-धीरे खोखला बनाती जा रही है।

मेरा नाम कृति श्रीवास्तव है। मैं सातवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे चित्र बनाना पसंद है।

वायु प्रदूषण आज के समय में सेहत के लिये एक बहुत बड़ी समस्या बनता जा रहा है, जिसके बहुत से कारण हैं। वायु प्रदूषण तब होता है जब हानिकारक गैसें पृथ्वी के वातावरण में भर जाती हैं। धुएँ के बादल बसों और कारों से निकलते हुआ दिखाई दे सकते हैं। इस समस्या के कारण लोगों को साँस लेने में मुश्किल होती है और आँखों में जलन भी होती है। अगर हम कुछ सामान्य से उपाय अपनायें तो वायु प्रदूषण की समस्या को कुछ हद तक कम कर सकते हैं। जैसे कि अधिक से अधिक सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करें। थोड़ी दूर की यात्रा हो तो साइकिल का उपयोग किया जा सकता है। अलग-अलग वाहनों में जाने की जगह कई लोग एक साथ एक ही वाहन में अपने कार्यालय जा सकते हैं। अपने वाहन का समय पर निरीक्षण करवायें। हमें पेड़ पौधे भी लगाने चाहिये और इनकी देखभाल भी अच्छी तरह से करनी चाहिये क्योंकि ये प्रदूषण को कम करने में बहुत मदद करते हैं। कटी हुई फसल को जलाने से भी बहुत वायु प्रदूषण होता है। अत: इसको जलाने की जगह इसे खाद की तरह उपयोग में लाया जा सकता है या इसे जानवरों के खाने के लिए भी उपयोग में लाया जा सकता है। इसी तरह हम वायु प्रदूषण को कम कर सकते हैं। ?

ट्रंबल हिंदी पाठशाला — उच्च स्तर १

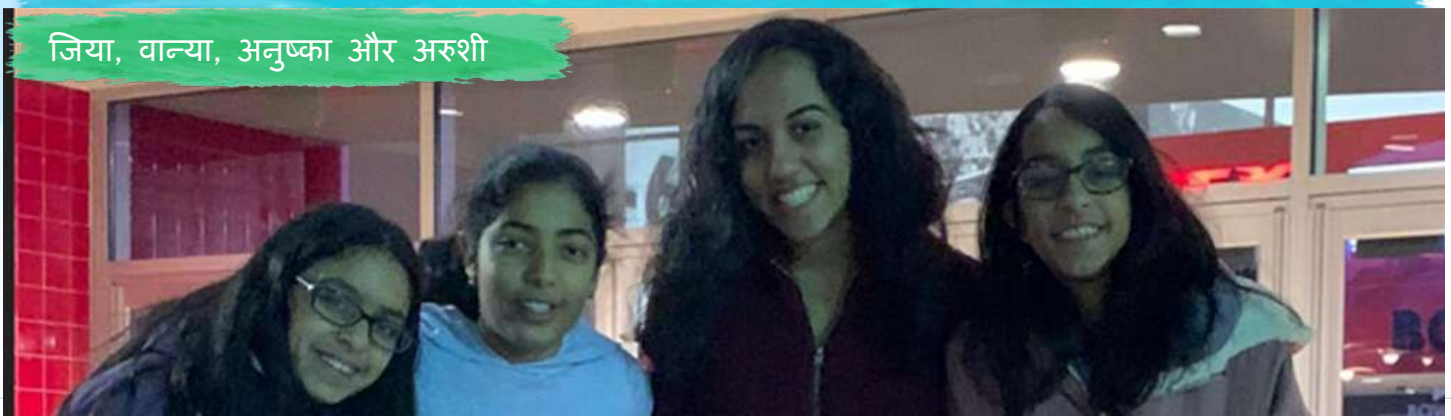

क्या आपने कभी सोचा है कि वायु प्रदूषण के बिना हमारा जीवन कैसे बदल जाएगा? वायु प्रदूषण वाहनों, कारखानों, पराग और धूल से निकलने वाले निलंबित ठोस कणों और गैसों का मिश्रण है। हम दुनिया भर में वायु प्रदूषण के हानिकारक प्रभावों के कई उदाहरण देखते हैं। हमारा देश भारत सबसे अधिक प्रभावित क्षेत्रों में से एक है। भारत में वायु प्रदूषण से हर साल लगभग पच्चीस लाख लोगों की मौत होने का अनुमान है और यह देश का पाँचवाँ सबसे बड़ा हत्यारा है। इसके कारण फेफड़ों को अपरिवर्तनीय क्षति होती है तथा कैंसर और असामयिक मृत्यु के होने का खतरा बढ़ सकता है। बढ़ते वायु प्रदूषण से निपटने के लिए हम अपने दैनिक जीवन में कई छोटे–छोटे बदलाव कर सकते हैं। उदाहरण के तौर पर, पेट्रोलियम उत्सर्जन को कम करने के लिए हम सार्वजनिक परिवहन का उपयोग कर सकते हैं। छोटी दूरी के लिए हम पैदल या साइकिल से भी जा सकते हैं। इसके अलावा, एक समुदाय के रूप में हम सामुदायिक वनस्पति उद्यान बनाने और सौर पैनल स्थापित करने का विकल्प चुन सकते हैं। इससे जीवाश्म ईंधन का उपयोग कम हो सकता है।

प्रिया मेनन

जब तुम मानो यह भारत अपना है....

नमस्ते, मेरा नाम प्रिया मेनन है और मैं पिछले कई वर्षों से कनिष्ठा-१ स्तर की अध्यापिका हूँ। मेरे पति अनिल जी भी हिंदी यू.एस.ए. से जुड़े हुए हैं। गीता राम जी मेरी कक्षा की सह अध्यापिका हैं तथा छात्र स्वयंसेवक रितिका और वरुणवी मेरी कक्षा के १३ विद्यार्थियों को पढ़ाने में मेरी मदद कर रहे हैं। आशा करती हूँ कि आप लोग मेरी इस कविता का आनंद लेंगे।

आज सबका यही नारा है
प्रदूषण को दूर भगाना है
कैसे भगाना है ... किसीने नहीं जाना है

सबसे बड़ा मसला है प्लास्टिक का
दुनिया से चिपका है जैसे पुराने आशिक सा
हम बाज़ार जाते समय थैला ले जाना भूल जाते हैं
मगर सरकार को ज़िम्मेदार ठहराने से नहीं कतराते हैं
पहले हरे मसाले में `एक्स्ट्रा धनिया' माँगते थे लोग
अब शोपिंग में `एक्स्ट्रा थैला' माँगते हैं लोग
आखिर इतनी प्लास्टिक को कहाँ दफ़नायें
बेचारी चारा समझ कर खाये इसे गाय

गंदगी चारों तरफ़ है, यह दूसरा दुखड़ा है
सब मानते हैं नीचे पड़ा कचरा किसी और का टुकड़ा है
अगर कोई साफ़ करे तो यह उसकी पब्लिसिटी स्टंट है
बस अपनी बारी आयी तो बन जाते सब महा चंट हैं

`स्वच्छ भारत', यह हर एक का सपना है
मगर यह संभव तब.... जब तुम मानो यह भारत अपना है
मिलकर सब यह कर लो पक्का इरादा
रखेंगे स्वच्छ यह देश हमारा
जय हिन्द

पर्यावरण को हम
सब मिलकर रखेंगे
स्वच्छ, और प्रदूषण
का करेंगे अंत

रचना दुबे — शिक्षिका प्रीति शेल्के — शिक्षिका नीलेश जोशी — शिक्षक

भारतीय त्योहारों में पर्यावरण संरक्षण की सोच

मेरा नाम यश चौधरी है। मैं सातवीं कक्षा में पढ़ता हूँ और एडिसन हिंदी पाठशाला में रचना जी और प्रीति जी की कक्षा उच्चतर-२ का छात्र हूँ।

वृक्षों की पूजा ही उनका संरक्षण है।वटपूर्णिमा - इस त्योहार में वट के पेड़ की पूजा की जाती है।

आंवला नवमी - इस दिन आंवले के पेड़ की पूजा की जाती है। इसी तरह से विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधों, बरगद, बेर, बेल, पीपल, गन्ना, केला और अन्य पेड़ों की पूजा द्वारा हमारे विभिन्न त्योहार हमारे वातावरण के संरक्षण में सहायक होते हैं। लक्ष्मी जी को गुलाब के फूल से पूजा करके प्रसन्न करते हैं। गणेश चतुर्थी में गणेश जी की जसवंत के फूलों से पूजा करते हैं। महाशिवरात्रि को शंकर जी की बेल पत्र और धतूरे के फूलों से पूजा करते हैं। सरस्वती पूजन के दिन सरस्वती जी की पीले फूलों से पूजा करते हैं। इस तरह से त्योहारों में पेड़ पौधों की रक्षा होती है। पोला त्योहार में बैलों की पूजा की जाती हैं। गाय को देवी मानते हैं और उनकी पूजा की जाती है। श्राद्ध के दिनों में कुत्ते और कौए की पूजा की जाती है। मछलियों और चींटियों को खिलाना भी इसमें शामिल है। भगवान के वाहन चूहे, शेर,हाथी, नंदी, गरूड़ और मोर की पूजा की जाती है। इस तरह से जानवरों और पक्षियों की रक्षा होती है और पर्यावरण का सन्तुलन भी बना रहता है। इस तरह हमारे त्योहारों में प्रकृति के हर रूप की पूजा की जाती है और पर्यावरण का संवर्धन होता है।

मेरा नाम सांचो इस्वर है। मैं ८वीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे वायलिन बजाना पसंद है। पढ़ना, नृत्य करना, संगीत सुनना और नई जगहों की यात्रा करना भी मेरी कुछ पसंदीदा चीजें हैं। मेरा विचार है कि हिंदी भाषा सीखना भी बहुत महत्वपूर्ण है।

भारतीय संस्कृति ने प्रकृति के इर्द-गिर्द खुद का निर्माण किया है।

बहुत सारे त्योहार और समारोह प्रकृति के इर्द-गिर्द विकसित हुए हैं और हम उसकी पूजा कर रहे हैं। भारतीय होने के नाते हम कई त्योहारों में प्रकृति का सम्मान करते हैं। कुछ उदाहरणों में पेड़, आग, सूरज, बारिश और गाय, बंदर और हाथी जैसे जानवर शामिल हैं। प्राचीन शास्त्रों और वैज्ञानिक ज्ञान पर आधारित हिंदू धर्म ने वेद, रामायण, महाभारत आदि में प्रकृति को विशेष स्थान दिया है। इन धार्मिक ग्रंथों में प्रकृति, पौधों और जानवरों को विशेष भूमिकाओं और महत्वपूर्ण पात्रों के साथ दर्शाया गया है।

गाय भारतीय संस्कृति में पूजनीय है और गाय को मारना और उसका मांस खाना अपराध माना जाता है। इसके अतिरिक्त कई घरों में शुभ उद्देश्यों के लिए तुलसी का पौधा लगाया जाता है। बरगद का पेड़ भी कुछ ऐसा ही है। बरगद के पेड़ को पवित्र वृक्ष माना जाता है और प्राचीन हिंदू शास्त्रों में इसका विशेष

उल्लेख दिया गया है। जाहिर है कि वट वृक्ष पूजा का धार्मिक महत्व बरगद के पेड़ के जीवन समृद्ध गुणों और भव्यता से उत्पन्न होता है। इन महत्वपूर्ण वृक्षों के संरक्षण को सुनिश्चित करने के लिए यह पर्व एक अनूठा तरीका है और लोगों को प्रकृति संरक्षण भी सिखाता है। इसी तरह भारत में तुलसी के पौधे की पूजा की जाती है। तुलसी का पौधा भगवान विष्णु के लिए पवित्र है। इसकी पत्तियों का इस्तेमाल पूरे भारत में पूजा के लिए किया जाता है। कई भारतीय परिवार भी अपने आंगन में या घर में किसी खुली जगह में तुलसी का पौधा लगाते हैं। तुलसी के पौधे में सब कुछ पत्तियां, फूल, डंडियाँ और बीजों को और यहाँ तक कि इसकी मिट्टी को भी पवित्र माना जाता है। कहते हैं कि इससे लोग भगवान के करीब आते हैं। भारत में छठ पूजा एक महत्वपूर्ण त्योहार है जो कई फलों की प्रजातियों की रक्षा करने में मदद करता है, विशेष रूप से चकोतरा जो महिलाओं द्वारा सूर्य देवता को दिए गए प्रसाद का हिस्सा है। दरअसल, त्योहार में इस्तेमाल होने वाले कई फल, जड़ी-बूटी और मसाले जैसे अमरूद, केला, गन्ना, हल्दी और अदरक सभी का प्रयोग किया जाता है। हरेक पूजा में नारियल का विशेष महत्व है।

भारतीय त्योहारों में बाघ, गाय, हाथी और बंदर जैसे कई जानवरों की पूजा भी करते हैं। बाघ को बहादुरी, शक्ति, सौंदर्य और भयंकरता का जानवर माना जाता है। बाघ देवी दुर्गा का वाहन है। अतः दुर्गा पूजा में इसकी पूजा की जाती है। गाय की पूजा और उसका सम्मान भी किया जाता है। वे भगवान श्रीकृष्ण की पसंदीदा पशु हैं और शक्ति और भाग्य की प्रतीक मानी जाती हैं। भारत के कुछ राज्यों में गाय के वध पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। किसी गाय को मारना या नुकसान पहुंचाना या उसका मांस खाना पाप माना जाता है। कुछ राज्यों में गाय को नुकसान पहुंचाने के लिए लोगों को जेल में भी डाला जा सकता है। गोवर्धन पूजा में इनसे प्राप्त होने वाली सभी वस्तुओं, दूध दही यहाँ तक कि गोबर को भी शुद्ध माना जाता है। हाथी शक्ति और बुद्धिमत्ता का प्रतीक हैं। उन्हें भगवान गणेश का जीवित प्रतिनिधि माना जाता है। माना जाता है कि वे लोगों के जीवन में अच्छी किस्मत, सुरक्षा, ज्ञान और प्रजनन क्षमता लाते हैं। भारत के कई स्थानों में बंदरों का भी सम्मान किया जाता है। हाथी के समान बंदरों को हनुमान का जीवित प्रतिनिधि माना जाता है। बंदर भी ताकत का प्रतीक है। इस तरह से भारतीय त्योहारों में प्रकृति का सम्मान किया जाता है। भारतीय संस्कृति का प्रकृति से गहरा संबंध है और इसी कारण भारतीय परंपरा में हमारे त्यौहार पर्यावरण संरक्षण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

मेरा नाम नेहा बोम्मिरेड्डी है। मैं तेरह साल की हूँऔर आठवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे गाना और नाचना पसन्द है।

होली एक बहुत प्रसिद्ध त्योहार है। होली बसंत ऋतु में मनाया जाने वाला भारतीय त्यौहार है। यह अत्यन्त प्राचीन पर्वहै। रंगों के इस उत्सव में आजकल सभी एक दूसरे को रंग, सुर गुलाल लगाकर दिन भर होली मनाते हैं। पुराने जमाने मेंये रंग रासायनिक नहीं थे अपितु विभिन्न फूलों, हल्दी और जड़ीबूटियों से मनाये जाते थे, जो फागुन मास में फैली बीमारियों से रक्षा करते थे। आजकल होली के रंग विषैलेपदार्थों से बन रहे हैं, जिससे मनुष्य की त्वचा, आँख और फेफड़ों को हानि पहुँचती है। ये विषैले पदार्थ वायु, मिट्टी, और पानी को प्रदूषित करते हैं। इसलिए हमें पर्यावरण को ध्यान से रखते हुए होली का त्यौहार प्राकृतिक रंगों से खेलना चाहिए। इससे मनुष्य और पर्यावरण कीसुरक्षा होगी।

देव दोशी

भारतीयत्योहार हमारे देश की परम्परागत प्रथा हैं।भारत में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। एक मजेदार बात यह है कि विविधता में एकता देखने को मिलती है। चाहे वह होली हो, दिवाली हो, मकर संक्रान्ति हो, शिवरात्रि, जन्माष्ठमि और करवा चौथका व्रत ही क्यों न हो, हर एक त्योहार के पीछे वैज्ञानिक तथ्य छुपा हुआ है। इन त्योहारों में आनंद के साथ आरोग्य और पर्यावरण की रक्षा होती है।

अभी होली हीलीजिए! जगह-जगह पर अग्नि प्रदीप्त होती है, जिसमें सामग्री का प्रयोग किया जाता हैजो पर्यावरण की शुद्धि के साथ वायरस को भगाता है। होली की प्रदक्षिणा से मौसमीबीमारियों से रक्षा होती है। होली में पुराने समय में व्यर्थ पेड़ की लकड़ियों को जला कर आसपास की जगह को साफ किया जाता था और उसकी राख को खेतों में डाल कर कीड़े मकड़ों से फसल की रक्षा होती थी साथ ही मिट्टी की उर्वरा शक्ति भी बढ़ जाती थी। होली में फागुन की फसल को भून कर प्रसाद केरूप ग्रहण करके प्रकृति को धन्यवाद दिया जाता है।

मकर संक्रान्ति की बात करें तो तिल और गुड़ के लड्डू के साथ सूर्य की पूजासे ठंड में हड्डियों को बहुत कैल्सीयम मिलता है। इसके साथ सूरज की धूप से विटामिन डी भरपूर मात्रा में मिलता है। और इस तरह मकर संक्रान्ति का त्योहार प्रकृति प्रदत्त सूर्य देव द्वारा प्रदत्त उष्मा का आदर करता है।

तुलसी और पीपल के पेड़ की पूजा का महत्व भी देखिये। ये पेड़ चौबीस घंटे ऑक्सिजन देते हैं। पेड़ों की पूजा विभिन्न त्योहारों और दिनों से सम्बंधित रही है! केले की पूजा बृहस्पति वार को, पीपल की पूजाशनिवार को, वट वृक्ष की पूजा वट सावित्री व्रत में, बेल पत्र व बेर से शिवरात्रि की पूजा और न जाने कितने ही दूसरे वृक्षों का त्योहारों में अपना स्थान रहा है।

शिवरात्रि में शिवलिंग पर पानी चढ़ानेसे धरती में पानी का संतुलन बना रहता है।

हमारे पूर्वजों ने पर्यावरण और शरीर दोनों की रक्षा के लिये त्योहारों और पूजा विधि की रचना की थी। एक और उदाहरण है कि वृक्ष के पत्ते से बने हुई थाली (प्लेट) जो आजबायोडिग्रेडेबल के नाम से जानी जाती है में खाना खाना पर्यावरण के हिसाब से अच्छा माना जाता है। हमारे सभी त्योहारों में इस थाली का प्रयोग होता था।

हमारेत्यौहार, पर्यावरण और हमारी मानव जाति के ऊपर बहुत उपकार करते हैं, परंतु यह हमारा कर्तव्य है कि हम त्योहारों का उनके प्राकृतिक स्वरूप में आनंद लें।केमिकल और धुएँ से दूर रहें और हमारी संस्कृति की गरिमा बढ़ायें।

दक्ष राजपूत

हमारेप्रमुख त्योहार जैसे दिवाली, दशहरा पर्यावरण को बहुत प्रदूषित करते हैं। हमें इन त्योहारों में पटाखों का प्रयोग न करते हुए इन्हें अलग तरीके से मनाना चाहिए। गणपति विसर्जन के त्योहार में भी लोग हज़ारों मूर्तियों को सागर में बहा देते हैं, जिसके कारण जल प्रदूषित होता है। पानी प्रदूषित होने के कारण पानी में रहनेवाले जीव जंतुओं का जीवन खतरे में पड़ता है। हमें पर्यावरण की रक्षा के लिए यह सब बंद करना चाहिए और मिट्टी की साधारण मूर्तियों का प्रयोग करना चाहिए, जो बिना केमिकल रंगो से बनी हों।

इस तरह हम अपने त्योहारों का आनंद पर्यावरण को बिना हानि पहुँचाये हुए ले सकते हैं।

मेरा नाम प्रथम देसाई है मैं चौदह साल का हूँ। मैं नौवीं कक्षा में पढ़ता हूं। मुझे फ़ुटबॉल पसंद है। चुटकुले बनाने और अपने दोस्तों के साथ घूमना पसंद है। मुझे मिठाई खाना बहुत पसंद है।

भारत में बहुत सारे त्योहार मनाए जाते हैं और भारतीय त्योहार के बहुत सारे व्यक्तिगत और पर्यावरण सम्बन्धित लाभ हैं। दीवाली के वक्त घर की सफाई होती है तो स्वच्छताबढ़ती है। दीवाली के वक्त बहुत सारे मच्छर दीपक की लौ से मर जाते है, परंतु आजकल पटाखों ने हमारे इस त्योहार को विषैला बना दिया है। गणपति विसर्जन के दौरान गणपति की छोटी सी मूर्तियाँ झील या नदी में डुबोते थे जो मिट्टी से बनी होती थी। जिसका अर्थ था कि हर एक वस्तु नश्वर है। हमें इस प्रकृति की सभी चीजें, चाहें वह जल हो जो जीवित रहने के लिए आवश्यक है या धरा यानी मिट्टी जो हमें अन्न देती है, का सम्मान करना चाहिए। अब गणेश की मूर्ति खराब रसायनों से बनती है जो पानी को अशुद्ध बनातेहैं। अंत में मैं यही कहूँगा कि भारतीय त्योहार कई तरीके से पर्यावरण की सुरक्षा करते थे। परन्तु अपने पर्यावरण को प्रदूषित करने में हम सभी जिम्मेदार हैं, हमारे त्योहार नहीं।

मेरा नामअवनिजेटलीहै। मैं वुड्रो विल्सन मिडिल स्कूल में सातवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे हिंदी पढ़नाऔर लिखना बहुतअच्छालगताहै। मुझे बास्केटबॉल खेलना बहुत पसंद है। बड़ेहोकरमैं वकीलबननाचाहतीहूँ।

वट वृक्ष पूजा, छट पूजा, और सहायता करते हैं। वट सावित्री त्यौहार के समय लोग वट वृक्ष की पूजा करते हैं। वट वृक्ष की आयु बहुत लंबी होती है। शादी शुदा औरतें वट वृक्ष पेड़ की पूजा करती हैं ताकि उनकी शादीशुदा ज़िंदगी लंबी हो सके। जब हम पेड़ की पूजा करते हैं तो लोग उन्हे काटते नहीं हैं, जिससे पर्यावरण का बचाव होता है। अगर हमारे पास पेड़ या पौधे नहीं होंगे तो हम सांस नहीं ले पाएंगे और जीवित नहीं रह पाएंगे।

यही कारण है कि वट वृक्ष पूजा पर्यावरण की सहायता करते हैं।

छठ पूजा का त्योहार भी पर्यावरण की सहायता करता है। छठ पूजा सूर्य देव और पानी की पूजा है। स्त्रियाँ इस दिन बिना पानी पिये प्यासी रहकर व्रत करती हैं। सूर्य और पानी बुनियादी जरूरत है। हमें जीने के लिए इनकी जरूरत है। यह त्योहार लोगों को बताता है कि भगवान ने हमें जो कुछ दिया है उसे बर्बाद न करने की बजाय उनकी पूजा करनी चाहिए।

पोंगल एक फसल पूजा का उत्सव है। हम भगवान को अनाज देने के लिए धन्यवाद देते हैं। पोंगल के समय हम साल भर की बेकार वस्तुएँ जला देते हैं। इससे घर में सफाई हो जाती है और पर्यावरण साफ़ सुथरा हो जाता है। यह त्योहार मनुष्य को सफाई का एहसास कराता है।

निष्कर्ष में, पोंगल, छठ पूजा और वट सावित्री पूजा सब पर्यावरण का संरक्षण करते हैं।

मेरा नाम करीना शाह है। मैं हाईस्कूल में एक फ्रेशमैन हूँ। कत्थक मेरे जुनून में से एक है और मैंअपने स्कूल में प्रतिस्पर्धी रोबोटिक्स टीमका हिस्सा हूँ। जैन होने के नाते मैं जैनधर्म को अपने दैनिक जीवन में शामिल करनेकी कोशिश करती हूँ।

प्रकृति संरक्षण का कोई त्योहार अखंड भारत भूमि को छोड़कर अन्यत्र देखने में नहीं आता है।

जब की सनातन परम्पराओं में प्रकृति संरक्षण के त्योहार मौजूद है।सनातन जैन धर्म जियो ओर जीने दो के सिद्धांत पर आधारित है और जैनियों को प्रकृति के प्रति अधिक संवेदनशील बनाता है। जैन धर्म में प्रकृति संरक्षण के लिए बहुत सारे त्योहार हैं।

पर्युषण पर्व उनमें से एक महत्वपूर्ण त्योहार है। पर्युषण पर्व में ज्यादातर जैनी आठ दिन उपवास करते है। उपवास करते समय वे केवल सूर्यास्त तक पानी का सेवन करते हैं, इन दिनों कई जैनी पानी का सेवन भी नहीं करते।

पर्यूषण पर्व में जैनी, सब्जियाँ, फल, आदि का सेवन नहीं करते, केवल सूखी दालों, चावल, आदि का सेवन करतेहैं। इस तरह बहुत जरूरी खाद्य पदार्थों और पौधों की बचत होती है और सूक्ष्म जीवों की रक्षा होती है। चूंकि कुछ जैन उपवास करते हैं, इसलिए खाना पकाना कम से कम होता है, जिससे गैस की बचत होती है। कई स्वास्थ्य लाभों के कारण जैन सूर्यास्त से पहले खाते हैं और प्रार्थना करते समय बिजली का उपयोग नहीं करते। इसके अतिरिक्त वे टीवी देखने और बिजली के किसी भी रूप का यथासंभव उपयोग करने से बचते हैं। बिजली का कम से कम उपयोग होने के पर्यावरण की सुरक्षा होती है।

पर्यूषण पर्व में कई जैन यात्रा करने के लिए कारों का उपयोग नहीं करते हैं, बल्कि पैदल यात्रा करते हैं, इस प्रकार पेट्रोल का उपयोग कम करते हैं औरपर्यावरण की सुरक्षा होती है। केवल इतना ही नहीं, बल्कि वे मुख्य रूप से शाकाहारी होते हैं। इस प्रकार वातावरण में ग्रीनहाउस गैसों की रिहाई को कम करते हैं।

इस पर्व को मनाने का मूल उद्देश्य आत्मा को शुद्ध करने के लिए होता है। इन दिनों जैनी त्याग और उपवास में अधिक से अधिक समय व्यतीत करते हैं और दैनिक, व्यावसायिक तथा सावद्य क्रियाओं से दूर रहने का प्रयास करते हैं। परोक्ष रूप से वे यह संकल्प करते हैं कि वे पर्यावरण में कोई हस्तक्षेप नहीं करेंगे। वैसे तो पर्युषण पर्व उल्लास-आनंद का त्योहार नहीं है, फिर भी उनका प्रभाव पूरे समाज में दिखाई देता है।

इन सब कारणों से पर्युषण पर्व आध्यात्मिक, शारीरिक ही नहीं बल्कि पर्यावरण संरक्षण का त्योहार है। इसके अलावा, जैन साधु और साध्वियां सबसे बड़े पर्यावरणविद् हैं, क्योंकि वे परिवहन के किसी भी रूप का उपयोग नहीं करते हैं, वे बिजली के किसी भी रूप का उपयोग नहीं करते हैं, न्यूनतम सामान रखते हैं, अपना भोजन नहीं बनाते हैं, स्नान नहीं करते हैं, और वे हवा में किसी भी जीव को मारने से बचने के लिए अपना मुंह ढक लेते हैं। वे अन्य मनुष्यों की तुलना में पानी की एक न्यूनतम मात्रा का उपयोग करते हैं।

यदि प्रदूषण को रोकने के उपाय नहीं किए गए तो एक दिन यह समस्त मानव जाति के विनाश का कारण बनेगा

मेरा नाम अनुमिता जयशंकर है। मैं जॉन एडम्स मिडिल स्कूल में आठवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं एयरो स्पेस इंजीनियर बनना चाहती हूँ। मुझे नाचना और गाना बहुत पसंद है।

भारत के त्योहार विभिन्न जातियों, भाषाओं, प्रांतों में अलग-अलग तरीके से मनाये जाते हैं। त्योहार हमारे लिए खुशियाँ लाते हैं। |त्योहार मनाते समय हमें पर्यावरण, जिसमें हम सब लोग निवास करते हैं, के प्रदूषण की समस्या को ध्यान रखना चाहिए। वायु, जल, भोजन, ध्वनि का प्रदूषण त्योहारों से ज़्यादा होता है। त्योहारों के समय में जोर से लाउडस्पीकर पर गाना और भजन बजाने से ध्वनि प्रदूषण होता है। इसके बदले हमें शांति से किसी को बिना परेशान किए प्रार्थना करना चाहिए और ध्वनि प्रदूषण से बचना चाहिए। दिवाली के समय पटाखे जलाने के कारण बहुत से लोगों को सांस लेना मुश्किल होता है। पटाखे के बजाय दीया जला सकते हैं, जिससे वायु प्रदूषण न हो।

गणेश चतुर्थी के समय में हम बहुत जल प्रदूषण करते हैं। मूर्तियों में रसायनिक रंग होता है। मूर्तियों को नदी में डालने से जल खराब हो जाता है। मनुष्य, पशु, पक्षियों, मछलियों के लिये यह अच्छा नहीं है। इसलिए मूर्तियों को रसायनिक रंगों से नहीं सजाना चाहिए। इन्हें बड़े-बड़े समुद्रों में डालना मना होना चाहिए। मूर्तियों को मिट्टी से ही बनाने पर जल्दी घुल जाती हैं और ये पर्यावरण के लिए भी सुरक्षित हैं।

होली के समय में हम बहुत से रंगों के सामान हवा में फेंकते हैं। इससे वायु प्रदूषण हो जाता है। हमारा शरीर भी प्रदूषण से प्रभावित होता है। रंगों के बजाय हल्दी, फल फूलों को उपयोग कर हम घर में रंग बना सकते हैं। और पर्यावरण संरक्षण में अपना योगदान दे सकते हैं।

हमारे त्योहारों के दौरान पर्यावरण को हानि नही पहुंचानी चाहिए। अपने पर्यावरण को हमें अपने घर की तरह साफ सुथरा रखना चाहिए। पर्यावरण को प्रदूषण से बचाना हर एक नागरिक का मुख्य कर्तव्य है।

सिद्धार्थ

भारत में वायु प्रदूषण में त्योहारों का बहुत बड़ा योगदान है। यह भारत के स्वास्थ्य के लिए बहुत बुरा है। होली में कैमिकल्स से बने रंग और दीवाली में पटाखों के धुएं के कारण वायु प्रदूषण होता है। इसके अलावा कृत्रिम या सिंथेटिक हानिकारक रसायनों से बनी भगवान और देवी की मूर्तियों के नदी, तालाबों और अन्य जल श्रोतों में विसर्जन जल प्रदूषण का कारण बनते हैं। हमारे त्योहार शहर की सड़कों और अन्य इमारतों को भी प्रभावित करते हैं। त्योहारों के समय यातायात बढ़ जाता है। जिसके कारण वायु और ध्वनि प्रदूषण भी बढ़ता है और पर्यावरण संबंधी चिन्ताओं को और भी बढ़ावा देता है। देवताओं और देवियों की मूर्तियों को समुद्र और अन्य जल निकासों में विसर्जित कर दिया जाता है। यह पानी की लवणता को बदलता है और पानी में घुले रसायन मछलियों और अन्य जीवित प्राणियों के मरने का कारण बनते हैं। आजकल व्यवसायिकरण के कारण हमारे त्योहारों में विकृति आ गई है और इसने हमारे पर्यावरण को बुरी तरह घायल किया है। यदि पर्यावरण को बचाना है तो हमें ऋषि मुनियों द्वारा निर्धारित नियमों के अनुसार अपने त्योहारों को मनाना होगा।

मेरा नाम जिया काराणि है। मैं सातवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे नृत्य करना और गाना गाना पसंद है।

हिन्दू धर्म में पर्यावरण को ध्यान में रखकर त्योहारों को किस तरह से मनाया जाता था?? हमारे पूर्वजों को ज्ञात था कि मानव अपने स्वार्थ के लिये हमारी प्रकृति, हमारे पर्यावरण को नुकसान पहुँचा सकता है, इसीलिए उन्होंने हमारे सभी त्योहारों को किसी न किसी तरह से प्रकृति का सम्मान और पूजा करने के लिये हमें बाध्य किया है। आइये आज इसी के बारे में कुछ चर्चा करें।

पर्यावरण के बारे में हिंदु धर्म के विचार:

- सभी चीजें पवित्र हैं।
- हमें प्रकृति के प्रति अहिंसक होना चाहिए।
- मनुष्य प्रकृति का हिस्सा है और बाकी सब चीजों से जुड़ा हुआ है।
- प्राचीन हिन्दू शिक्षा के अनुसार "पृथ्वी हमारी माँ है, और हम सब उसके बच्चे हैं।"
- हिमालय कैलाश पर्वत हमारे पिता स्वरूप हैं।
- गाय माता है।
- जानवरों का विभिन्न रूपों में अलग अलग त्योहारों पर पूजन
- विभिन्न पक्षियों का विभिन्न त्योहारों में पूजन विभिन्न त्योहारों पर पेड़-पौधों की पूजा तथा विभिन्न पेड़-पौधों के फल, पत्तों, टहनियों, बीजों
- और फूलों से पूजा
- गंगा यमुना सरस्वती ये सब हमारी माँ समान हैं।

त्यौहार जो प्रकृति को लाभ पहुँचाते हैं:

- होली और दीवाली में अग्नि का उपयोग होता है।
- आग से पर्यावरण में अनावश्यक कचरे से छुटकारा मिलता है।
- आग कीड़ों से छुटकारा पाने में मदद करती है।

त्यौहार जो प्रकृति का सम्मान करते हैं:

- होली: वसंत का स्वागत।
- करवाचौथ में चंद्रमा की पूजा करते हैं।
- संकट चौथ पर तारों की पूजा
- संक्रांति पर सूर्य की पूजा
- गंगा दशहरा पर गंगा नदी की पूजा
- महाशिवरात्रि पर कैलाश पर्वत की पूजा
- गोवर्धन गाय की पूजा
- भाई दूज पर कान पर जौ की हरी घास को रखना

हमारे सभी त्योहारों का हमारी प्रकृति से सीधा सम्बन्ध ही हमें अपने पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनाता है।

मेरा नाम अनिका मेहता है। मैं आठवीं कक्षा की छात्रा हूँ। यह मेरा हिंदी पाठशाला में आख़िरी साल है और मैं बहुत ख़ुश हूँ कि मैं इस स्तर तक पहुँच गयी हूँ।

इस बार मैं आपको हमारे पर्यावरण की रक्षा में हमारे त्योहारों का महत्व बताना चाहती हूँ कि त्योहार इस तरह मनाएँ कि मानव जीवन तथा हमारे पर्यावरण में मिठास, स्वस्थ शरीर और सफ़ाई बनी रहे। इसीलिये ज़रूरी है कि हम कोई भी त्योहार मनायें तो अपने आस पास की ख़ुशी पर ज़रूर ध्यान दे। जैसे सभी जन होली पर कम से कम रंग का उपयोग और शुद्ध रंगो का इस्तेमाल ही करें। साथ ही साथ दिवाली पर पटाखों का कम उपयोग करें ताकि सभी जीव जंतु दूषित हवा और शोर के बिना आराम से ज़िंदगी जी सकें।

मेरा नाम सिद्धार्थ वैद्य है और मैं जॉन एडम्स मिडिल स्कूल में सातवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं हिंदी सीख रहा हूँ ताकि मैं आराम से भारत में यात्रा कर सकूँ। मुझे नाटकों में अभिनय करना पसंद है और मैं भविष्य में हिंदी नाटक में अभिनय करना पसंद करूँगा।

भारत में सभी धर्मों के सांस्कृतिक त्योहार मनाए जाते हैं। ये त्योहार गाने, नृत्य और अच्छे भोजन के साथ बहुत उत्साह के साथ मनाए जाते हैं। पुराने दिनों में ये त्योहार प्रकृति के अनुरूप थे। आजकल दिवाली, दुर्गा पूजा, गणेश उत्सव जैसे कई त्योहारों का व्यवसायीकरण किया जाता है। इन त्योहारों को जिस तरह से मनाया जाता है उससे बहुत प्रदूषण फैलता है। पटाखों के माध्यम से प्रदूषण फैलता है। नदियों और समुद्र में मूर्तियों के विसर्जन के माध्यम से प्रदूषण फैलता है। विशाल शहरी आबादी इन त्योहारों में प्रदूषण बढ़ा रही है। यह इन प्राचीन त्योहारों का उद्देश्य नहीं था। आइए कुछ त्योहारों पर नजर डालते हैं जो प्रकृति के साथ-साथ मनाए जा सकते हैं।

वसंत पंचमी वसंत ऋतु की शुरुआत का प्रतीक है। इस त्योहार को सरस्वती पूजा के रूप में मनाया जाता है। इन दिनों हम राष्ट्रीय उद्यानों में जाकर और पेड़ लगाकर वसंत पंचमी मना सकते हैं।

रोंगाली बिहू असम में मनाया जाता है। यह त्योहार बीजारोपण के समय का आगमन दर्शाता है। महिलाएं नृत्य करती हैं और पुरुष हॉर्न और ड्रम बजाते हैं। किसान बिहू गीत गाते हैं और अच्छी फसल के लिए प्रार्थना करते हैं। हम नए फसल गीतों को सीखकर रोंगाली बिहू मना सकते हैं।

लोहड़ी फसल का त्योहार है। यह त्योहार १३ जनवरी को बहुत मज़े और दावत के साथ मनाया जाता है। इस समय लोग भांगड़ा नृत्य का आनंद लेते हैं। अमेरिका में हम अपने दोस्तों के साथ मकई को बारबेक्यू करके लोहड़ी मना सकते हैं।

आइए इन त्योहारों के मूल इरादे को समझें और उन्हें वर्तमान समय के अनुसार मनाएं।

वमसी कृष्ण मुरली

हमारी संस्कृति में प्रकृति के सभी सजीव तथा निर्जीव चीजों को पूजा जाता है। चाहे वह ग्रह नक्षत्र हों या चाँद सितारे, पहाड़ हो या नदियाँ, वायुदेव हो या अग्निदेव, गंगा हो या दूसरी नदियों का जल, पक्षी हो या जानवर, हमारे पर्यावरण में आने वाली हर चीज पूजा योग्य है।

संक्रांति एक हिन्दू त्योहार है। यह त्योहार सर्दी के मौसम के अंत और फसल की शुरुआत का प्रतीक है। एक वर्ष में 12 संक्रांति होती हैं। इस वर्ष संक्रांति १५ जनवरी को थी। यह त्यौहार सूर्य भगवान को समर्पित है। सूर्य देव को सम्मानित करने के लिए लोग लड्डू और अन्य भोजन प्रस्तुत करते हैं। कई लोग पतंग उड़ाकर भी इस दिन को मनाते हैं। यह त्यौहार एक मौसमी पालन के साथ-साथ एक धार्मिक उत्सव भी है। मकर संक्रांति पूरे भारत में बेहद लोकप्रिय है और नयी फसल का अभिनंदन करता है। यह पूरे भारत में, उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक मनाया जाता है। अंग्रेजी में इस त्योहार को "Sol!st!ce" के रूप में जाना जाता है। यह एक ऐसा त्यौहार है जो वास्तव में पर्यावरण और प्रकृति पर आधारित है।

प्रदूषण पर प्रतिबन्ध लगाएँ, पर्यावरण को हम सब बचाएँ!!

नमस्ते, मेरा नाम सिमरन सहगल है। मैं सातवीं कक्षा में पढ़ती हूँ और मेरी उम्र १२ साल है। मैं कोलोनिया मिडिल स्कूल में पढ़ती हूँ और कोलोनिया,न्यू जर्सी में रहती हूँ। मेरी कई रुचियाँ हैं, जैसे कि मुझे तैरना, किताबें पढ़ना, नाचना, गाना और बास्केटबॉल खेलना पसंद है। मुझे खाना बनाना भी पसंद है।

भारत में हम सभी प्रकार की प्रकृति की पूजा करते हैं। हम प्रकृति का सही तरीके से ध्यान रखना सीखते हैं, न कि उसे नुकसान पहुंचाना चाहते हैं। प्रकृति की पूजा हमें प्रकृति के संरक्षण और प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करने की याद दिलाती है। उदाहरण के लिए, भारत में हमारे पास वट वृक्ष हैं और उनके जैसे अनेक ऐसे पेड़ और पौधे हैं जिनके लिए कुछ प्रार्थनाएं हैं। इस पूजा में भक्त, मुख्य रूप से महिलाएं, अपने पति की लंबी उम्र के लिए प्रार्थना करतीं हैं और एक बरगद के पेड़ के चारों ओर घूमती हैं। यह त्योहार बरगद के पेड़ों के संरक्षण का एक अनूठा तरीका है। इसके अलावा भारतीय लोग चैत पूजा उत्सव मनाते हैं, जो सूर्य देव के प्रति आभार व्यक्त करता है। इस पूजा में एक नदी में डुबकी लगाने की आवश्यकता होती है, जो पानी के सभी स्रोतों को महत्व देती है। भारत में तुलसी का पौधा एक बहुत ही महत्वपूर्ण पौधा है और लगभग सभी भारतीय परिवारों के घर में तुलसी का पौधा होता है। तुलसी के पौधे की पूजा करनी चाहिए क्यूंकि इसके औषदीय और अनेक वैज्ञानिक गुण हैं। जब हम पौधों की पूजा करते हैं, तो हम इनके अच्छे गुणों को प्रभावित करने की कोशिश करते हैं।

एक और तरीका जिससे हम अपने पर्यावरण को बचा सकते हैं, वो है कि लोग जिस तरह से चीज़ें पहले इस्तेमाल किया करते थे, उन अच्छी चीज़ों को और बढ़ावा देना चाहिए। जैसे कि दिवाली पर लोग मिट्टी के दीये बनाते थे ताकि वे पानी में घुल जाएँ और पर्यावरण को बर्बाद न करें। इसके अलावा लोग पटाखों का इस्तेमाल नहीं करते थे,जैसे कि लोग आज इतना पैसा खर्च करते हैं और इतना प्रदूषण बड़ा देते हैं। दीवाली रोशनी का त्योहार है, यह उमंग और उत्साह का त्योहार है। अयोध्या नगरी में लोगों ने राम जी के वनवास से लौट के आने पर दीपमाली की थी, यह ख़ुशी मनाने का तरीका था, न कि पर्यावरण दूषित करने का। लेकिन आज लोग मिट्टी के बनाये दीये की बजाये रासायनिक सामग्री का इस्तेमाल करने के कारण पूरे भारत को गन्दा कर रहे हैं। और तो और प्लास्टिक के अत्यधिक इस्तेमाल से यह जमीन खराब हो रही है। हमें पर्यावरण के संरक्षण के लिए कई तरीके निकालने हैं, इसलिए हमें मिल जुल कर अपनी धरती माँ की संरक्षण के लिए काम करना होगा ताकि आने वाली पीढ़ी स्वच्छ, स्वस्थ और सुन्दर वातावरण में जीवन का आनंद ले सके।

हमें यह ग्रह हमारे पूर्वजों से उत्तराधिकार में नहीं मिला,
ये हमें अपने बच्चों से उधार में मिला है।
अमेरिकी कहावत

विधी ओझा

छुट्टियाँ हमें कई तरह से पर्यावरण की मदद करने के बारे में सिखाती हैं। वे हमें अपने इलेक्ट्रॉनिक्स यंत्रों से दूर बाहर की दुनिया में लाती हैं। हालाँकि वे हमें अप्रत्यक्ष तरीके से मदद भी करती हैं। दिवाली के दौरान अनेक प्रकार की आतिशबाजी आसमान में होती है। इससे बड़ी मात्रा में प्रदूषण होता है। वायु प्रदूषण के बुरे प्रभावों ने भारत के लोगों को "भारतीय पृथ्वी दिवस" नामक एक नया अवकाश बनाने के लिए प्रोत्साहित किया है। पृथ्वी दिवस २२ अप्रैल को मनाया जाता है। पृथ्वी दिवस का एक नेटवर्क भी है जिसका मुख्यालय कोलकाता में है। इन पृथ्वी दिवस गतिविधियों में दुनिया भर के एक अरब से अधिक लोग भाग लेते हैं। इस नेटवर्क के माध्यम से अधिक से अधिक लोग अपने पर्यावरण के प्रति सतर्क रहने के लिए प्रोत्साहित होते हैं। सुप्रीम कोर्ट ने प्रदूषण रोकने के समर्थन में दिल्ली में आतिशबाजी पर प्रतिबंध लगा दिया। इसने भारत में कई राज्यों को प्लास्टिक बैग पर प्रतिबंध लगाने के लिए प्रोत्साहित किया। अंत में, छुट्टियाँ हमें कई तरीकों से पर्यावरण की मदद करने के बारे में सिखाती हैं।

मेरा नाम शिवम दवे है। मुझे हिंदी लिखना पसंद है। मुझे हिंदी कक्षा में जाने में बहुत मज़ा आता है क्योंकि मैं बहुत सारी चीज़ें सीखता हूँ, जैसे कि हिंदी पढ़ना और लिखना।

हमारे कई त्योहार पर्यावरण के अनुरूप थे। जैसे दिवाली में केवल दिए जलाये जाते थे और आतिशबाजी भी कम की जाती थी। आजकल पूरी रात आतिशबाजी करने से हमारे वातावरण में बहुत प्रदूषण होता है। इसके कारण धुआं और ध्वनिप्रदूषण भी होता है। पुराने दिनों में दिवाली में कम प्रदूषण हुआ करता था। पहले होली में रसायन वाले रंगो का इस्तेमाल किया जाता था। अब हम प्राकृतिक रंगो का इस्तेमाल करते हैं, जो कि पर्यावरण को हानि नहीं पहुँचाते। इस तरह से हम अपनी अगली पीढ़ी को अच्छे पर्यावरण का तोहफ़ा देते हैं। होली में पहले पानी से खेलते थे। नई पीढ़ी पानी को बचाने के लिए पानी से कम खेलती है। दशहरे का त्योहार भी पर्यावरण को बेहतर बनाने में मदद करता है। दशहरे का त्योहार बुरी भावनाओं को मारता है और अच्छी भावनाओं को पैदा करता है जिससे दुनिया एक सुरक्षित और बेहतर जगह बनती है। हमको पर्यावरण को बचाने के लिए जितना हो सके उतना प्रयत्न करना चाहिए जिससे हम नई पीढ़ी को अच्छी दुनिया दे सकें।

मेरा नाम आर्निका घरसे है। मैं आठवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मेरा सबसे प्यारा विषय गणित है। मुझे अलग-अलग किताबें और भूगोल पढ़ना अच्छा लगता है। मुझे बिल्ली और कुत्ता अच्छे लगते हैं। मैं बड़े होकर कुत्ता और बिल्ली पालना चाहती हूँ।

हिन्दू धर्म में गणेशजी का त्योहार बहुत धूम धाम से मनाया जाता है। उसे गणेश चतुर्थी कहते है। पहले तो गणेश जी की मूर्ति मिट्टी से नहीं बनती थी और समुद्र का पानी गंदा होता था। पर अभी बहुत से लोग पर्यावरण को संभालने के लिए मिट्टी से गणेशजी बनाते है और उसमें फल फूल के बीज भी डालते हैं। तो जब गणेशजी का विसर्जन होता है तो मिट्टी से पेड़ उगाये जाते हैं। इस तरह समुद्र में गन्दगी नहीं होती है और पानी के छोटे बर्तन में विसर्जन करने से पानी भी ज्यादा उपयोग नहीं होता है। इस तरह हम पर्यावरण की रक्षा करते है और संसार में जागृति लाते हैं।

मेरा नाम नैना पत्ती है और मैं एडिसन पाठशाला में उच्च स्तर-२ कक्षा की छात्रा हूँ। सामान्य पाठशाला में मैं आठवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे फुटबॉल खेलना अच्छा लगता है। मुझे भरतनाट्यम् और टईक्वांडो में रुचि है।

हमारे भारतीय त्योहार पर्यावरण की मदद और रक्षा करते हैं। जब मकर संक्रांति आती है, तब लोग अपने घर को साफ़ करके पुरानी चीजों को एक नया उद्देश्य देते हैं। हालांकि कई लोगों को लगता है कि दिवाली मनाना पर्यावरण को नुकसान पहुँचाता है, दिवाली रौशनी तथा दीपों का त्योहार है। त्योहारों के महत्व और पर्यावरण की रक्षा को नज़र में रखते हुए कई लोग त्योहारों को विशेष तरीकों से मना रहे हैं। आजकल मकर संक्रांति के समय लोग पुरानी चीज को जलाने या फेंकने के बजाय दूसरी तरह से उपयोग करते हैं। इससे कचरे के ढेर कम होते हैं, लोगों की भलाई होती है और पर्यावरण की भी भलाई होती है। लोग पर्यावरण को बचाने के लिए बहुत कुछ कर रहें हैं। लोग साथ में त्योहार मनाते हैं। दिवाली के समय लोग सामूहिक तरह से पटाखे खरीदते हैं और साथ में जलाते हैं। कई लोग बिना पटाखों के दिवाली मनाते हैं। लोग पुरानी सजावट की चीजें फिर से उपयोग कर रहे हैं, जिससे पर्यावरण की रक्षा में मदद होती है। होली के समय आजकल लोग घर का बना या प्राकृतिक रंगों का उपयोग करते हैं। हर मौसम से जुड़ा अलग-अलग त्योहार है, अगर हम इन त्योहारों का महत्व समझ कर उन्हें सही तरीके से मनाएँ तो हमारी सेहत की भी भलाई होगी। त्योहार के समय जो पकवान बनते हैं, वे मौसम के अनुसार होते हैं। अगर सभी पर्यावरण का महत्व समझ कर अपना योगदान दें तो पर्यावरण की रक्षा होगी।

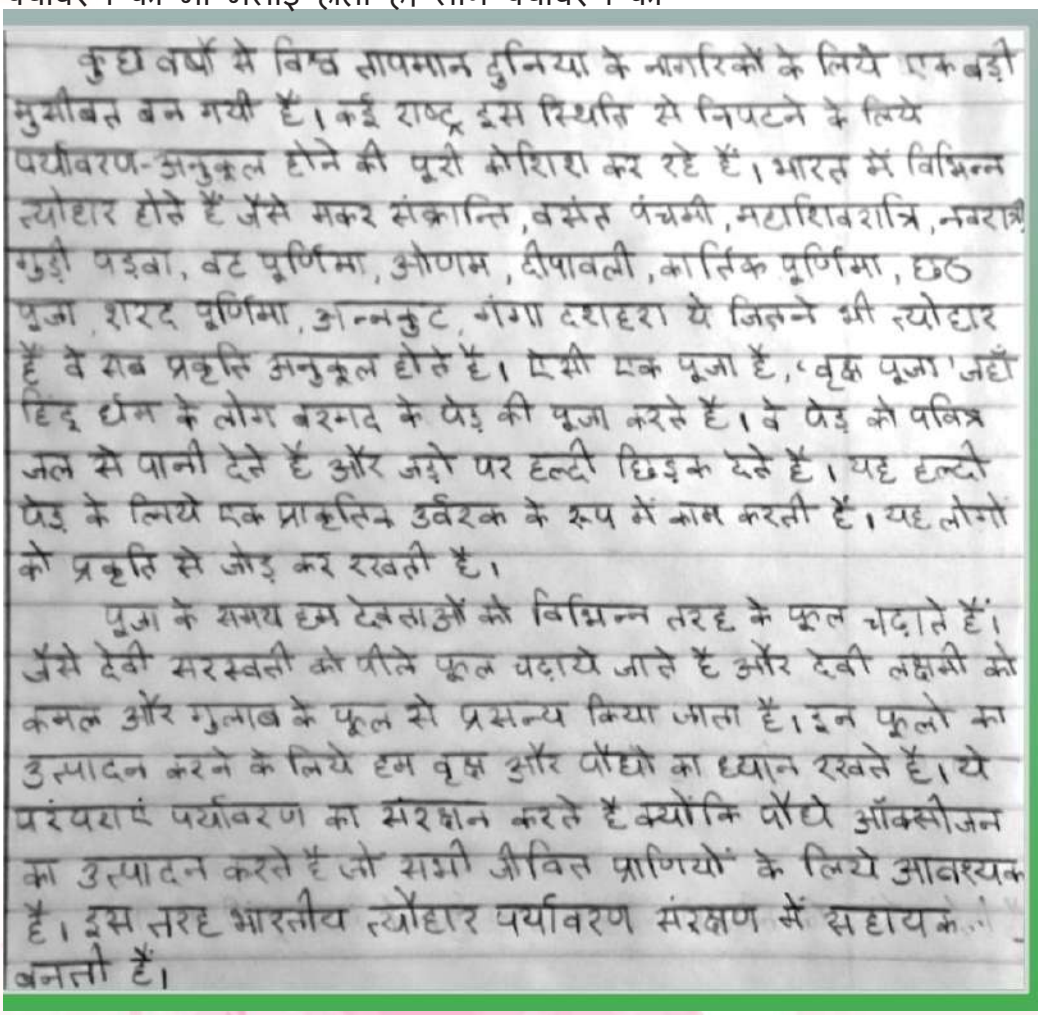

कुछ वर्षों से विश्व सापमान दुनिया के नागरिकों के लिये एक बड़ी मुसीबत बन गयी है। कई राष्ट्र इस स्थिति से निपटने के लिये पर्यावरण-अनुकूल होने की पूरी कोशिश कर रहे हैं। भारत में विभिन्न त्योहार होते हैं जैसे मकर संक्रान्ति, वसंत पंचमी, महाशिवरात्रि, नवरात्रि गुड़ी पड़वा, वट पूर्णिमा, ओणम, दीपावली, कार्तिक पूर्णिमा, छठ पूजा, शरद पूर्णिमा, अन्नकुट, गंगा दशहरा ये जितने भी त्योहार हैं वे सब प्रकृति अनुकूल होते हैं। एसी एक पूजा है, 'वृक्ष पूजा' जहाँ हिंदू धर्म के लोग बरगद के पेड़ की पूजा करते हैं। वे पेड़ को पवित्र जल से पानी देते हैं और जड़ो पर हल्दी छिड़क देते हैं। यह हल्दी पेड़ के लिये एक प्राकृतिक उर्वरक के रूप में काम करती है। यह लोगों को प्रकृति से जोड़ कर रखती है।

पूजा के समय हम देवताओं को विभिन्न तरह के फूल चढ़ाते हैं। जैसे देवी सरस्वती को पीले फूल चढ़ाये जाते हैं और देवी लक्ष्मी को कमल और गुलाब के फूल से प्रसन्न किया जाता है। इन फूलो का उत्पादन करने के लिये हम वृक्ष और पौधो का ध्यान रखते हैं। ये परंपराएं पर्यावरण का संरक्षण करते हैं क्योंकि पौधे ऑक्सीजन का उत्पादन करते हैं जो सभी जीवित प्राणियों के लिये आवश्यक है। इस तरह भारतीय त्योहार पर्यावरण संरक्षण में सहायक बनते हैं।

पर्यावरण के संरक्षण में हमारे त्योहारों का योगदान

मेरा नाम है **तनिशा मित्रा** और मैं आठवीं कक्षा में पढ़ती हूं। मुझे कला और गायन पसंद है और मैं 10 वर्षों से नृत्य सीख रही हूं।

पर्यावरण और दक्षिण भारत के त्योहार

मेरा नाम मानसा वेंकटरमणा है और मैं पिस्केटवे की कोनेकमेक पाठशाला में सातवीं कक्षा में [पढ़ती हूँ। मैं सात सालों से हिंदी यू.एस.ए. में हिंदी सीख रही हूँ और अगले साल से स्वयंसेविका बनकर हिंदी सिखाना चाहती हूँ। मैं तमिल, कन्नड़ और स्पेनिश भाषाएँ भी बोल सकती हूँ। मुझे दक्षिण भारत के शास्त्रीय संगीत गाना और बाँसुरी बजाना बहुत पसंद है।

दक्षिण भारत में बहुत सारे विभिन्न तरह के त्योहार मनाये जाते हैं। ये बहुत खास होते हैं क्योंकि इनमें केमिकल का प्रयोग नहीं होता है और पर्यावरण को दूषित नहीं किया जाता हैं। उदाहरण के लिए नवरात्री के पर्व में तमिलनाडू और कर्नाटक के राज्यों में लोग मिट्टी से बनी गुड़ियों को मंच पर प्रदर्शित करते हैं। इसे कोलू कहते हैं। ये गुड़ियाँ सौ प्रतिशत प्राकृतिक होती हैं और टूटने पर भी धरती से मिल जाती हैं। साथ में गणेश चतुर्थी के दिवस में, मिट्टी या कागज़ से बनी गणेश की मूर्तियों को पानी या समुद्र में विसर्जित किया जाता है, जो बायोडीग्रेडबल हैं एवं पानी को खराब नहीं करतीं। उत्सवों के दिनों में दक्षिण भारत के लोग केलों के पत्तों पर व्यंजन खाते हैं। दावत के बाद फेंकने पर गाय या भेड़ उन पत्तों को खाती हैं, फिर बाकी सब धरती में मिल जाता है। इसके अतिरिक्त, फूल माला बनाने के लिए केले के तने के रेशे का उपयोग होता है जो प्रकृति के अनुकूल होता है। साथ ही दक्षिण भारत में औरतें सुबह जल्दी उठकर घर के आंगन पर चावल के आटे से रंगोली बनाती हैं जो चींटियों का भोजन बन जाता है। अपनी परंपरा के अनुसार घर में तुलसी के पौधे उगाये जाते हैं, जिससे हवा को स्वच्छ किया जाता है। पोंगल के पर्व में गाँव के लोग अपने पशुओं की पूजा करके उनकी देखभाल भी करते हैं। इसके अतिरिक्त शुभ दिनों में, गाय तथा कौए को खाना खिलाते हैं। कुछ भी सामान व्यर्थ नहीं होता है। इस प्रकार, दक्षिण भारत के त्योहार और परंपराएँ प्रकृति के विभिन्न अवयवों के संरक्षण का संदेश देते हैं।

जल प्रदूषण

सायशा पुराकायस्था
मोन्टगोमेरी पाठशाला
मध्यमा-२

जल इमको जीवन देता है। स्वच्छ जल सभी प्रकार के पशु-पक्षियों व अन्य प्राणियों के लिये बहुत जरूरी है। स्वच्छ जल को हम पीने, नहाने और खेतों की सिंचाई व साफ-सफाई में प्रयोग करते हैं। लेकिन आजकल जल बहुत प्रदूषित हो गया है। जल में अनेक प्रकार की गंदगियाँ मिल गयी हैं, जैसे प्लास्टिक, कांच व रसायनिक पदार्थ। इस गंदे जल को पीने से हम बीमार हो जाते हैं। इसलिए हमें जल प्रदूषण को रोकना होगा। हमें ध्यान रखना होगा कि नदियों, तालाबों व समुद्र का पानी हमेशा स्वच्छ रहे।

पर्यावरण के संरक्षण में हमारे त्योहारों का योगदान

मेरा नाम मानसी खुराना है। मैं नौवीं कक्षा की छात्रा हूँ और साउथ ब्रुंस्विक हिंदी पाठशाला में उच्चस्तर-२ में पढ़ रही हूँ। मैं हिंदी पाठशाला से स्नातक होकर स्वयंसेविका बनना चाहती हूँ। गणित और विज्ञान के अलावा मैं बास्केटबॉल, पियानो, वायलिन और कत्थक में रुचि रखती हूँ।

आजकल दुनिया में भौतिक विकास के पीछे दौड़ते-दौड़ते मनुष्य यह भूल गया है किइसकी बहुत कीमत चुकाई गई है और आगे आने वाली पीढ़ी को उससे भी अधिक कीमत देनी पड़ेगी।

हम देख रहे हैं की हमारा पर्यावरण संकट में है। जब पेड़ काटकर कंकरीट के जंगल खड़े किए जाते हैं तो इसका पर्यावरण पर बहुत गंभीर परिणाम होता है। आज जब दुनिया में अनेक देश पर्यावरण के संरक्षण के लिए जागृत हो रहे है वहीं उनको अब समझ आ रहा है किभारत की संस्कृति, परंपरा, एवं त्यौहार पर्यावरण संरक्षण में पिछले हज़ारों सालों से योगदान दे रहे हैं। भारत का यह योगदान जो प्राचीन काल से चला आ रहा है, वह किसी भी विदेशी प्रयासों से कहीं अधिक विकसित और बहुत आगे है।

हमारे भारत में प्राचीन काल से प्रकृति का पूजन किया जाता है, जिसका उदाहरण हमारे वेद पुराण में बार बार दोहराया जाता है। जैसे कि इश्वस्य उपनिषद में लिखा है: "इश्वस्यम इदम सर्वम" जिसका अर्थ है सारे ब्रह्माण्ड को एक दृष्टि से देखना। जैसे कि हर छोटे जीव जंतु, वृक्षों, जंगलों, नदियों, समुद्र, पहाड़ों, धरती से लेकर तारों, ग्रहों और सामूहिक ब्रह्माण्ड को श्रद्धा पूर्वक देखना।

पांचों तत्त्व: आकाश, वायु, अग्नि, जल, एवं पृथ्वी, प्रकृति से ही जन्म लेते है और एक दूसरे के ऊपर निर्भित है। इन पांच तत्वों का पूजन हर त्यौहार में किया जाता है। इस पूजन के करने से हम प्रकृति का सम्मान करते हैं, जिससे हमें प्राकृतिक संसाधन को सँभालने की प्रेरणा मिलती हैं। इसके अतिरिक्त त्योहारों के दिनों में सात्विक भोजन करके हर व्यक्ति अपना कार्बन पद चिन्ह कम करके पर्यावरण का संरक्षण करने में योगदान दे रहा है।

एक ऐसा उदाहरण है होली का त्यौहार। होली के त्यौहार में प्राचीन काल से धार्मिक संस्कार यह है कि एक दिन पहले होलिका दहन किया जाता है। होलिका दहन से कुछ दिन पहले लोग लकड़ियां और पूर्णनवीनीकरण सामग्री एकत्र करना प्रारम्भ कर देते हैं और उसका प्रयोग होलिका दहन के दिन करते हैं। इसके करने से वातावरण स्वच्छ होता है और ज़हरीले कीटाणु भी नष्ट होते हैं जो कि पर्यावरण संरक्षण में सहायता करता है।

मेरी आप सबसे प्रार्थना है कि आइये हम सब मिलकर पर्यावरण संरक्षण में अपना कर्तव्य निभाकर आने वाली पीढ़ियों के भविष्य को सुरक्षित करने का प्रण लें।

मेरा नाममयूरिकाबेराहै।मैंछठवींकक्षा की छात्रा हूँ और साउथ ब्रुंस्विक हिंदी पाठशाला में उच्चस्तर-२ में पढ़ रही हूँ। मुझे हिंदी पढ़ना और लिखना दोनों ही बहुत पसंद हैं।

भारतीय त्यौहार पर्यावरण संरक्षण में मदद करते हैं। भारत में मनाये जाने वाले अधिकांश त्यौहार मात्र प्रकृति से संबंधित हैं। जैसे कि पोंगल। पोंगल एक उत्सव है जिसमें लोग वर्ष की उपज के लिए प्रकृति के प्रति अपनी गहरी कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। प्रकृति हमें बहुत कुछ देती है और इसके लिए हमें प्रकृति का धन्यवाद करना चाहिए। भारत में कई त्योहारों के द्वारा प्रकृति औरपर्यावरण की पूजा होती है। जिन त्योहारों में प्रकृति की पूजा की जाती है वे बहुत स्पष्ट तरीके से प्रकृति के संरक्षण की आवश्यकता को इंगित करते हैं। दीवाली, होली और गणेश विसर्जन जैसे कई त्यौहार पर्यावरण को नुकसान पहुँचाते हैं। इसका यह मतलब नहीं कि हम इन त्योहारों को मना नहीं सकते, बल्कि इसका यह मतलब हैं कि हमे पर्यावरण के अनुकूल और सुरक्षित तरीके से इन त्योहारों को मनाना चाहिए। दीवाली में पटाखे चलाना एक विकल्प है, अनिवार्य नहीं। आप अपने परिवार के साथ दीवाली को अधिक आनंददायक तरीके से मना सकते हैं। पुनरनवीनीकरणसजावटी का उपयोग करें। ऐसा करने से पर्यावरण को बहुत मदद मिलेगी। सालों पहले लोग होलिका दहन के लिए लकड़ी और मूसलों का इस्तेमाल करते थे, आज भी वह बहुत मदद करेगा। हमें यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता हैं कि हमारे विकल्प और कार्य पर्यावरण को नुकसान नहीं पहुँचाते, क्योंकि हमारा पर्यावरण हमें बहुत कुछ देता हैं। यह हमारा दायित्व है कि हम अपने पर्यावरण को सुरक्षित और साफ रखें।

प्रीशा अगरवाल साउथ ब्रंस्विक की हिंदी पाठशाला में उच्चस्तर-२ की छात्रा हैं। प्रीशा चौदह साल की हैं और इन्हें लिखना और चित्र बनाना पसंद है।

भारत देश में विभिन्न पेड़ पौधों और वृक्षों की पूजा की जाती है। आदि काल से लोगों ने उनके संरक्षण करने का यह तरीका अपनाया था। प्राचीन भारत के लोगों को पेड़ों के संरक्षण का महत्व मालूम था इसलिए उन्होंने पेड़ों को देवी देवता का रूप दे दिया जिससे कि उनका संरक्षण हो सके। कई पूजनीय पेड़ों में एक तुलसी का पौधा भी है, जिसका आयुर्वेद में अत्यंत महत्व है। यह माना जाता है कि तुलसी का पौधा पवित्र है और उसमें लक्ष्मी का निवास है। तुलसी के पौधे के अनेक फायदे हैं, जैसे कि खांसी की बीमारी में इसके पत्तों को खाया जाता है। इसी प्रकार एक अन्य पेड़ बरगद है जिसमें माना जाता है कि भगवान शिव का निवास है और भगवान कृष्ण का अंतिम स्थान है। यह पेड़ भारत का राष्ट्र वृक्ष भी है ।

प्रदूषण की समस्या मानव निर्मित है, इसलिए इसका समाधान भी हमें ही करना होगा।

मेरा नामरिया जैनहै। मैं आठवींकक्षा की छात्रा हूँ और साउथ ब्रुंस्विक हिंदी पाठशाला में उच्चस्तर-२ में पढ़ रही हूँ। मैं हिंदी पाठशाला से स्नातक होकर स्वयंसेविका बनना चाहती हूँ।मैंगणित और विज्ञान के अलावाअभिनय में भी रुचि रखतीरखती हूँ।

दीवाली भारत में उत्पन्न प्रकाश का त्योहार है जो अब कई देशों में मनाया जाता है। यह हर साल शरद् ऋतु में मनाया जाने वाला एक प्राचीन हिंदू त्योहार है। दीवाली को संस्कृत में दीपावली के नाम से भी जाना जाता है, जिसका अर्थ है "दीपक की पंक्ति" जो "अंधकार पर प्रकाश की विजय" का प्रतीक है। दिवाली एक प्रमुख सांस्कृतिक कार्यक्रम है और यह मुख्य रूप से घरों, दुकानों, मंदिरों और कई दीपकों के साथ अन्य प्रतिष्ठानों को रोशन करके मनाया जाता है। हालांकि वर्तमान में दीवाली पटाखों के साथ मनाई जाती है जो शोर और खतरनाक धुआं पैदा करते हैं। प्रमुख भारतीय शहरों में वायु प्रदूषण की बढ़ती चिंताओं के साथ दिवाली में पटाखों से उत्पन्न धुआं गंभीर वायु प्रदूषण में बदल जाता है। हम सभी दीवाली उत्सव के दौरान वायु प्रदूषण की स्थिति को सुधारने के लिए एक भूमिका निभा सकते हैं।

१. पटाखों से बचें या इसके उपयोग को सीमित करें हम में से कई लोगों के लिए पटाखे हमेशा दिवाली से जुड़े होते हैं, लेकिन वे शोर और जहरीला धुआँ पैदा करते हैं जो सेहत के लिए अच्छा नहीं है। तीव्र प्रकाश के साथ जो शोर होता है वह विशेष रूप से पक्षियों के लिए ठीक नहीं है। यदि हम पटाखे जलाने से बच नहीं सकते हैं तो इसके उपयोग को सीमित कर सकते हैं। पटाखों के उत्पादन के शोर से बचने के लिए हमें शोर और धुआँ पैदा करने वाले पटाखों से दूर रहना चाहिए। समुदाय आधारित आतिशबाजी में भाग लेने जैसे ज़िम्मेदार तरीके से पटाखों को जलाना चाहिए।

२. पर्यावरण के अनुकूल मिट्टी के दीयों (लैंप) का उपयोग करना चाहिए। ये दीये न केवल सुंदर हैं, बल्कि आपके घरों और कार्यालयों को पारंपरिक रूप देते हैं।

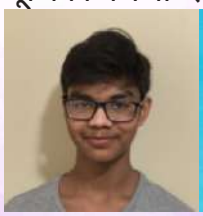

श्लोक गांगुली कक्षा ७ के छात्र हैं। वे १३ साल के हैं और क्रौसरोड मिडल स्कूल मे जाते हैं। श्लोक को भारतीय संगीत की बहुत जानकारी है। श्लोक को कराटे में ब्लैक बेल्ट मिला हुआ है। इसके साथ साथ श्लोक तैराकी में भी निपुण हैं।

भारत एक विविधता पूर्ण देश है जिसका प्राकृतिक सौन्दर्य आश्चर्यजनक है। भारत के पहाड़, नदियाँ, जानवर आदि बहुत शोभायमान हैं और भारत को अनोखा बनाते हैं। इस अनुपम प्राकृतिक सौन्दर्य का कारण है भारत के लोगों की धारणाएं और विचारधारा। भारतीय संस्कृति में जानवर, पशु, पक्षी, पेड़, पौधों आदि का सम्मान और आदर किया जाता है। जैन धर्म के लोगों का मानना है कि संसार में हर जानवर और पेड़ को इंसान की तरह जीने का हक है। वे किसी भी प्रकार की जीव हत्या का विरोध करते हैं। इसी प्रकार अन्य उदाहरण है कि कई गाँवों के आस पास भगवानों के लिए पवित्र बाग़ बने होते थे। केरल प्रदेश में साँपों के लिए अनेक छोटे-छोटे जंगल जिनका नाम सर्पकावू होता है, बनाए जाते थे। इसके साथ-साथ अयप्पनकावू, स्वामी अयाप्पन के लिए होता है। इन धारणाओं के पीछे हमारे पूर्वजों की एक सोची समझी हुई नीति थी। उन्होंने इन नीतियों के माध्यम से मनुष्य और प्रकृति के बीच के सम्बन्ध को संरक्षित रखा। यही कारण है कि गाय, सर्प, बरगद, तुलसी आदि का सम्मान भारतीय संस्कृति की पहचान है।

पर्यावरण और हमारे पर्व

नमस्कार, मेरा नाम अनन्या गुप्ता है, मैं हिंदी यू.एस.ए. स्टैमफोर्ड में ए-२ कक्षा की छात्रा हूँ। यह लेख भारत वर्ष में मनाये जाने वाले विभिन्न पर्वों का पर्यावरण पर होने वाले प्रभाव के विषय में मेरे व्यक्तिगत अनुभव तथा विचारों को दर्शाता है।

मैं आप से हमारे यहाँ मनाये जाने वाले मुख्य त्योहारों के पर्यावरण पर होने वाले प्रभाव के विषय पर अपने विचार व्यक्त करना चाहूंगी।

हिन्दुओं का महान पर्व दीवाली बुराई पर अच्छाई की विजय है, अंधकार पर प्रकाश का आगमन हैं और यह श्री राम के चौदह वर्षों के वनवास के बाद दुष्ट राक्षस रावण की पराजय के बाद के उत्सव की कहानी है। मैं समय के साथ इस पर्व को मनाने में हुए परिवर्तन और उसके परिणामों पर चर्चा करना चाहूंगी

दीवाली खुशियों का त्योहार है, यह पूरे परिवार को एक साथ लाता है। ऐसे कई कारण हो सकते हैं कि एक परिवार के सभी सदस्य एक साथ समय नहीं बिता पाते, लेकिन दीवाली एक ऐसा पर्व है जो पूरे परिवार को एक साथ जोड़ता है।

दीवाली बुराई पर अच्छाई की विजय का त्योहार है, लेकिन आजकल जब हम दीवाली मनाते हैं तो हम अच्छाई से अधिक नुकसान कर रहे होते हैं। जैसे हमें देखना चाहिए कि पटाखों का उपयोग करते समय हम खुशी की तुलना में अधिक प्रदूषण और कचरा फैला रहे हैं। पटाखे जलाने के बाद आप पटाखे के बाहरी खोल के साथ क्या कर रहे हैं, या तो उसे वहीँ जमीन पर छोड़ देते हैं, या इसे बाहर फेंकते हैं। पटाखों से निकला धुआँ वातावरण को प्रदूषित करता है।

इसी तरह एक दूसरा महत्वपूर्ण त्यौहार है होली, जो पारस्परिक रूप से खुशियों का, नाचने गाने का और तरह तरह के पकवान खाने का त्योहार है। लेकिन इस में लोग कृत्रिम रंगो का प्रयोग करते हैं, जो पर्यावरण को दूषित करता है और स्वास्थ्य के लिए भी हानिकारक है। लोग इस तरह के त्योहारों पर जलसा करते हैं और प्लास्टिक और प्लास्टिक से बने प्लेट, ग्लास इत्यादि का उपयोग करते हैं जो कभी भी मिट्टी में विलय नहीं होती और पर्यावरण को प्रदूषित करती है।

लोग घर में बने शुद्ध पकवानों की जगह बाजार में बनी मिठाइयां और पकवान को भेंट करते हैं जो अशुद्ध होने के साथ-साथ स्वास्थ्य के लिए भी हानिकारक हो सकती हैं और बीमारियों का मुख्य कारण बनती है।

हम परिवर्तन ला सकते हैं। दीवाली पारंपरिक रूप से मिट्टी के दियों में तेल जलाकर घर के अंदर और बाहर प्रकाशित कर के मित्रों और परिवार को घर के बने पकवान, मिठाइयाँ वितरण कर के साथ-साथ मनाई जाती थी। हम फिर से उसी तरह से बिना पर्यावरण को प्रदूषित किए दीवाली मना सकते हैं। इसी प्रकार होली में फूलों से बने प्राकृतिक रंगों का प्रयोग कर वातावरण को प्रदूषित होने से बचा सकते हैं, तथा कृत्रिम रंगों से होने वाले स्वास्थ्य हानि से भी स्वयं को बचा सकते हैं।

वृक्ष लगाओ – पर्यावरण बचाओ- स्वस्थ जीवन पाओ

इन्दु श्रीवास्तव वर्षा गुप्ता

साउथ ब्रंसविक मध्यमा-१ से मैं, इन्दु श्रीवास्तव, वर्षा गुप्ता जी और युवा स्वयं सेवक अरुषि ठाकुर और नलिनी जैन आप सभी को प्रणाम करते हैं। भारतीय संस्कृति के अनुसार पर्यावरण पांच तत्वों से मिलकर बना है। ये पाँच तत्त्व – वायु, जल, अग्नि, पृथ्वी और आकाश हैं। हमारी कक्षा के विद्यार्थियों को जब यह बात बताई गई तो सब ने तय किया कि पता करें किस तरह पेड़-पौधों तथा वृक्षों से पंच तत्त्वों का संतुलन बनता या बिगड़ता है। आइये आप भी इस रोचक पहेली को समझें और पर्यावरण-रक्षा हेतु अपनी जिम्मेदारी के प्रति जागरूक हो जायें। साथ ही सभी विद्यार्थियों ने मध्यमा-१ स्तर के शब्द-ज्ञान का भी भरपूर उपयोग करने का जो प्रयास किया है उसे भी आप सब सराहिये।

वृक्षों का वायु तत्व के लिए योगदान: ऋषि ठक्कर, पार्थ मेहता, श्रेया शाह

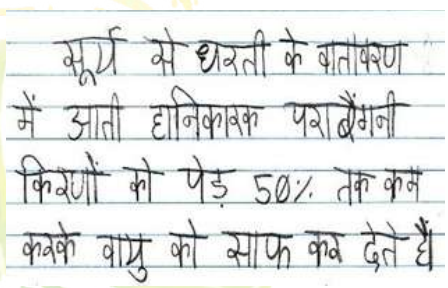

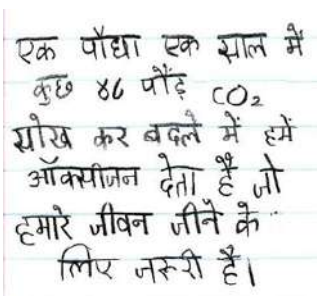

वृक्षों का पृथ्वी तत्व के लिए योगदान: अनन्या गुप्ता, ऋषि ठक्कर, आरुष कुंडू, गौरी चौहान

पेड़ और घास अपनी जड़ों से, धरती की मिट्टी को गहरे तक पकड़ कर रखने में और मिट्टी के कटाव को रोकने में बहुत सहायक हैं।

पेड़ों की घनी छाँव और भूमि पर गिरी पत्तियां मिट्टी की नमी बनाये रखते हैं।

पेड़ से गिरे फल, पत्ते, बीज, लकड़ी (टहनियाँ) गल कर धरती और खेतों को उपजाऊ बनाते हैं।

जंगलों को जलाकर जानवरों और खेती के लिए साफ मैदान बनाये जा रहे हैं। इसे रोका जाना चाहिए। इससे धरती बंजर हो रही है।

वृक्षों से इको-फ्रेंडली (पर्यावरण-अनुकूल) ऊर्जा पैदा कर, हम जहरीले फॉसिल फ्यूल (जीव अवशेष ईंधन) के उपयोग को कम कर सकते हैं।

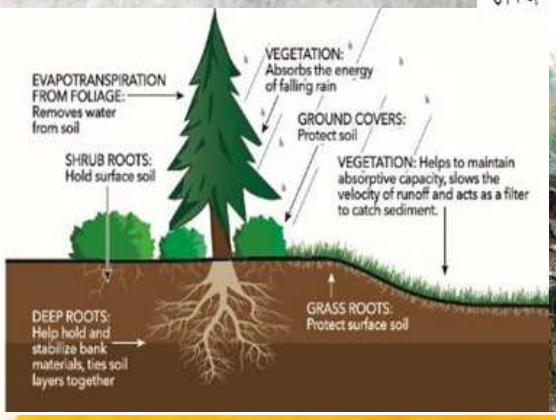

वृक्षों का अग्नि तत्व के लिए योगदान: पार्थ मेहता, प्रणव ओझा, प्रिथा जानकीरमन

पेड़ हवा में वाष्प देकर वायुमंडल का तापमान कम कर देते हैं। सड़कों, इमारतों को ठंडा करने का प्राकृतिक बढ़िया तरीका पेड़ों की घनी छाया हैं।

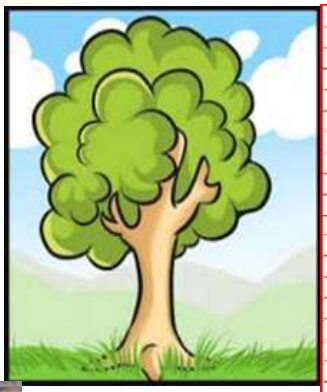

हम से, कार (वाहन), फैक्ट्री आदि से, वातावरण में फैली कार्बन डाइऑक्साइड का उपयोग कर पेड़ ग्रीनहाउस प्रभाव को कम करने में मदद करते हैं। कुछ शोध के अनुसार अधिक पेड़, वन या जंगल वाले क्षेत्रों की तुलना में शहरी क्षेत्र 9 डिग्री अधिक गरम होते हैं।

पेड़ों के अति अधिक कटाई से संसार का तापमान बहुत बढ़ रहा है। इससे ध्रुवीय बर्फ तेजी से पिघल रही है। इससे जल स्तर बढ़ रहा है जो कि बाढ़, सुनामी आदि विपदा का कारण बन गया है।

वृक्षों का जल तत्व के लिए योगदान: कीर्तना अय्यर, औगध कृष्णा, सिद्धांत सिंह

पेड़ और जंगल, जल चक्र (वाष्प, घनीकरण, बारिश, संचय) में अहम भूमिका निभाते हैं। वृक्ष बारिश का 60% पानी वातावरण में वाष्प के रूप में वापस लौटाते हैं। पेड़ पौधों के कारण रुका हुआ करीब 1,000 गैलन पानी प्रतिवर्ष धरती के नीचे जमा होता है या छनकर नदी, झील, तालाब आदि में वितरित हो जाता है।

पेड़ों की पत्तियां, तना, टहनियाँ और जड़ें सभी अपने अनोखे ढंग से तूफानी, बरसते पानी को रोक कर बाढ़ और भूमि को खिसकने से बचाते हैं।
मेघालय में, जल स्रोत से दूर के खेतों की सिंचाई में बांस का उपयोग एक प्राकृतिक साधन और समाधान के रूप में हो रहा है।

वृक्षों का आकाश तत्व के लिए योगदान: यश्वी ठाकुर, दिवा चोपड़ा, गौरी चौहान, साईचरण नरेंद्रन

पर्यावरण और जीवन के लिए पेड़ के सभी अंग काम आते हैं। रोटी (चावल, दाल, गेहूं), कपड़ा (रुई), मकान (लकड़ी), बढ़िया फल (सेब, आम, केला), फूल (गुलाब), सब्जी (करेला, गोभी), पत्तियां (तुलसी), जड़ (आलू, मूली) आदि सब तो पेड़ों से मिलते हैं।

धरती पर जीवन, और पर्यावरण संरक्षण पेड़ों पर टिका है। पेड़ बहुत सारे पशु, जानवर, चिड़िया आदि के घर होते हैं।

पेड़ से आप दिल की बातें कर सकते हैं। कुछ शोध से पता चला है कि पेड़ों के पास रहकर मनुष्य में बेहतर ध्यान, शांति, और आध्यात्मिक गुणों का विकास होता है। जैसे बुद्ध को बोधि वृक्ष के नीचे तप करके मोक्ष मिला था।

हरा रंग आँखों और नेत्र ज्योति के लिए सुखद होता है।

"इसीलिए वृक्ष पर्यावरण के मित्र हैं। जब भी जन्मदिन मनाओ, एक पौधा भी लगाओ और पर्यावरण बचाओ!"

चैरी हिल पाठशाला - कनिष्ठ २

कक्षा शिक्षिकाएँ - सोनल जोशी, हेमांगी शिंदे

धरती हमारी माता है, माता को प्रणाम करो
बनी रहे इसकी सुंदरता, ऐसा भी कुछ काम करो।

कवयित्री सीमा सचदेव की ये पंक्तियाँ सही मायने में तभी खरी होंगी जब हम सब मिल जुल कर पर्यावरण की रक्षा के लिए अपना योगदान देंगे। "कचरे का बादल" इस कहानी के माध्यम से हमने बच्चों को पर्यावरण के महत्व से अवगत कराया और छोटी उम्र से ही हम किस प्रकार अपनी धरा को स्वच्छ और प्रदूषण मुक्त रखने में सहायता कर सकते हैं, ये जानने की कोशिश की। बच्चों ने इस बातचीत में बहुत उत्साह से भाग लिया और अपने विचार व्यक्त किए। परियोजना के तौर पर उन्हें वस्तुओं का पुनरुपयोग कर कुछ चीज़ें बनाने को कहा गया था। बच्चों और अभिभावकों को न केवल इन रचनात्मक आविष्कारों को बनाने में मज़ा आया, बल्कि बच्चों ने बड़े गर्व से इन्हें कक्षा में प्रस्तुत भी किया।

पर्यावरण की रक्षा में वृक्षों का योगदान

हिंदी पाठशाला: साउथ ब्रुंस्विक, कक्षा: मध्यमा-१-अ शिक्षिक: पुनीत माहेश्वरी, अदिति माहेश्वरी

मेरा नाम आयुष भट है। मैं १० साल का हूँ। मैं साउथ ब्रुंस्विक हिंदी पाठशाला, माध्यमा-१ में पढ़ता हूँ। मैं दूसरी कक्षा तक भारत में पढ़ता था। जब मैं भारत से अमेरिका आया तो मुझे अपनी भाषा सीखने एवं बोलने का अवसर नहीं मिल रहा था। हिंदी यू.एस.ए. ने इस कमी को पूरा कर दिया। मैं जब मध्यमा-१ कक्षा में आया तो हिंदी कठिन लग रही थी पर मेरी शिक्षिका ने मुझे अच्छे से सिखाया और बहुत प्रोत्साहित किया। मैं अब नए नए शब्द सीख रहा हूँ और हिंदी में बातचीत करने लगा हूँ। यह मेरे लिए बहुत सुंदर अनुभव रहा। भारत से दूर रहकर भी न्यू जर्सी में सब त्योहार मनाने को मिल रहे हैं। कविता पाठ प्रतियोगिता में भाग लेकर भी मुझे बहुत अच्छा लगा। मुझे यह अनुभव और अवसर देने के लिए मैं हिंदी यू.एस.ए. परिवार का बहुत आभारी हूँ।

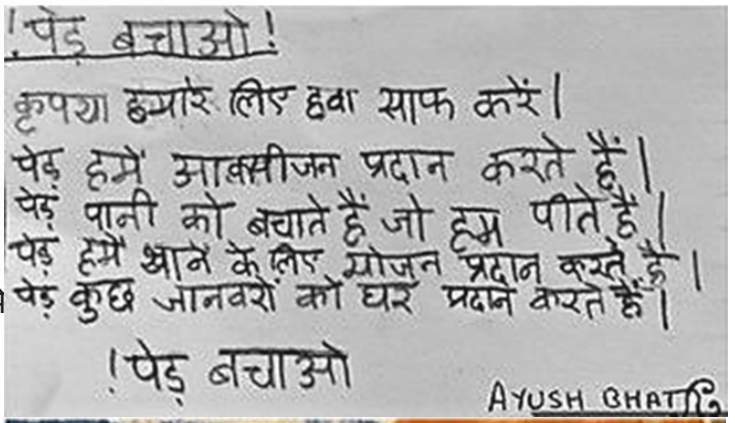

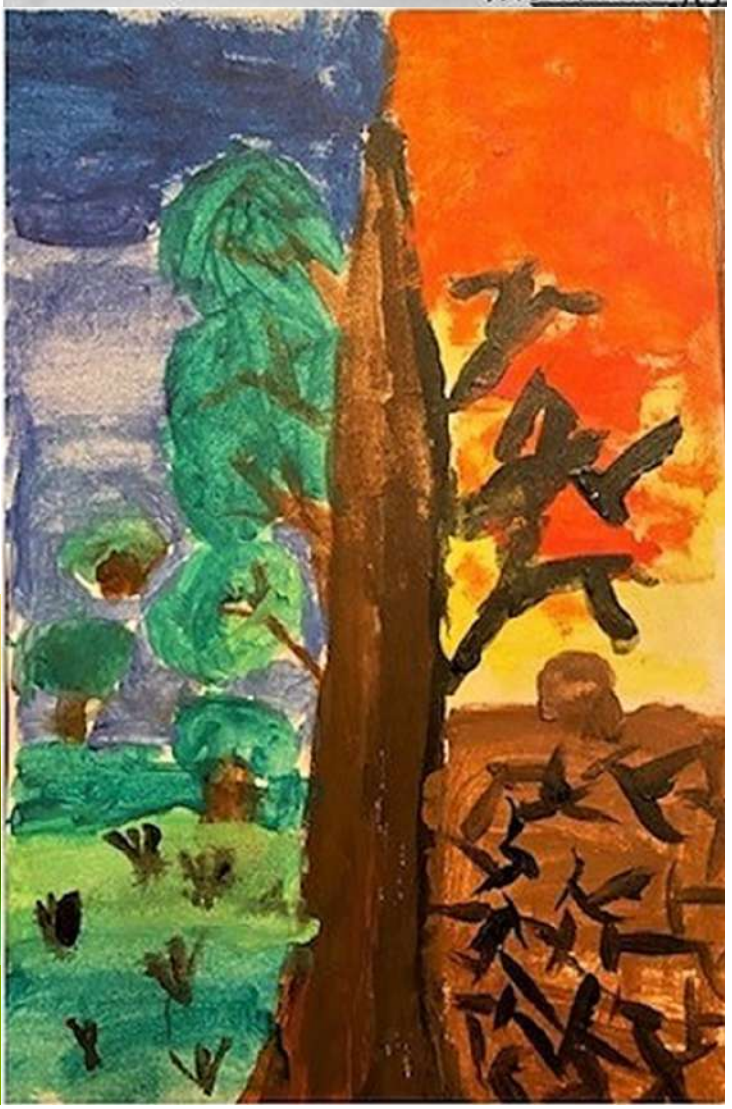

पेड़ की रक्षा, भविष्य की सुरक्षा

PIC·COL

पर्यावरण की रक्षा में वृक्षों का योगदान

साउथ ब्रंसविक पाठशाला से वंदना खुराना जी और नूपुर हर्बोला जी की मध्यमा-१ कक्षा के बच्चों ने यहाँ आपके लिए इस लेख में पर्यावरण की रक्षा में वृक्षों के योगदान पर एक सुन्दर संदेश दिया है। बच्चों के इस संदेश से हमें प्रेरणा मिलती है कि वृक्ष हमारे पर्यावरण का एक अभिन्न अंग हैं और ये पर्यावरण को बनाये रखने के लिए अति आवश्यक हैं। वृक्षों को सुरक्षित रखना मानव जाती का कर्तव्य है। आइये आज हम सब मिलकर इन बच्चों की सोच देखकर यह प्रण लें कि हम पर्यावरण की रक्षा में अपना योगदान देते रहेंगे जिससे आने वाली पीढ़ी के लिए पर्यावरण सुरक्षित रख सकें। जय हिन्द।

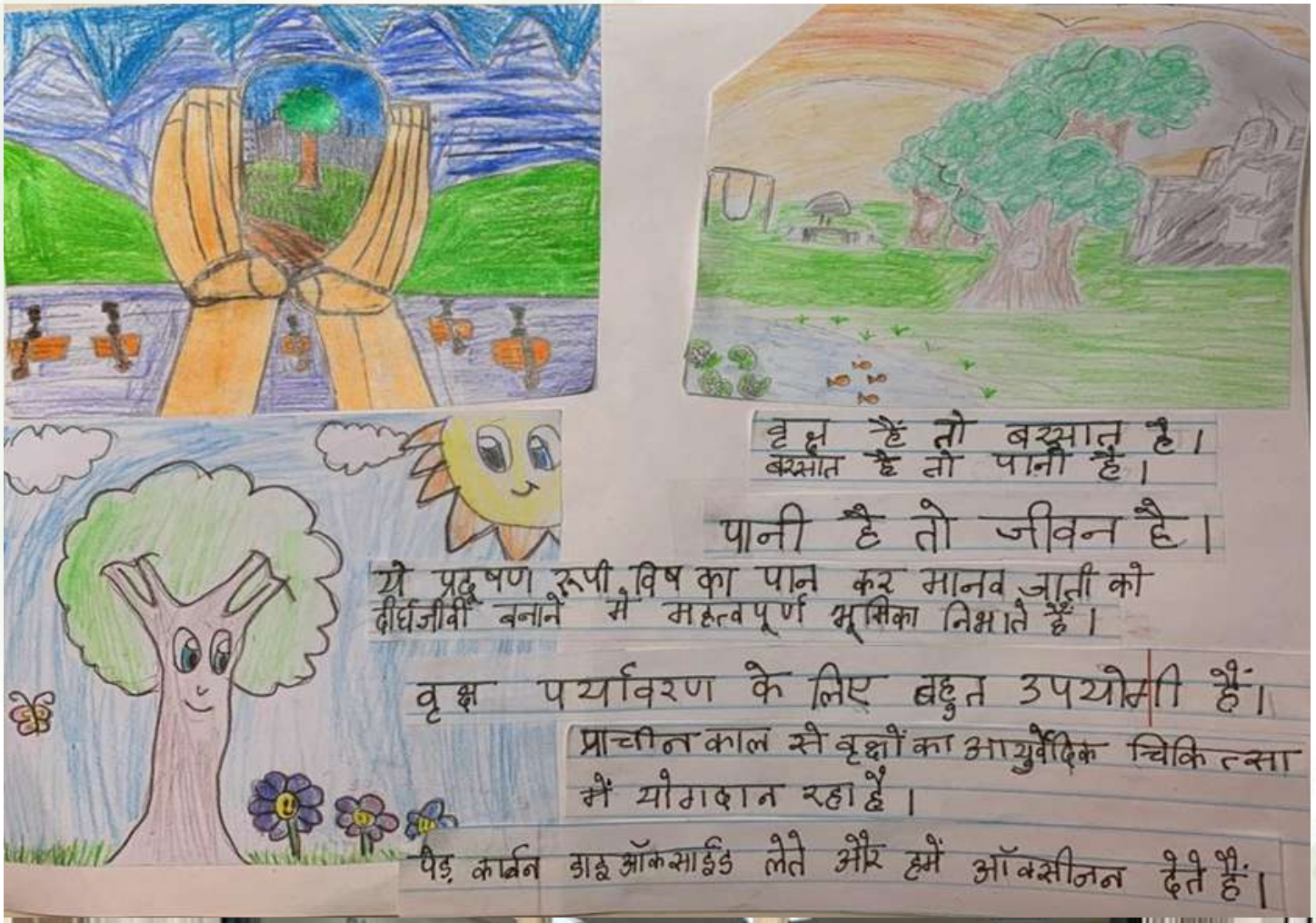

छात्र: आद्य खरे, आन्या मानकीवाला, अक्षय गारपाटी, भक्ति जैस, देवांशी त्यागी, ध्रुवी सोनजी, आयरा बहल, पहल अग्रवाल, राघवन गोपीकृष्णन, ऋषभ दत्ता, ऋत्विक देसाई, सार्थक राओ, तनय बाविस्कर, वेदांत वेंकटेश |

पर्यावरण की रक्षा में वृक्षों का योगदान

ईशा सेठ

ईशा चौथी कक्षा की छात्रा हैं और वे कोल्ड स्प्रिंग स्कूल में पढ़ती हैं। ईशा को फिगर स्केटिंग, पियानो बजाना तथा बास्केटबॉल खेलना बहुत पसंद है।

रिया बेरी

रिया, डैनिएल्स फार्म स्कूल की पाँचवीं कक्षा की छात्रा हैं। रिया की बहुत सारी रुचियाँ हैं - जैसे कि - संगीत, लिखना और तैरना। उसे पड़ी हुई कुछ अप्रयुक्त चीज़ों से कुछ उपयोगी वस्तु बनाना बहुत पसंद है।

पेड़ पर्यावरण के लिए बहुत जरूरी हैं क्योंकि वे हमें ऑक्सीजन देते हैं। ऑक्सीजन के बिना हर साँस लेने वाला जानवर और पौधा मर जाएगा। बहुत लोग महसूस नहीं करते कि पेड़ कितने जरूरी हैं और वे इस बारे में नहीं सोचते हैं कि पेड़ उनके लिए क्या करते हैं। पेड़ जानवरों की बहुत मदद करते हैं। पेड़ों के बिना गिलहरी का कोई घर नहीं होता। चिड़ियों के पास अपने घोंसले बनाने के लिए कोई जगह नहीं होती और उनकी एक जरूरी वस्तु नहीं होती, और वह है - पेड़ की शाखाएँ।

पेड़ हमें बहुत सारा खाना भी देते है। अगर पेड़ नहीं होते तो हमारे पास बहुत सारे फल नहीं होते। पेड़ धरती को सुंदर बनाते हैं। यदि हमारे पास पेड़ नहीं होंगे तो हमारे उपवन खाली लगेंगे। मैं सोचती हूँ कि लोगों को पेड़ों की देखभाल करनी चाहिए और कम से कम कागज और पेड़ों से बनी चीजों का उपयोग करना चाहिए। पारिस्थितिक तंत्र में पेड़ों का एक बड़ा हिस्सा है और हमें उनकी रक्षा करनी चाहिए जितनी हम कर सकते हैं।

भूकंप, बाढ़, सुनामी या फिर जंगली आग - यह सब कुछ प्राकृतिक आपदाएं हैं। ये सभी आपदाएं सम्पूर्ण और समस्त जीवों पर असर करती हैं। पर कभी सोचा है कि यह सब आपदाएं कैसे उत्पन्न होती हैं - पर्यावरण के असंतुलित होने से, जिसमें वृक्षों का बहुत बड़ा योगदान है। पेड़ हमें ऑक्सीजन देते हैं और सारा कार्बन डाइऑक्साइड ले लेते हैं। यह स्वच्छ हवा हमारे पर्यावरण के लिए बहुत ज़रूरी है। न केवल इस से हम सब जीव जंतु फलते फूलते हैं पर इस से प्रदूषण भी संतुलन में रहता है। यदि हम पर्यावरण का साथ देंगे तो वह भी हमारा साथ देगा। यही कुदरत का नियम है।

हम सब को सारे पर्यावरण को संतुलन में रखने के लिए केवल एक काम करना है - पेड़ों की रक्षा। एक शुरुआत तो हम सब मिलकर कर सकते हैं। अपने जन्म दिन पर कम से कम एक पेड़ लगायें - एक छोटा कदम, बड़ी सोच और बड़े परिवर्तन के लिए।

"आओ बच्चों के साथ मनाएँ त्योहार, स्वस्थ जीवन के लिए दें एक पेड़ उपहार"

इरा मल्होत्रा

इरा तीसरी कक्षा की छात्रा हैं और वे डैनिएल्स फार्म स्कूल में पढ़ती हैं। इरा को कलाकारी (जैसे चित्रकारी) में बहुत रुचि है। उसको अपनी बहन और अपने कुत्ते (हीरो) के साथ खेलना भी बहुत पसंद है। उसका सबसे प्रिय विषय गणित है और उसको भिन्न-भिन्न प्रकार की किताबें पढ़ने में बहुत रुचि है। उसको बाहरी खेलों में भी बहुत रुचि है और उसे बड़े होकर एक "अध्यापिका" बनना है।

सर्व प्रथम पेड़ ऑक्सीजन देते हैं और हमें ताज़ी हवा देते हैं। ये न केवल कार्बन डाइऑक्साइड अपनी लकड़ी में अवशोषित करते है बल्कि हमें ग्लोबल वार्मिंग से भी बचाते हैं। यह सम्पूर्ण विश्व में जीव जंतुओं को घर, खाना, रहना और कई उपयोगी चीज़ें भी प्रदान करते हैं पेड़ हमारे विश्व के लिए बहुत ज़रूरी हैं। कृपया पेड़ों का पोषण करें और जितना हो सके उतने पेड़ लगाएं।

पावनी व्यास

पावनी आठवीं कक्षा की छात्रा हैं और वे फ़ैयरफ़ील्ड के रोजर लदलोव स्कूल में पढ़ती हैं। उसे काल्पनिक कहानियाँ पढ़ने में तथा चित्रकारी करने में काफ़ी रुचि है। पेड़ पर्यावरण के लिए बहुत ज़रूरी हैं क्योंकि वे हमारे लिए बहुत कुछ करते हैं। सबसे ज़रूरी कार्य है - कार्बन डाइऑक्साइड को बदल कर ऑक्सीजन का निर्माण करना। इससे ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में कमी तथा ग्लोबल वर्मिंग में भी कटौती होती है। इस सुंदर प्रकृति में पेड़ बहुत प्रकार के जानवरों का भी आवास बनते हैं और उनकी उपस्थिति तथा उनका अध्ययन करने में केवल आनंद ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण पर्यावरण और इससे जुड़े पारिस्थितिकी तंत्र भी संतुलन में रहता है।

गर्मियों में पेड़ सभी जीव जंतुओं को बहुत सुंदर छाया भी देते हैं एक और ज़रूरी काम जो पेड़ करते हैं वो है मिट्टी के कटाव (soil erosion) को रोकना - जिससे बाढ़ काफी हद तक रुक सकती है। पेड़ बहुत ज़रूरी हैं और हमें इनको काटना नहीं चाहिए।

पर्यावरण संरक्षण: कक्षा-कार्य

मनीषा श्रीवास्तव - प्रथमा १ शिक्षिका, नार्थ ब्रुंस्विक पाठशाला

मेरी कक्षा में जब सभी बच्चों से मैंने कर्मभूमि के लिए कचरे का सदुपयोग (फेंके गए सामान से उपयोगी वस्तुएँ बनाना) विषय पर उनके सुझाव पूछे तो उन्होंने बहुत से ऐसे सामान बताये जिसे हम बना सकते थे, जैसे: गत्ते का पेंसिल होल्डर, दीवार घड़ी और पक्षियों के दाना चुगने का घर आदि। फिर सभी ने मिलकर तय किया कि वे पक्षियों के दाना चुगने का घर बनाएंगे। इस कक्षा कार्य में सभी बच्चों ने बहुत खुशी और उत्साह से भाग लिया। कार्य में मुख्य सामान था - जूस/दूध के गत्ते के डिब्बे।

चेरी हिल पाठशाला - मध्यमा-१

शिक्षिकाएँ - वंदना वर्मा, चारु खुराना

बच्चों ने इस बार पर्यावरण के बारे में बहुत कुछ सीखा और हमें सिखाया।
प्रस्तुत हैं उनके काम की कुछ झलकियाँ।

आरुश वर्मा

पेड़ों से औषधियाँ बनती हैं। पेड़ों से पर्यावरण साफ़ रहता है।

सुदीप्ति

१. पेड़ कार्बन डाइऑक्साइड लेकर और ऑक्सीजन निकालकर पर्यावरण की मदद करते हैं।
२. पेड़ कई जानवरों को आश्रय भी देते हैं।

- पेड़ हमें ताजी हवा देकर पर्यावरण की मदद करते हैं।
- पेड़ हमें छाया और फल भी देते हैं। - वशिष्ठ

अनिका साँड़िल्य

पेड़ पर्यावरण से गरमाहट हटा कर हमें ठंडक पहुँचाते हैं। पेड़ हवा को साफ कर के हमें साँस लेने में मदद करते हैं।

ख़ुशी खुराना

अंश सोनी

पेड़ हवा को साफ करते हैं। चिड़िया और जानवर पेड़ पर रहते हैं।

प्रचेत पाध्य

पेड़ हवा को शुद्ध बनाते हैं और बाढ़ रोकते हैं।

अनन्या

ईश्वर का वरदान है पेड़
वातावरण की शान हैं पेड़
मानव की साँस है पेड़
मत तुम इनको काटो

हर्ष शिंदे

बरगद का पेड़ भारत का राष्ट्रीय वृक्ष है। यह घनी छाया और शुद्ध हवा देता है। इस पेड़ से कई दवाइयाँ भी बनाई जाती हैं। इस पेड़ की आयु बहुत बड़ी होती है।

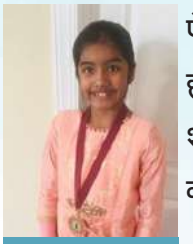

निधि बांगड़

पेड़ हमें अच्छी हवा देता है और शीतलता प्रदान करता है।

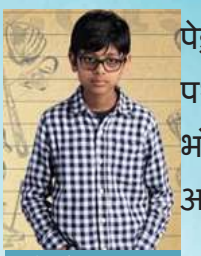

रेयांश गुप्ता

पेड़ मनुष्य और पशुओं के भोजन का आधार है

मीता चतुर्वेदी और शिवि गुप्ता

चेरी हिल का पर्यावरण प्रोजेक्ट

इस साल चेरी हिल के प्रथमा-२ के छात्रों ने एक दिलचस्प प्रोजेक्ट किया। बच्चों ने चित्रों के माध्यम से घर के कमरे दिखाए और साथ ही यह भी दिखाया है कि उन कमरों में उन्होंने उपयोग किये गए कागज़ और प्लास्टिक को किस तरह से रिसायकल किया है, जिस से हमारा पर्यावरण सुरक्षित रहे। इसके अलावा कमरों में सुन्दर पौधों से सजावट तो की ही है, साथ में घर की हवा को तरोताज़ा भी किया है। देखिये उस प्रोजेक्ट का एक सुन्दर पोस्टर।

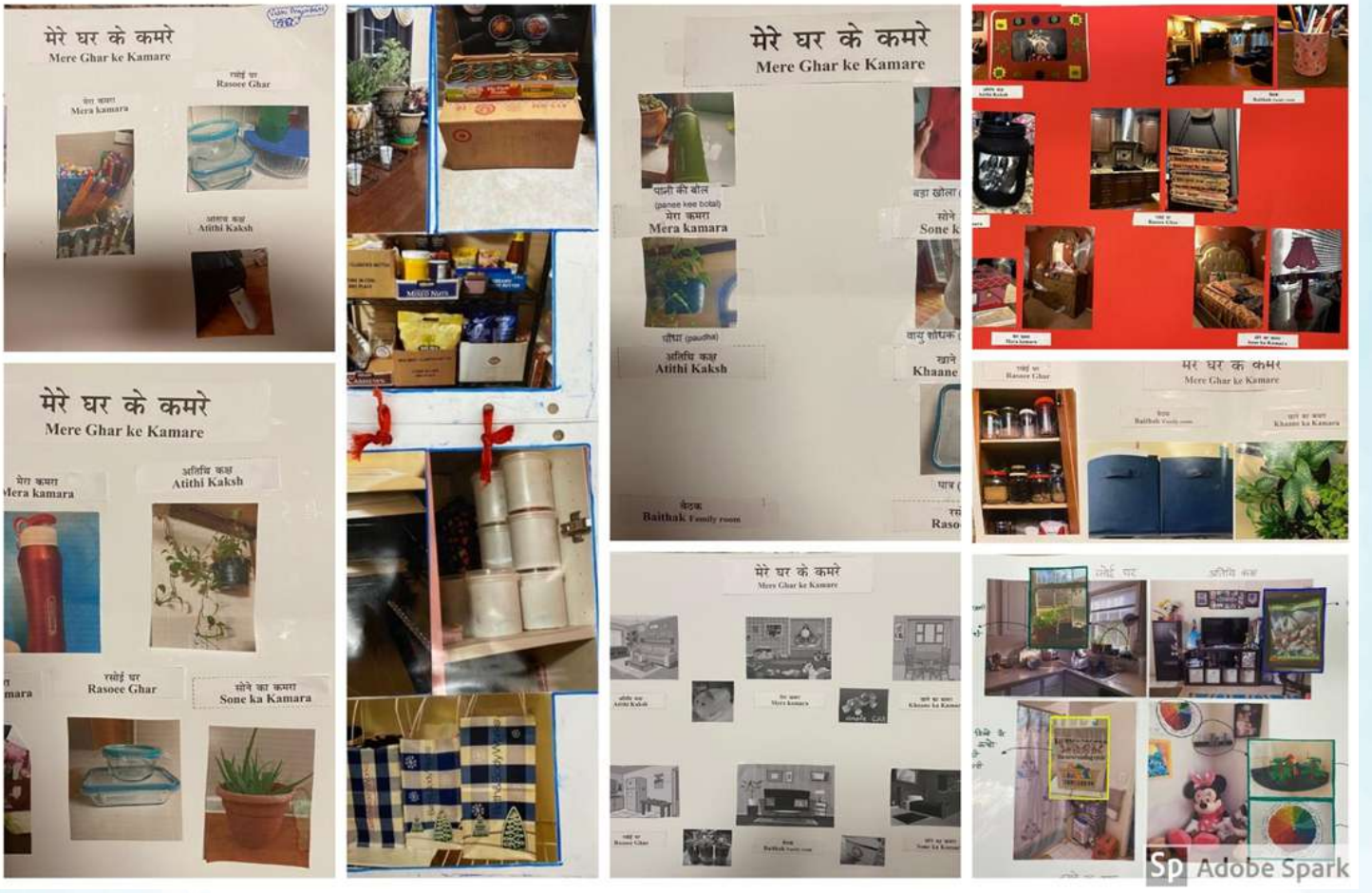

जल संरक्षण - जरूरत भी और कर्तव्य भी

जल नहीं तो कल नहीं। पूरे ब्रह्माण्ड में पृथ्वी ही इकलौता ऐसा ग्रह है जहाँ पानी और जीवन मौजूद है, इसीलिए यह बहुत सुन्दर और अनूठा है। वर्तमान में बढ़ते जल संकट के कारण हमारा अस्तित्व खतरे में है। एक जिम्मेदार नागरिक होने के नाते, जल संकट और इससे सम्बन्धित सभी समस्याओं के बारे में हमें अपने आपको जागरूक रखना चाहिये तथा उनके समाधान का उपाय भी करना चाहिए। प्लेंसबोरो मध्यमा-२ के बच्चों ने इस विषय पर अपने विचार कुछ इस तरह प्रस्तुत किए हैं। कक्षा की अध्यापिकाएँ ममता त्रिवेदी और सीमा वशिष्ठ हैं।

जल के बिना जीवन नहीं हो सकता है। हमारे जीवन के सभी रोज के कामों के लिए जल की आवश्यकता होती है। जल संरक्षण का मतलब है जल को कैसे बचाये। हम अपने नित्य के कामों में कुछ बदलाव करके जल संरक्षण कर सकते हैं।

1. जब जरूरत हो तभी नल को चलाये और कार्य समाप्त होने पर नल बंद कर दें।
2. बरसात के पानी को बाल्टी या एक बड़े टब में रखकर जरूरत पड़ने पर पौधों को दे सकते हैं।
3. फलों और सब्जियों को खुले नल के बजाय भरे हुए पानी के बरतन में धो सकते हैं।

जल संरक्षण का फल हमारी भविष्य को पीढ़ियों को मीठा मिलेगा। - रिद्धिमा पाण्डेय

पानी को बचाना जरूरी है क्योंकि यह हमें जीवित रखता है तथा जानवरों और पौधों को भी।
हम दांतों को साफ करते समय नल को खुला न रखें। पानी को बोतलों में भर कर रखें। - वैष्णवी पप्पू

जल ही जीवन है। धरती पर जीवित रहने के लिए सभी जानवर, पशु, पक्षियों, मनुष्य, पेड़ और पौधों को पानी की जरूरत है। पृथ्वी पर ७१% पानी है लेकिन हम केवल ३% पानी का ही उपयोग कर सकते हैं इसलिए पानी को बचाना आवश्यक है। हमारी आबादी बढ़ रही है और मनुष्य पानी का दुरुपयोग करता है इस वजह से भविष्य में हमें पानी की कमी की समस्या होगी।
जल बचाये, जीवन बचाये। - राज विधले

प्रदूषण से पीने का जल समाप्त हो रहा है। जल के बिना हम सब मर जायेंगे। हम खेती नहीं कर सकते हैं। हम बारिश का जल बचाकर जल संरक्षण कर सकते हैं। - काव्या नायक

हमें प्रदूषित जल का शुद्धिकरण करके उसका पुनः उपयोग करना चाहिए। नहाने, खाना बनाने की क्रिया में कम जल का उपयोग करना चाहिए। हम अधिक पेड़ लगाकर और वनों की रक्षा करके भी जल संरक्षण

कर सकते हैं। वनों की कटाई से भूमिगत जल की हानि होती है। - रोमिर महाजन

जल ही जीवन है। जल की कमी हमारे पर्यावरण में न हो इसलिए जल को बचाना आवश्यक है। अगर हम रोज की गतिविधियों में थोड़ा बदलाव लायें तो हम जल संरक्षण कर सकते हैं जिससे हमारी आने वाली पीढ़ियों को जल की समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा– आरव कुमार

हम नलों में यन्त्र या उपकरण लगाकर अतिरिक्त पानी की बर्बादी रोक सकते हैं। अगर कहीं पानी का रिसाव हो रहा हो तो उसे भी तुरन्त ठीक कराना चाहिए। हम रेन वाटर हारवेस्टिंग भी कर सकते हैं जिससे बारिश के पानी का उचित प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार हम जल संरक्षण कर सकते हैं। - वन्दना रौब्बी

पानी के संरक्षण से हम पृथ्वी का संरक्षण कर सकते हैं। पानी का संरक्षण करना अति महत्वपूर्ण है क्योंकि यह पृथ्वी पर जीवन के लिए आवश्यक है। जहाँ भी पानी की बर्बादी हो रही हो उसे रोकना चाहिए। हालाँकि हमारे पास पानी की प्रचुरता है, फिर भी हमें सचेत रहना पड़ेगा तभी हम प्राकृतिक संसाधनों को बर्बाद होने से बचा सकते हैं। - तन्वीश्री मुनगाला

पृथ्वी पर ३% से कम ताजे पानी की आपूर्ति है। ५ मिनट की बौछार में १५ से २५ गैलन पानी उपयोग होता है। औसत स्नान में ३७ गैलन पानी की आवश्यकता होती है। रिसावयुक्त नल एक दिन में १० से १०० गैलन पानी बर्बाद कर सकता है। इस तरह की पानी की बर्बादी को रोककर हम जल का संरक्षण कर सकते हैं। - अनुश्री मुनगाला

पानी की कमी का मुख्य कारण है बेहिसाब बढ़ती हुई जनसंख्या और शहरीकरण। हम जागरूक रहकर और अपने जीवन में थोड़ा बदलाव लाकर जल संकट से बच सकते हैं। फ़ैक्ट्री और कारख़ानों से निकलने वाले गंदे पानी को ठीक तरह से निष्कासित करना चाहिए जिससे नदियों का साफ़ पानी गंदा न हो। जल संरक्षण के महत्व को समझें और आने वाली पीढ़ियों के लिए बेहतर ग्रह छोड़ कर जाये।- अनुष्का शर्मा

जल संरक्षण में पर्यावरण का योगदान

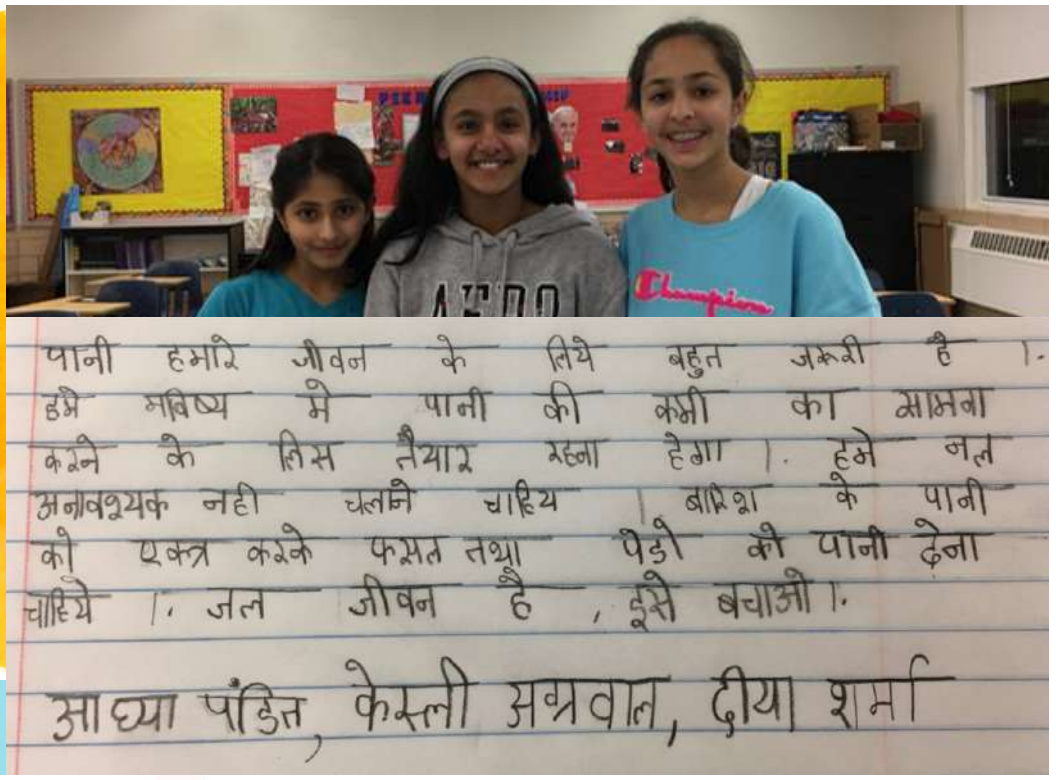

लॉरेंसविल, मध्यमा-२

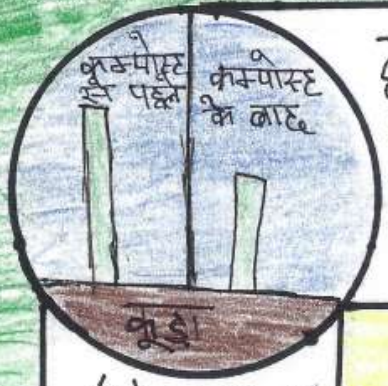

पर्यावरण के संरक्षण मे
कम्पोस्ट का योगदान
वरदान कटोच
मध्यमा - २
ईस्ट ब्रंस्विक
कम्पोस्ट से पहले
कम्पोस्ट के बाद
कूड़ा
हमे कम्पोस्ट (कूड़े की खाद) इसलिए करना चाहिए क्योंकि यह पर्यावरण के लिए अच्छा हैं!
यह खाद कूड़े को कम करता है। और यह कम्पोस्ट बनाने का सबसे सरल तरीका है।
खाद मिट्टी मे सूक्ष्म जीव के साथ जैविक अपशिष्ट संयोजन का एक तरीका है। यह बहुत अच्छी उपजाऊ मिट्टी बनाता है।
पौधे चुने
सामग्री डाले
पानी डाले
हिलाते रहे
इंतजार करे
खाद ढेर मे डालने के लिए अच्छी चीजे है पुराने फल, सब्जिया और कुछ भी जो जैविक हो।

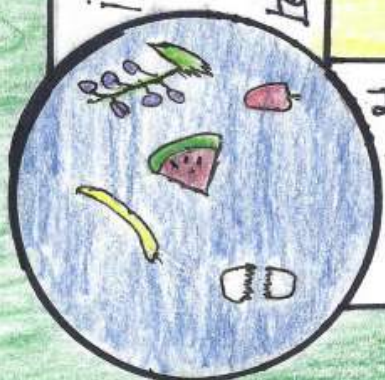

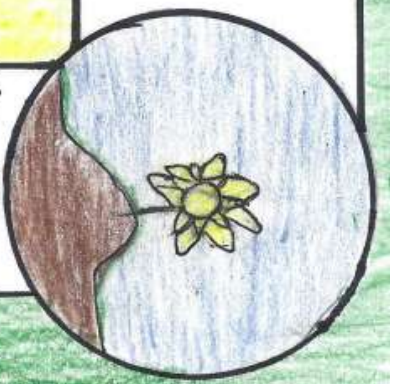

जल संरक्षण के सुझाव

जर्सी सिटी पाठशाला — मध्यमा-२

जीवन की निरंतरता के लिए जल आधारभूत आवश्यकता है। जल का स्तर दिन प्रतिदिन घटता जा रहा है और अगर हमने इसको संरक्षित करने के प्रयास नहीं किए तो आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ जल नहीं मिल पायेगा। जल संरक्षण के लिए निम्नलिखित कुछ सुझाव हैं जो जल संरक्षण में प्रभावकारी हो सकते हैं-

१) वर्षा जल को आधुनिक तकनीकियों द्वारा हर घर में संरक्षित करने के उपकरण लगवाने चाहिए जिससे बारिश के पानी का सदुपयोग घर के कार्यों में किया जा सके। अगर उपकरण नहीं लगवा सकते हैं तो बाल्टी रख कर वर्षा जल को एकत्रित कर इस्तेमाल में लेना चाहिए।

२) जब हम मंजन करते हैं तो हमें नल को बंद कर देना चाहिए। जब हम नहाते हैं तो हमको तीन मिनट की सीमा रखनी चाहिए जिससे पानी व्यर्थ न बहे।

३) पानी पीते समय उतना पानी लो जितनी प्यास हो।

४) आपके घर में अगर कोई नल या छत कभी लीक करे तो उसे तुरंत ठीक करवाएं। नल या छत के नीचे एक बाल्टी रखें और उस पानी का प्रयोग घर की साफ़ सफ़ाई या बगीचे के पौधों के लिए उपयोग करें।

५) पुरानी वॉशिंग मशीन को बदलना हो तो कम पानी उपयोग करनी वाली मशीन ख़रीदें। आजकल की नवीन डिज़ाइन वाली मशीनें १ भरे हुए लोड के लिए १३ गैलन पानी उपयोग करती हैं। बीस साल पुरानी मशीनें ४० गैलन पानी उपयोग करती थीं। इससे पानी और बिजली दोनों की बचत हो सकती है। अनुचित डिटरजेंट का इस्तेमाल करें। अधिक डिटरजेंट डालने से अधिक पानी का उपयोग होता है।

६) अपने स्नानघर के गीज़र में से पहले ठंडा पानी आता है और फिर गरम पानी बहने लगता है। हम आम तौर पर ठंडा पानी पहले बहने देते हैं। ऐसा नहीं करें, ठन्डे पानी को एक बाल्टी में भरें, फिर गर्म पानी को

दूसरी बाल्टी में भरें। पहली बाल्टी के ठंडे पानी का प्रयोग घर की साफ़ सफ़ाई या बगीचे के पौधों के लिए उपयोग करें।

७) जोरदार फ्लश के उपयोग से भी बहुत अधिक पानी का बह जाता है, इसलिए ऐसा फ्लश लगवाएं जिसमें पानी का बल कम हो।

८) टोईलेट के टैंक में एक पत्थर से भरी हुआ प्लास्टिक बॉटल रखें। इससे टैंक के भरने में पानी की बचत हो सकती है। कहा गया है कि इससे घरों में हर दिन १० गेलन की बचत हो सकती है। अगर नया टोईलेट खरीदना हो तो आजकल के नए टोईलेटों में कम और ज़्यादा प्रयोग करने वाले लीवर/ बटन भी होते हैं।

९) विद्यालयों में जल संरक्षण को लेकर जागरूकता बनाने के लिए अलग-अलग प्रोजेक्ट्स और वर्कशॉप्स का आयोजन प्रति माह किया जाना चाहिए।

१०) वृक्षारोपण को हर स्तर पर प्रोत्साहित किया जाना चाहिए जिससे अच्छी वर्षा हो।

जल संरक्षण का पर्यावरण में योगदान

साउथ ब्रंस्विक हिन्दी पाठशाला, मध्यमा-२, शिक्षिका: ऋचा खरे एवं पद्मजा पडेडा

मैं ऋचा खरे मध्यमा-२ की शिक्षिका हूँ और मेरी सहशिक्षिका पद्मजा पडेडा जी हैं। गत ८ वर्षों से हिन्दी यू.एस.ए. से जुड़ी हुई हूँ। "कर्मभूमि" के प्रकाशन के अवसर पर उत्सव जैसा ओजपूर्ण वातावरण मेरे मन और आत्मा को आनंदित कर रहा है। अपनी मातृभाषा और राष्ट्रभाषा से जुड़े रहना, इसके प्रचार-प्रसार के लिए अपने सामर्थ्य के अनुसार सहयोग करना मुझे बहुत प्रिय और रुचिकर लगता है तथा देश से जुड़े रहने का आभास देता है। आने वाली पीढ़ियाँ भी

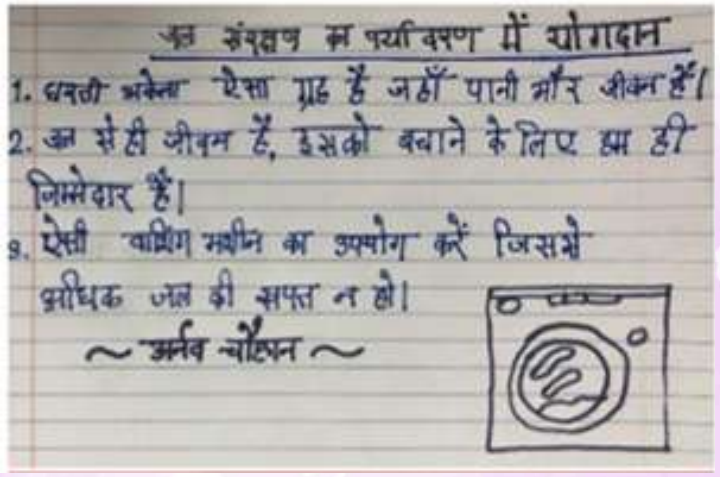

राष्ट्रभाषा से जुड़ी रहें इसके लिये सदैव प्रयत्नशील रहूँगी। मुझे यह बताते हुए बहुत हर्ष हो रहा है कि मेरी कक्षा ने बहुत लगन और उत्साह से "जल संरक्षण" परियोजना पर काम किया है।

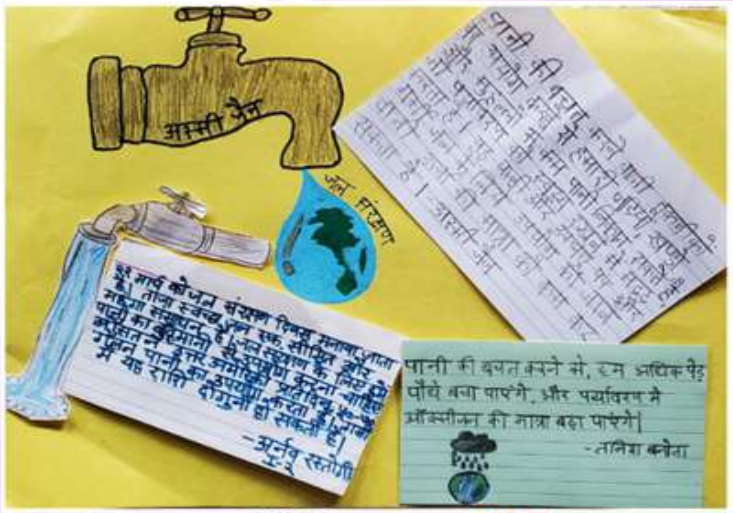

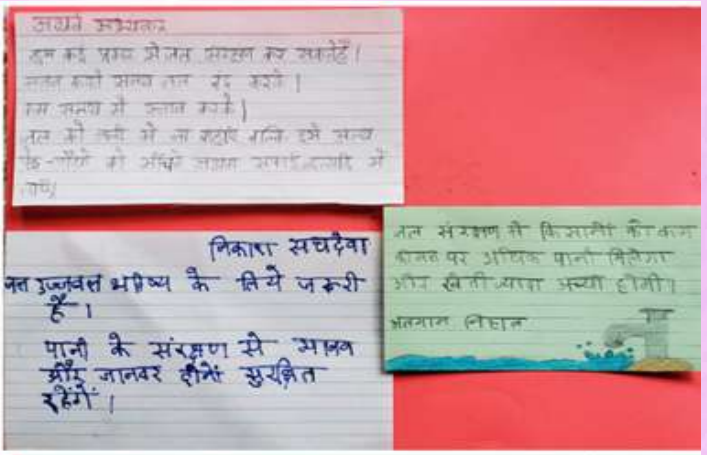

साउथ ब्रंस्विक हिन्दी पाठशाला, मध्यमा-२, शिक्षिका: अल्का भारद्वाज एवं निकिता जैन

इस वर्ष कक्षा परियोजना में बच्चों से हमने जल संरक्षण का पर्यावरण में योगदान विषय पर एक अनुच्छेद लिख कर आने के लिए कहा। बच्चों ने अपना शोध अपने शब्दों में लिखा। उनके द्वारा लिखे अनुच्छेद का सारांश इस तरह है —

पूरे विश्व की धरती का लगभग ३/४ भाग जल से घिरा है किन्तु ४७% पानी खारा है जो पीने योग्य नहीं है। पीने योग्य पानी की मात्रा ३% है, इसमें भी २% पानी ग्लेशियर और बर्फ़ के रूप में है। इस प्रकार मात्र १% पानी पीने योग्य बचता है। पीने का जल मात्र मानव को ही नहीं बल्कि पशु पक्षी, पेड़ पौधों को भीचाहिए, इसलिए जल संरक्षण करना आवश्यक है। हमें इसे बचाने का प्रयास करना चाहिए।

जल संरक्षण के कुछ उपाय:

१. दाढ़ी बनते समय अथवा ब्रश करते समय नल को तभी खोले जब पानी की आवश्यकता हो।

२. बरतनों को इकट्ठा कर के बर्तन धोने वाली मशीन में धोने चाहिए।

३. नहाते समय शॉवर की जगह बाल्टी और मग का प्रयोग करे तो काफ़ी बचत होगी।

४. ज़्यादा कपड़े इकट्ठे कर के मशीन में धोयें।

५. टपकते नल को जल्दी ही ठीक करवाएँ।

६. बाग बगीचे में दिन की बजाए रात को पानी देना चाहिए, जिससे कम पानी से सिंचाई हो जाती है ।

७. पौधों को पाइप की जगह वॉटर कैन से पानी देने से भी पानी की बचत होती है ।

८. वर्षा के पानी को जमा कर के उस का उपयोग किया जा सकता है।

इस तरह के संरक्षण से भविष्य के सूखे के लिए तैयार रहने मे मदद मिल सकती है। जल संरक्षण से ऊर्जा पैदा की जा सकती है जिसको इस्तेमाल करने से हम जीवाश्म ईंधन (fossil fuel) वाली ऊर्जा कीमात्रा को कम कर सकते हैं, जिसके कारण छोटे कार्बन का वातावरण में उत्सर्जन होता है जो कि ग्लोबल वॉर्मिंग को बढ़ाता है। इस तरह से पानी का संरक्षण करने से हम वातावरण में हो रहे बदलाव को रोक सकते हैं। जल संरक्षण सिर्फ़ फ़ायदेमंदही नहीं, यह तो आज के समय की आवश्यकता भी है।

प्लेन्सबोरो पाठशाला, मध्यमा-२, शिक्षिका: अनामिका सहाय

जल है तो कल है

पानी हमारे ग्रह का सबसे मूल्यवान संसाधन है। पानी के अभाव में सूखा पड़ जाता है और जन जीवन पर भारी असर होता है। सभी को बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। मानव जाति के उज्ज्वल भविष्य के लिए स्वच्छ वातावरण का होना सबसे जरूरी है। पानी के दुरुपयोग से आने वाली पीढ़ियों को भी इसका परिणाम भुगतना होगा। दूषित जल को पुनः उपयोगी हेतु बनाने में बहुत ऊर्जा, समय और वित्तीय सहायता की जरूरत होती है। इसलिए इसके संरक्षण के लिए हमें पूरी कोशिश करनी चाहिए।

इस समस्या के तीन विकल्प हैं। जल की बर्बादी रोकना, जल प्रदूषण का नियन्त्रण करना और जल संरक्षण के कुशल तरीके अपनाना। जल की बर्बादी को रोकने के लिए हमें अपने घरों में पानी का उपयोग जरूरत के अनुसार ही करना चाहिए। नहाने अथवा दांत साफ करते समय कम से कम पानी का इस्तेमाल करना चाहिए और नलके से व्यर्थ पानी नहीं बहने देना चाहिए। ड्राइव-वे, आंगन को धोने के बजाय झाड़ू से साफ कर लेना चाहिए। अपने पेड़ पौधों के आसपास घास की परत लगाने से मिट्टी सूखती नहीं और कम पानी में काम चल जाता है। हर ऐसा तरीका अपनाना चाहिए जिससे रोजमर्रा की जिंदगी में पानी का प्रयोग कम हो, जैसे शौचालय हेतु पुनरावृत पानी का इस्तेमाल करना चाहिए।

जल प्रदूषण इस संसार के लिए एक विशेष खतरा है और इस पर नियंत्रण रखना हमारे लिए बहुत जरूरी है। जलाशयों और जलस्रोतों को साफ और स्वच्छ रखना चाहिए और बेकार की चीजें उसमें नहीं

डालना चाहिए। इससे जानवरों को नुकसान पहुंचता है, वे मर भी जाते हैं और उनकी संख्या भी कम होती जा रही है। इसलिए कचरा सही तरीके से फेंके। इसके साथ, प्लास्टिक का कम से कम इस्तेमाल करें। पुनः प्रयोजन के पानी की बोतल तथा थैले उपयोग में लाएं। रसायन युक्त स्प्रे, कीटनाशक दवाइयाँ इत्यादि शौचालय या सिंक में नहीं डालें। कम उर्वरक और कीटनाशक पदार्थ का प्रयोग करें। रासायनिक पदार्थ का अपशिष्ट निपटान करें और उससे संबंधित नियमों का पालन करें।

जल संरक्षण के तरीके अपनाने से हम कम पानी को ज्यादा कुशलतापूर्वक इस्तेमाल कर सकते है। जल संचयन से प्राकृतिक पानी (वर्षा का पानी) पुनः उपयोग किया जाता है। विभिन्न तरीकों से पानी इकट्ठा किया जाता है, जैसे पानी की टंकी, डेहरी, छतों पर से पानी को चैनल करना इत्यादि, और उस पानी को भूमिगत करने में सहायता की जाती है। इस प्रकार से कम लागत में भूमि का जल-स्तर बना रहता है।

वृक्षारोपण: पेड़ पानी को भूमिगत रखने और बारिश कराने में मदद करते है। वैश्विक तापमान के बढ़ने से जल की कमी हो जाती है और हरियाली भी। खाली स्थान पर पेड़ और वनस्पति लगाने चाहिए, खास तौर पर नदी किनारे और अन्य जलाशय के पास। यह क्षरण (corrosion) रोकने में मदद करता है, तलछट (sediments) कम करता है और अपवाहन (drainage) में भी मदद करता है।

जल प्रदूषण और संरक्षण की समस्या हमारे पर्यावरण के लिए बहुत बड़ी है। हमारे भविष्य के लिए जल की ओर सावधानी बरतना बहुत जरूरी है। वैश्विक समुदाय के लिए इस ग्रह को सुरक्षित रखना और जल का संरक्षण रखना एक महत्वपूर्ण चुनौती है। पूरे विश्व को एकजुट होकर जल संरक्षण के प्रयास में लग जाना चाहिए। जल ही जीवन है। बूँद-बूँद से सागर बनता है, तो बूँद-बूँद से पानी खत्म भी हो सकता है।

जल संरक्षण

नमस्ते, मेरा नाम तरन सिंह है। मैं ईस्ट ब्रंस्विक पाठशाला की मध्यमा-२ कक्षा में पढ़ता हूँ। मुझे भारत जाना और भारत के बारे में सीखना बहुत अच्छा लगता है। मैं भारत के बारे में लिखता हूँ और चित्र भी बनाता हूँ। मैं टेनिस खेलता हूँ और हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत सीखता हूँ।

पृथ्वी के ७०% पानी में से लगभग ५% पीने योग्य है। यही कारण है कि हमें पृथ्वी के जल का संरक्षण करना है। इस पीने के पानी का ज़्यादा हिस्सा ग्लेशियरों में है। ग्लेशियरों के पिघलने के साथ उनका पीने का पानी समुद्र के खारे पानी के साथ मिल रहा है और कम हो रहा है। बाकी का पानी नल में जाता है, कुछ हमारे पीने के लिए और कुछ अन्य कामों के लिए। हमें इसे बेकार नहीं करना चाहिए। हमें पानी या समुद्र को प्रदूषित नहीं करना चाहिए। यह समुद्री जानवरों के जीवन को नष्ट करता है। अगर कोई समुद्र में कचरा फेंकता है तो मछली उसे खा जाती है, और यह मछलियों के लिए अच्छा नहीं है। आप छोटी-छोटी बातें ध्यान रखें तो पानी का संरक्षण कर सकते हैं। अपने दांतों को ब्रश करते समय पानी को बर्बाद नहीं करें, डिशवॉशर या वाशिंग मशीन को पूरा भर जाने के बाद ही चलाएं।

पृथ्वी का भविष्य हमारे हाथ में है

दिल्ली की प्रदूषित धुन्ध

मेरा नाम रचित झा है। मैं पाँचवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं हिंदी यू.एस.ए. में मध्यमा-३ स्तर में हूँ। मैं अपनी माँ, पिताजी और भाई के साथ स्टैमफोर्ड, कनेक्टिकट में रहता हूँ।

मैं आपको एक बड़ी और महत्वपूर्ण समस्या बताना चाहता हूँ जो नई दिल्ली में चल रही है। यह समस्या प्रदूषण है। नई दिल्ली वर्तमान में दुनिया का छठा सबसे प्रदूषित शहर है और उसके कारण लोगों को फेफड़ों की बीमारियाँ हो रही हैं। यहाँ मैं आपको एक प्रदूषित नई दिल्ली का चित्र दिखाने जा रहा हूँ:

मुझे लगता है कि नई दिल्ली में प्रदूषण का मुख्य कारण यह है कि कारखाने सामान जलाते हैं जो धुएं का कारण बनता है, कचरा जो सही जगह पर नहीं डाला जाता है, ईंधन संचालित गाड़ियां, इत्यादि और जैसा मैंने कहा, कारखानों में धुआं जलता है और उस धुएं से वायु प्रदूषण होता है। क्या आप जानते हैं कि हर साल दस हजार लोग वायु प्रदूषण के कारण समय से पहले मर जाते हैं।

प्रदूषण रोकने के लिए नई दिल्ली में लोगों को बहुत मदद की जरूरत है, इसलिए दिल्ली में प्रदूषण को रोकने के लिए हमें ईंधन चालित गाड़ियां और कारखानों का उपयोग बंद करना होगा। इसके अलावा हमें लकड़ी के स्टोव, प्लास्टिक का उपयोग बंद करने की आवश्यकता है और हमें अधिक से अधिक पेड़ लगाने चाहिए। हमारे पास केवल एक पृथ्वी है और हमें इसे अगली पीढ़ी के लिए साफ सुथरा बनाना है। यह हमारा कर्तव्य है।

पर्यावरण संरक्षण और स्वच्छता

नमस्ते, मेरा नाम काव्या सिंह है। मैं ईस्ट ब्रंस्विक पाठशाला की मध्यमा-३ कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे किताबें पढ़ना बहुत अच्छा लगता है। भारत के बारे में हिंदी की किताबों से मुझे बहुत सीखने को मिलता है। मुझे आर्ट, संगीत और टेनिस भी अच्छा लगता है। मैं कथक और हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत सीखती हूँ।

लोग कहते हैं कि हमें स्वर्ण नियम द्वारा जीना चाहिए। सुनहरा नियम अलग-अलग लोगों के लिए अलग हो सकता है। कुछ का मानना है कि यह सहानुभूति से जीने जैसा आसान काम है। कुछ कहते हैं कि इसका मतलब शिष्टाचार है। लेकिन मेरा सुनहरा नियम पर्यावरण के बारे में है। हमारे इस ग्रह पर ७ बिलियन से अधिक लोग हैं! जिसका अर्थ है कि हम सभी, बच्चे या बूढ़े, बड़े या छोटे, को इस धरती को बचाने के लिए मदद करनी होगी। आप सभी को पता है पर्यावरण की रक्षा कितनी महत्वपूर्ण है। आपको कोई बहुत ही बड़ा काम करने की जरूरत नहीं है। छोटी-छोटी चीज़ें जैसे कि कचरे के एक टुकड़े को उठाना, या कागज के एक टुकड़े को रिसाइकिल करना भी बदलाव ला सकता है।

क्या आप सोच रहे हैं सिर्फ मेरे करने से तो प्रदूषण खत्म नहीं होगा?
फिर से सोचिये, आप, मैं और पृथ्वी पर हर कोई एक साल में लगभग १६८० पाउंड कचरा फेंकता है। इस कचरे में से केवल एक छोटे से भाग से उपयोगी सामान बनाया जाता है और बाकी को लैंडफिल में डाल दिया जाता है। लैंडफिल बहुत सारी समस्याओं का कारण बनता है क्योंकि १) वे जहरीली गैस छोड़ते हैं जो सांस लेने के लिए हानिकारक होती हैं, और २) कचरे को डीकम्पोज़ होने में बहुत समय लगता है। कागज को डीकम्पोज़ होने में २-४ सप्ताह लगते हैं, एक सूती कमीज़ को १-५ महीने लगते हैं, ऊन को एक साल लगता है, एक टिन को एक सदी लग सकती है, एल्यूमीनियम को २००-५०० साल लगते हैं, प्लास्टिक को ४५० साल लगते हैं।

इसके अलावा, कूड़े जैसी चीजों से भी पृथ्वी प्रदूषित हो रही है। जानवरों को लगता है कि यह भोजन है और इसे खा सकते हैं। वे बीमार हो जाते हैं और कभी-कभी उन्हें बचाया नहीं जा सकता। इसलिए हमें हमेशा कचरा ठीक से कचरे के डब्बे में ही फेंकना चाहिए।

दुनिया की आबादी हर एक सेकंड बढ़ रही है। हम चाहते हैं कि आने वाली पीढ़ियां जीवित रहें, और यह तभी हो सकता है जब हम सभी पर्यावरण की देखभाल करें। कूड़े को नीचे न फेंके, बल्कि उसे उठाएं। प्रदूषण का हिस्सा नहीं, बल्कि समाधान का हिस्सा बनें।

एक देश जो अपनी मिट्टी को नष्ट करता है, वह खुद को नष्ट कर देता है। वन हमारी भूमि के फेफड़े हैं, हवा को शुद्ध करते हैं और हमारे लोगों को नई ताकत देते हैं।
–फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट

प्लेन्सबोरो हिन्दी पाठशाला: मध्यमा-१

शिक्षिका: दिप्ती चौहान, उल्का पोवर

इस साल विद्यार्थियों में पर्यावरण के बारे में जागरूकता पैदा हो इसलिये "पर्यावरण को कैसे बचाया जा सकता है", विषय पर हमने कक्षा-वार्तालाप किया था। इस विषय पर विद्यार्थियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। इसी विषय पर उनसे क्रियाकलाप भी करने को बोला था। तो विद्यार्थी जिन सुंदर क्रियाकलापों के साथ आए हैं वे यहाँ प्रस्तुत हैं। इन सब विद्यार्थियों को किताबें पढ़ना, क्रियाकलाप, तैरना, नाचना, गाना, फुटबॉल खेलना आदि विषयों में रुचि है।

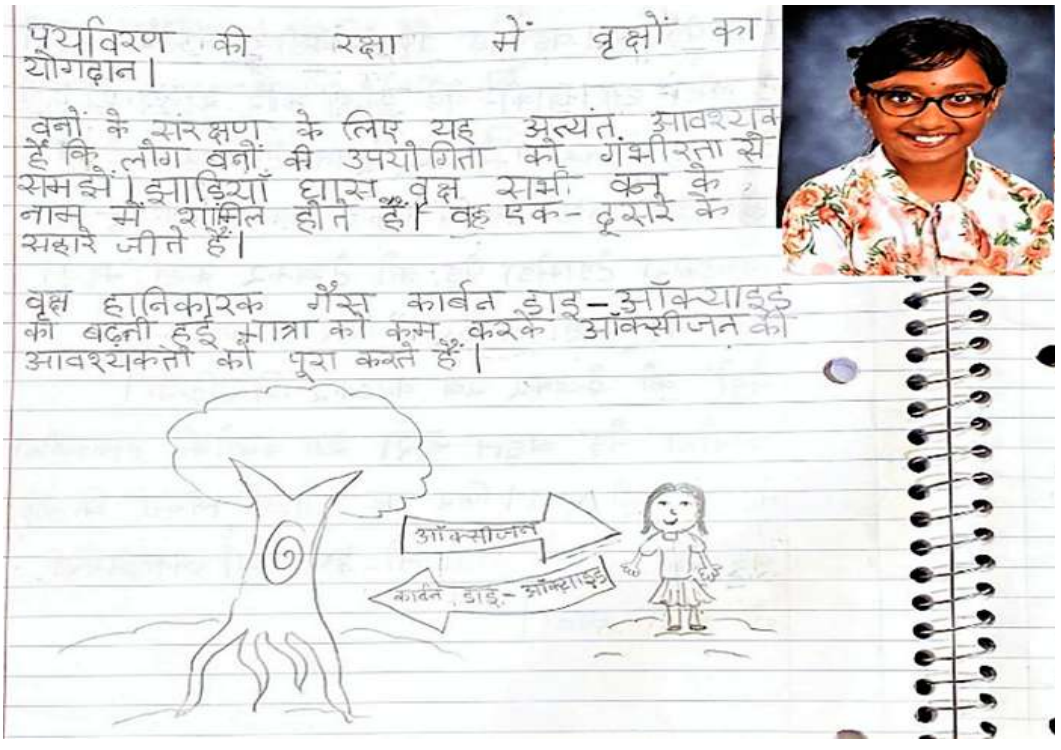

2/10/20

पेड़ों को जंगल की आग एवं लकड़ी के तस्करों से बचाना होगा। पेड़ों का विस्तार करने में पक्षियों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। इनके द्वारा लाए हुए बीजों के कारण कई प्रकार के पेड़-पौधे उग आते हैं।

पेड़ों की विविधता को बनाए रखने के लिए तरह-तरह के पेड़ पौधों को उगाना चाहिए। पेड़ों से पर्यावरण स्वच्छ बना रहता है।

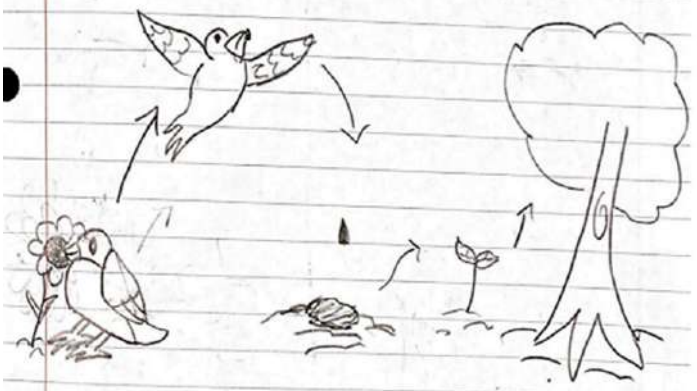

2/11/20

पेड़ों की कटाई के कारण जाने-अनजाने कई तरह के नुकसान होते हैं। पेड़ों के सफाए से भारी मात्रा में मिट्टी का कटाव हो रहा है। बुरी तरह से मिट्टी के कटाव के कारण नदियाँ और तालाब की हालत खराब हो रही है। यही कारण है कि हर साल बाढ़ से धन-जन की भारी बरबादी होती है।

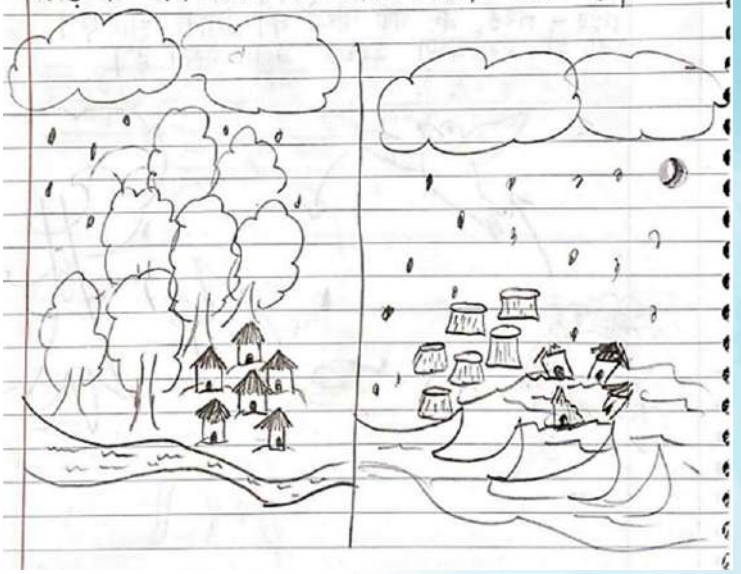

पेड़ हमारे जीवन के लिये बहुत जरूरी हैं। पेड़ हम को हवा, खाना और पानी देते हैं। पेड़ों से मीठे फल निकलते हैं। एक एकड़ जंगल करीब अठारह लोगों को साफ हवा देता है। गिलहरी और चिड़िया पेड़ों को अपना बनाते हैं। ठंडी जगह पर पेड़ की लकड़ी को ईंधन की तरह उपयोग करते हैं। पेड़ गरमी को कम करते हैं और शहर को शीतल बनाते हैं। कई पेड़ों से जीवन बचाने की दवाई बनाई जाती है। अमरिका के शहरों में लकड़ी से घर बनाये जाते हैं। पेड़ों के बिना जीवन संभव नहीं है।

पेड़ों का योगदान

पेड़ हमें देते हैं सब कुछ।
हम भी तो कुछ देना सीखें।

पेड़ पौधे हमें अनगिनत फल-फूल दवाईयों के साथ प्राण वायु (O_2) भी देते हैं। पेड़ पौधे ईंधन के रूप में भी प्रयोग में आते हैं। पेड़ों की लकड़ी का उपयोग फर्नीचर और ईमारत बनाने में किया जाता है।

पेड़ पौधे वायु प्रदूषण और ध्वनी प्रदूषण को भी कम करते हैं। पेड़ पौधे जल के कटाव को भी रोकते हैं।

इस प्रकार पेड़ पौधे हमारे पर्यावरण के लिये अति आवश्यक हैं। हमें अधिक से अधिक पेड़ पौधे लगाकर हमारे आसपास की जगह को सुंदर और हरा-भरा बनाना चाहिये।

पर्व गुप्ता

गाड़ी वाला आया घर से कचरा निकाल

अंशिका कुमार

जर्सी सिटी पाठशाला

मेरा नाम अंशिका कुमार है। मैं जर्सी सिटी हिंदी पाठशाला में मध्यमा-३ की छात्रा हूँ। मुझे हिंदी सीखना बहुत अच्छा लगता है। मुझे गणित और विज्ञान में बहुत रुचि है। मुझे क्रिकेट मैच देखना भी बहुत अच्छा लगता है।

पर्यावरण के पास हमारे लिए कई चीजें हैं जिसको हम महत्व नहीं देते हैं। एक अशुद्ध वातावरण समाज को बुरी स्थिति की ओर ले जाता है।। ऐसे वातावरण में कई जानलेवा बीमारियों का आगमन होता है तथा पूरे ग्रह पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। ग्रीनहाउस से निकलने वाली गैस ग्लोबल वार्मिंग में योगदान देती है। इससे प्रति वर्ष बर्फ-बारी और वर्षा की मात्रा में भारी वृद्धि हो सकती है। इसके परिणामस्वरूप बाढ़ आ सकती है जो की गाँवों और शहरों को नष्ट कर सकती है। हमारे पर्यावरण को स्वच्छ रखना बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह प्रदूषण को कम करता है और लुप्तप्राय प्रजातियों की रक्षा करता है तथा जल, भूमि और वायु जैसे कई प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करता है। पर्यावरण को स्वच्छ रखने के कई तरीके हैं, जैसे कि:

- गन्दगी ना फैलायें
- पेड़ लगायें
- पर्यावरण के अनुकूल बने
- प्लास्टिक का उपयोग ना करें
- प्रयोग की गयी वस्तु का पुनः प्रयोग करें

आप अपने शहर, गाँव तथा कस्बे को साफ रखने के लिए एक अभियान भी शुरू कर सकते हैं। इसका एक बड़ा उदाहरण "स्वच्छ भारत अभियान" है। श्री नरेंद्र मोदी भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री हैं, जिन्होंने स्वच्छ भारत बनाने के लिए इस कार्यक्रम की शुरुआत की। पिछले वर्ष जब मैं पटना गयी थी तो मैंने प्रतिदिन स्वच्छ भारत अभियान का एक उदाहरण देखा। हर

सुबह एक कचरा ट्रक एक गाना बजाते हुए आता है, "गाड़ी वाला आया घर से कचरा निकाल"| इस गाने की आवाज़ दूर से ही सुनाई पड़ने लगती है और आप ट्रक के आने के पहले ही कचरे के थैले के साथ तैयार हो जाते हैं। मैंने सुना है की इस योजना के पहले घर का कचरा सड़कों पर जाता था और पूरे शहर को प्रदूषित करता था। यह स्वच्छता की दिशा में बहुत ही अनूठा और रचनात्मक कदम है।

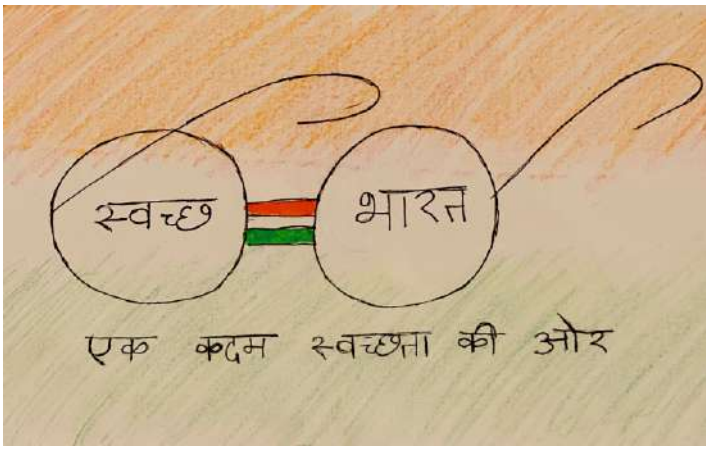

ईस्ट ब्रंस्विक, प्रथमा-२

ईस्ट ब्रंस्विक, प्रथमा-२ के इन छात्रों ने रोज़ मर्रा की फेंके जाने वाली रीसाइक्लिंग की वस्तुओं से कुछ अद्भुत चीज़ें बनाईं। इन्होंने कार्ड बोर्ड, पेपर टॉवल एवं टॉयलेट पेपर रोल, बिस्कुट का खली डिब्बा, पेपर प्लेट्स, बोतल का ढक्कन, बीड्स, धागा, एक तरफ लिखा कागज़, पुराने बाइंडर, पतला चुम्बक और अन्य चीज़ों का इस्तेमाल किया।

पर्यावरण संरक्षण

शिक्षिका: सविता रविंदर

नॉर्थ ब्रंस्विक, प्रथमा-२

प्रथमा-२ के सभी बच्चे इस विषय को लेकर बहुत उत्साहित थे। सामान बनाने के अपने सुझावों को लेकर वे एक दूसरे से होड़ कर रहे थे कि किसका सुझाव सबसे अच्छा रहेगा। अंत में एक बच्चे ने गणपति जी बनाने का सुझाव दिया जिसे बच्चों ने पोली बैग का, जो पर्यावरण के लिए सबसे नुकसान वाली चीज़ है, उपयोग करके गणपति जी की बहुत सुन्दर तस्वीर बनाई।

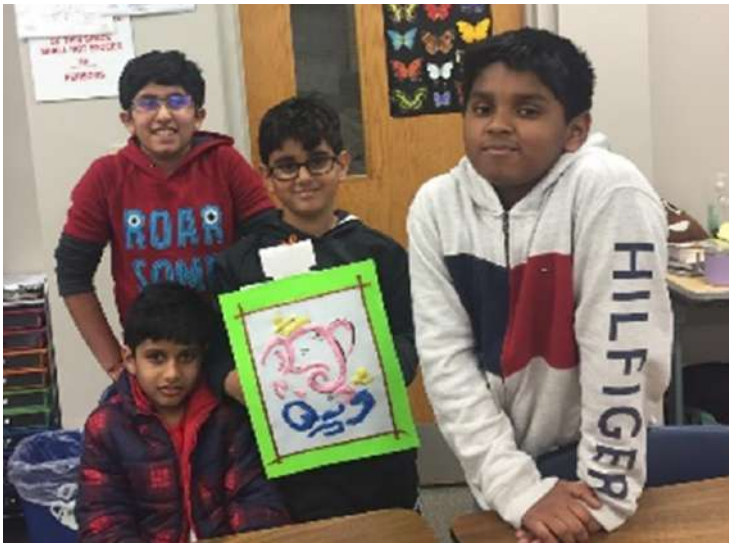

सेंट लुइस — प्रथमा-२

शिक्षक एवं शिक्षिका मयंक जैन नंदिनी राय पूजा शर्मा

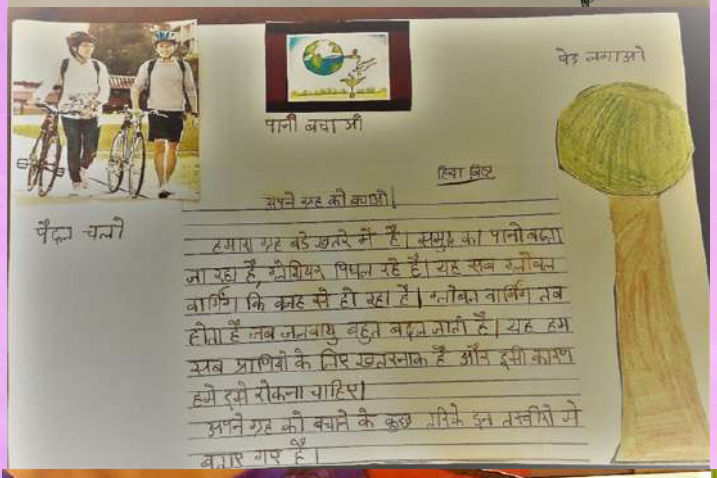

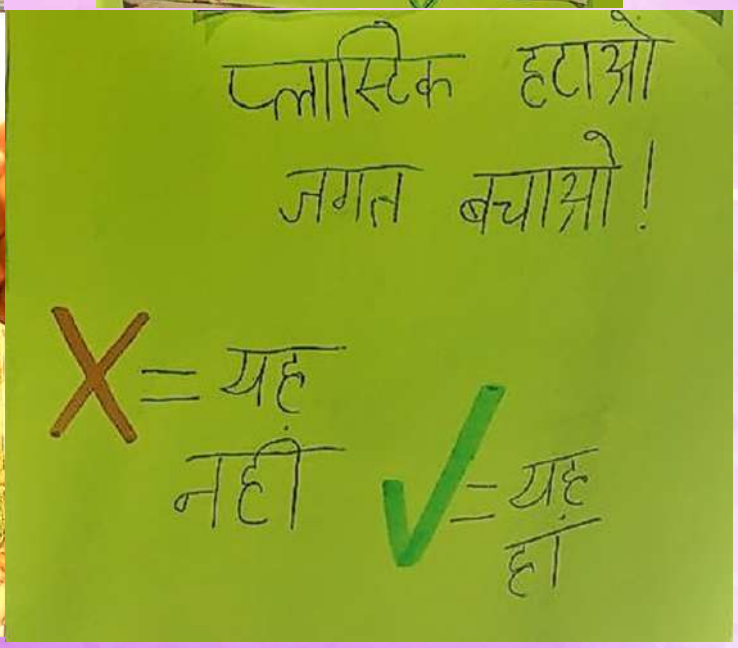

पर्यावरण - वस्तुओं का पुनरुपयोग

शिक्षिका: क्षमा सोनी चेरी हिल, प्रथमा-२

चेरी हिल पाठशाला के विद्यार्थियों ने एक परियोजना के दौरान कचरे की चीज़ों का इस्तेमाल करते हुए बनाईं नयी तथा सदुपयोग चीज़ें। उन्होंने इस परियोजना के माध्यम से पर्यावरण को कैसे साफ़ और सुरक्षित रखना चाहिए, यह दर्शाया है। उन्होंनेबड़ीहीरुचिके साथअपने-अपनेपोस्टरतथा सदुपयोग चीज़ें बनाईं औरबहुतही जोशकेसाथकक्षामेंप्रस्तुतकीं।इसकार्यमें उन्होंनेबहुतकुछसीखाऔरसब कोबहुत आनंद आया।

सेंट लुइस — प्रथमा-१

सरिता जी

नमस्ते, मेरा नाम सरिता है। मैं हिन्दी यू.एस.ए. सेंट लुइस मिसौरी पाठशाला में प्रथमा-१ की शिक्षिका हूँ। मुझे पढ़ाने का बहुत शौक है और इसलिए पिछले दो वर्षों से मैं हिंदी यू.एस.ए. से जुड़ी हुई हूँ। हमारी पाठशाला में सीमा जी मेरी सहायक शिक्षिका हैं। हम दोनों बहुत ही उत्साहित हैं कि हमें इस परिवार से जुड़ने का स्वर्णिम अवसर मिला। हमने हमारी कक्षा में बहुत सारे परियोजना कार्य कराए हैं और विद्यार्थियों ने बहुत ही मेहनत करके कचरे का सदुपयोग परियोजना पर काम किया है। विद्यार्थियों की ये कड़ी मेहनत हम आप सब के साथ साझा करना चाहते हैं।

सीमा जी

अंशु जैन

अंशु जैन और मेघना लूँकड, हम दोनों सेंट लुइस हिंदी पाठशाला में प्रथमा एक की शिक्षिकाएं हैं। हम एक साल से बच्चों को पढ़ाने का आनंद ले रहे हैं। कर्मभूमि के लिए हमने बच्चों से कचरे के सदुपयोग के बारे में कक्षा में चर्चा की। बच्चों ने अपने घर पर माता-पिता से सहयोग ले कर बड़ी ही सुंदरता से इस विषय को विभिन्न कलाकृति के माध्यम से दर्शाया है।

मेघना लूँकड

कचरे का सदुपयोग

शिक्षिका: शीतल अब्बी **ट्रंबल पाठशाला, प्रथमा-१**

हमने कक्षा में कचरे का सदुपयोग की परियोजना के बारे में चर्चा की और बच्चों ने उनके विचारों को व्यक्त किया। उन्होंने इस विषय पर शोध किया और मैंने उनके विचारों का हिंदी में अनुवाद किया है।

शान छबलानी

१. प्लास्टिक की पानी की बोतलों का उपयोग करने के बजाय पुन: उपयोग करने योग्य बोतलों का उपयोग करना चाहिए।
२. स्कूल की परियोजनाओं के लिए हम टॉयलेट पेपर और पेपर टावल रोल का उपयोग करते हैं।
३. पुराने समाचार पत्रों को रीसाइक्लिंग के माध्यम से नए कागज़ में बदला जा सकता है।

व्योम धीर

१. पुनर्चक्रण से ऊर्जा की बचत होती है
२. यह प्रदूषण को कम करता है
३. पुनर्चक्रण पृथ्वी का मित्र है
४. यह भूमि भराव अपशिष्ट को कम करता है

५. 3 R's को याद रखें

- रीडुस (कम उपयोग)
- रीयुज़ (पुन: उपयोग)
- रीसायकल (पुनरुपयोग)

साम्बित शर्मा

१. हम सभी को रीसायकल करना चाहिए। यह दुनिया को स्वच्छ और हरा भरा रखने में मदद करता है। विश्व बैंक के अनुसार पूरे विश्व में सालाना २.०१ बिलियन टन "म्युनिसिपल सॉलिड वेस्ट" का उत्पादन किया जाता है। इस कचरे में प्लास्टिक, कागज, कांच, कार्डबोर्ड, धातु और स्टायरोफोम जैसी पुनर्नवीनीकरण सामग्री शामिल है।
२. प्लास्टिक की थैलियों को विघटित होने में १०-२० साल लगते हैं। प्लास्टिक की बोतलों विघटित होने में ४५० साल और कुछ प्लास्टिक की वस्तुओं को विघटित होने में १००० साल तक का समय लग सकता है। एल्यूमीनियम को विघटित होने में ८०-२०० वर्ष लगते हैं और कागज़ को विघटित होने में सामान्य रूप से २-६ सप्ताह लगते हैं। स्टायरोफोम और ग्लास बायोडिग्रेडेबल नहीं हैं। कागज और कार्डबोर्ड वस्तुओं को पुनरुपयोगकरके हम लैंडफिल स्पेस और पेड़ों को बचा सकते हैं।

३. वस्तुओं कापुनरुपयोगकरना चाहिए क्योंकि यह वन्यजीवों की रक्षा करने में मदद करता है। यह लोगों को प्रदूषित हवा और पानी जैसे नुकसान से बचाता है और यह आने वाली पीढ़ियों के लिए पृथ्वी को सुरक्षित रखता है।

पर्यावरण की रक्षा

मोनिका गुप्ता, अम्रिता मिश्रा एडिसन पाठशाला, प्रथमा-१

मोनिका गुप्ता

अम्रिता मिश्रा

हम सभी अपने पर्यावरण की रक्षा के लिए जिम्मेदार हैं। फेंके जाने वाले सामान का पुनः उपयोग करके हम पर्यावरण बचाने में मदद कर सकते हैं। जैसे:- १) रसोई के कचरे से खाद बनाना, २) प्लास्टिक, गत्ता, पुरानी सी.डी. और अखबार से घर के लिए सजावट का समान बनाना, ३) रसोईघर का सामान रखने के लिए कांच की बोतलों का पुनरुपयोग, ४) पुराने कपड़ों से पायदान और थैले बनाना। जब हमने अपनी कक्षा में बच्चों के साथ कचरे का सदुपयोग विषय पर चर्चा की तो बच्चों ने अपने विचार व्यक्त किए। सभी ने मिलकर यह सोचा कि हम पुरानी सी.डी. को उपयोग में लेकर अपनी कक्षा के काम में आने वाली वस्तुएँ बनाएँ। हमने जानवर, अक्षर और गिनती के सुंदर फ्लेश कार्ड बनाए। इस कार्य में बच्चों को बहुत आनंद आया। उन्होंने सीखा कि कैसे फेंके जाने वाले सामान से हम विभिन्न उपयोगी वस्तुएँ बना सकते हैं।

पर्यावरण संरक्षण

शिक्षिका: ज्योति हुमणे प्लेंसबोरो पाठशाला, प्रथमा-१

पर्यावरण संरक्षण के सन्दर्भ में आज विश्व का प्रत्येक देश चिंतन कर रहा है। भौतिक चकाचौंध में पर्यावरण का क्षरण किया जाना, जहाँ विकट समस्याओं को जन्म दे रहा है, वहीं नौनिहालों द्वारा किया जाने वाला यह प्रयास स्वयं में मानक स्थापित करता दिख रहा है। पिछले कई दशकों से हम मानव अपनी मातृ पृथ्वी और उसके संसाधनों को प्रौद्योगिकी के विकास के नाम पर नीचा दिखा रहे हैं। अनजाने में अपने जीवन स्तर को बढ़ाने के नाम पर हम इसे और अधिक बाधित करने के रास्ते पर हैं। आज हम इतने आगे आ गए हैं कि यह बेहतर जीवन जीने का सवाल नहीं है, बल्कि यह अब जीवन बचाने के बारे में है। एक उत्पाद का पुनरावर्तन करने से पर्यावरण सुरक्षित रखने में मदद होती है। जैसे कागज का पुनरावर्तन करने से अधिक पेड़ों को काटने से बचाया जा सकता है तथा इस क्रिया में ऊर्जा और पैसों की भी बचत होती है। इसी प्रकार स्टील, ग्लास, एलुमिनियम, और प्लास्टिक का पुनरावर्तन किया जा सकता है। पुनरावर्तन से हम प्रदुषण को रोक सकते हैं। हमें पुनरावर्तन का महत्त्व अपने बच्चों को एक अच्छी आदत के रूप में सिखाना चाहिए। पर्यावरण को बचाना हमारी जिम्मेदारी है। हमें दूसरों को भी पुनरावर्तन करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

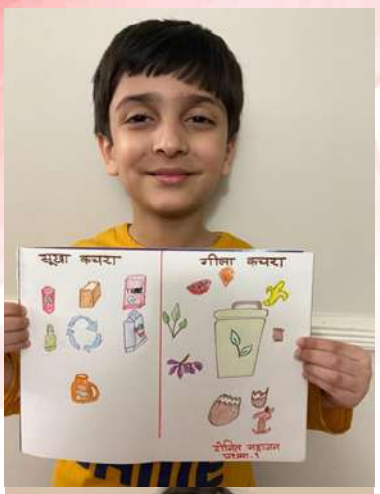

नियति प्रथमा-१ की प्रतिभाशाली छात्रा हैं। पढ़ाई के अलावा इनको तैराकी, किताबें पढ़ना, कलाकारी, चित्रकारी और खाना बनाने में भी दिलचस्पी है। नियति ने खाली बोतल, सी.डी., कार्डबोर्ड व पिस्ते के छिलके जैसे कचरे से उपयोगी वस्तुएँ बनायीं हैं।

वस्तुओं का पुनरुपयोग

शिक्षिका: पारुल दयाल   सेंट लूइस, कनिष्ठा-२

नमस्कार, मैं, पारुल दयाल, हिन्दी यू.एस.ए. सेंट लूइस हिन्दी पाठशाला में पिछले दो साल से हिन्दी की शिक्षा दे रही हूँ। इस वर्ष मैं कनिष्ठा-२ को पढ़ा रही हूँ। मेरे साथ नम्रता प्रसाद सह शिक्षिका व विनीता सिंह स्वयंसेवक हैं। इस माह हमने छात्रों को वस्तुओं के पुनरुपयोग के महत्व समझाए। बच्चों ने इस विषय का सुन्दरता से प्रस्तुतिकरण किया है। उनकी रचनात्मकता पर मैं गौरवान्वित हूँ।

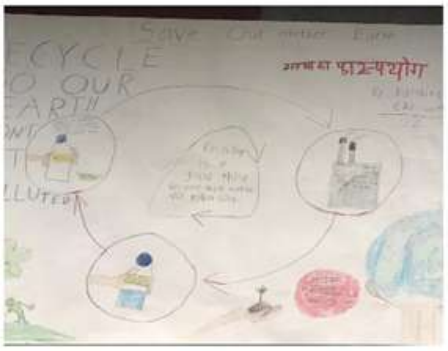

वस्तुओं का पुनरुपयोग

जर्सी सिटी कनिष्ठा-२, शिक्षिका/शिक्षक: मनीषा वर्मा, अमीना बी, मीनू शर्मा और त्रिलोकी वर्मा

जर्सी सिटी हिंदी पाठशाला के कनिष्ठा-२ के विद्यार्थिओं ने पर्यावरण की सुरक्षा के सन्दर्भ में वस्तुओं का पुनरुपयोग (रीसाइक्लिंग) करके नए सामान बनाना सीखा।इस महत्वपूर्ण और आवश्यक सिद्धांत को हमने एक रोचक गतिविधि से छात्रों को सिखाया।यही विद्यार्थी आगे जाकर हमारा भविष्य बनेंगे और इनका अल्पवयस्था में वस्तुओं के पुनरुपयोग द्वारा पर्यावरण की सुरक्षा सीख लेने से भविष्य में ये स्वयं भी रीसायकल करेंगे और दूसरों को ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित करेंगे। हमने छात्रों को पानी की पुरानी बोतल, पुराने कांच के जार, मग, प्याले और काग़ज़ के रोल का उपयोग करके उन्हें पेंसिल/कलम होल्डर बनाना सिखाया। बच्चे अपने घर से इन सभी में से कुछ वस्तुएँ लाये थे और उन्होंने उसको अपने सह छात्रों, शिक्षिकाएं/शिक्षकों तथा कुछ अभिभावकों की सहायता से सुन्दर पेंसिल होल्डर बनाया। सभी ने अपनी परिकल्पना और रुचि के अनुसार उसको बहुत ही सुन्दर ढंग से सजाया। सभी छात्र इस गतिविधि से बहुत प्रसन्न थे और उन्होंने इसमें बहुत बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया।

पर्यावरण का प्रदूषण!! कौन है जिम्मेदार?

पर्यावरण का प्रदूषण बढ़ाने के लिए पूरी मानव जाती का योगदान है। आप पूछोगे "कैसे?", अपने आस-पास देखने से पता लग जायेगा। शहरों को बसाने के लिए हमने जंगलों को हटा दिया। गाँव में त्योहारों के जरिये वृक्षों की पूजा एवं संगोपन किया जाता था। केले के पत्तों पर या पीपल के पत्तों को जोड़कर थाली बना कर, उमसे भोजन करते थे जिससे शरीर के लिए पोषक और वृक्षों के लिए खाद मिलता था। पर आज हम यह सब भूल गए हैं। वैसे ही मेरी दादी जी कहती हैं उन्होंने बचपन में कभी फटाकों से दिवाली नहीं मनाई थी। मतलब हमने वायु प्रदूषण भी करवा दिया है। नदी के सम्मान के लिए और जलचरों को बचाने के लिए थोड़ी सी खाने की चीजें प्रसाद के रूप में पानी के बहाव में लोग डालते थे। पर अब जो नदी और तालाबों में डाला जा रहा है वह सोचने से बुरा लग रहा है। क्यों न हम फिर से वही कर के देखे जिससे पर्यावरण को बचाये? अपने साथ पर्यावरण को भी सुधारे। - कपिला माने — ईस्ट ब्रंस्विक

तनीशा मित्रा — पिस्कैटवे हिन्दी पाठशाला

Is your financial portfolio ready for what's coming?

Questions to Consider:

- Where will the markets go from here?
- Should you maximize your 401K / IRA contributions?
- What is the impact to the housing market post-Covid?
- Should Dhoni play in the 2020 World cup?

Get the answers.

NorthStar Portfolio Investments is proud to partner with busy professionals of Indian origin who have little time to properly invest.

Call 203-343-0880 and ask for Vikram to discuss the questions above

npi NORTHSTAR PORTFOLIO INVESTMENTS

onenorthstar.com
203-343-0880
investments@onenorthstar.com

Vikram Kaul

*Past performance is no guarantee of future results. A risk of loss is involved with investments in capital markets. Please consider investment actions in light of your goals, objectives, cash flow needs, time horizon and other lasting factors. Commentary in this summary constitutes the general views of NorthStar Portfolio Investments LLC and should not be regarded as personal investment advice. No assurances are made we will continue to hold these views, which may change at any time based on new information, analysis or reconsideration. In addition, no assurances are made regarding the accuracy of any forecast made herein.